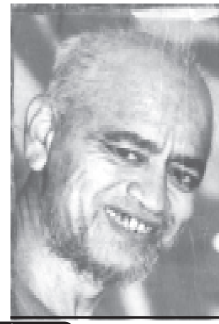

शोध साहित्य विशेषांक

संस्कार सागर

• वर्ष : 19 • अंक : 219 • जुलाई 2017

• वीर नि.संवत 2544 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1938

लेख

- श्रमण शतक मे प्रतिपादित आत्मत्रय 9
- परिषहजय शतक और आचार्य विद्यासागर 12
- संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी का साहित्यिक योगदान 18
- मानविकी कोष की अक्षय निधि 24
- क्या है निरंजन शतक में 32
- आचार्य तुलसी 46
- संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी महाराज संबंधी जैन विद्या शोध एक विश्लेषण 49
- हिन्दी शतक परम्परा और जैनाचार्य विद्यासागर 54
- मूकमाटी : मृण्मय से चिन्मय तक 66
- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोधकार्य 74
- मूकमाटी-मीमांसाः दिव्य प्रेम के काव्य का मीमांसा 78

बाल कहानी

- करुणा-निधि-विद्याधर 86

कविता

- संत शिरोमणि 13
- ज्ञानसागर के मुक्ता को 17
- वंदन ज्ञानोदय को 20
- जल प्रपात 23
- धर्मयुग 31
- रंगीन व्यंग 38
- कंजूस बाप 48
- यही मुक्ति, यही मुक्ति 73
- शिल्पी ज्ञानसागर 94

कहानी

- विद्या की तड़फन 61

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 3 • भक्ति तरंग : 4 • संस्कार प्रवाह : 5 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
• चलो देखें यात्रा : 21 • आगम दर्शन : 22 • पुराण प्रेरणा : 40 • माथा पच्ची : 40 • कैरियर गाइड : 41
• दुनिया भर की बातें : 42 • इसे भी जानिये : 50 • दिशाबोध : 51 • प्रवचन : 52
हमारे गौरव : 87• बाल संस्कार डेस्क : 88 • संस्कार गीत व बाल कविता : 89 •
हास्य तरंग : 90 • समाचार : 91

प्रतियोगिताएं :अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 39 :वर्ग पहेली : 98

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,
इन्दौर (म.प्र.)

आवरण एवं आंतरिक सज्जा :
नीरज गुप्ता, इन्दौर 97542 40305

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : **201/-** आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपने शहर के

- **स्टेट बैंक ऑफ इंडिया** (संस्कार सागर) खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- **भारतीय स्टेट बैंक** (ब्र. जिनेश मलैया) खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- **ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स** खाता क्र. 07882151004198(IFSC :ORBC0100788)
- **आईडीबीआई बैंक** (श्री दिगंबर जैन युवक संघ) खाता क्र. 155104000037022
- **आईसीआईसीआय बैंक** (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ) खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत जून का दीक्षा विशेषांक मैंने देखा संस्कार सागर में प्रकाशित कहानी 'जो-जो देखी महावीर ने' बिल्कुल हमारे मर्म को स्पर्श कर गयी । इस कहानी को माध्यम बनाकर परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी के तप धारण दीक्षा समारोह का आँखों-देखा हाल प्रस्तुत किया गया है। कहानी पढ़ने के बाद एक समय तो ऐसा लगा जैसे कि हम अजमेर की नसिया में बैठे हैं। परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी की दीक्षा साक्षात् देख रह थे। बिम्ब भावना और रेखा चित्र की अद्भुत छटा इस कहानी में बाखूबी दिखाई गई है। कहानी पढ़ने के बाद पात्रों का चरित्र चित्रण और सदलगा भूमि का दिग्दर्शन इस कहानी की विशेषता रही है। सरल-सुबोध भाषा धारावाहिक शैली में कहानी बहुत प्रभावी रही है। **– श्रीमती इन्द्रा जैन, इन्दौर**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर का जून 2017 का अंक देखा मन प्रसन्न हो गया ऐसे विशेषांक की हमने कभी कल्पना नहीं की थी सुन्दर आवरण पृष्ठ सज्जा अद्भुत नई मौलिक प्रमाणिक सामग्री आचार्यश्री विद्यासागर के समग्र जीवन दर्शन को पाठकों तक परोसने में सफल रही है। पत्रिका की 18 वर्ष की अनवरत जिनवाणी प्रभावना किसी से भी छिपी नहीं है परन्तु दीक्षा महिमा विशेषांक ने सभी अंकों को पीछे छोड़ दिया है। वैसे तो संस्कार सागर के 217 अंकों ने देश भर में अपने आपको स्थापित पत्रिका रूप प्रदान किया है। पत्रिका आगे भी प्रगति करें ऐसी मेरी शुभकामना है। **–श्रीमती रजनी जैन, दिल्ली**

• सम्पादक महोदय, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल पर हवाला और चन्दा के आरोप उनके ही मंत्रिमंडल के सदस्य कपिल मिश्रा ने लगाये थे। वे सीबीआई में भी आरोपों को लेकर गये। परन्तु भ्रष्टाचार के विरोध में आन्दोलन करने वाले अन्ना हजारे और केजरीवाल ने 2011 में पूरे देशको झकझोर दिया था। अन्ना हजारे ने तो यह कहा कि मेरा सपना टूट गया लेकिन आम आदमी का विश्वास तथाकथित ईमानदार नेताओं पर कितना होगा। यह भविष्य में अधर में लटकने वाला मामला हो गया। आगे जाकर जब कोई भ्रष्टाचार के विरोध के लिए आवाज उठायेगा तो आम आदमी उसका कैसे साथ देगी उससे हम यह कैसे कह सकते है कि अरविन्द केजरीवाल ने भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन को धक्का लगाया है। उन्हें अपने द्विमुखी आचरण पर अफसोस ही नहीं सजा भी मिलना चाहिये। **– श्रीमती अभिलाषा जैन, इन्दौर**

• सम्पादक महोदय, भारतीय नागरिक कुलभूषण जाधव को पाकिस्तान की सैन्य अदालत द्वारा फाँसी की सजा के मामले में भारत अन्तर्राष्ट्रीय अदालत में पहुँचा ऐसे में पाकिस्तान शायद ऐसे सबूत पेश कर जाये जो जाधव को जासूस कम ही सिद्ध कर पाये। यदि पाकिस्तान जासूस सिद्ध नहीं कर पाया तो भारत के पक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय अदालत अपना फैसला सुना देगी और यदि पाकिस्तान उसके आदेश को नहीं मानता है तो पाकिस्तान अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के बीच अपने लिये मुश्किलें ही खड़ी करेगा। भारत को यह रेखांकित करने के लिये तैयार रहना चाहिये कि पाकिस्तान ने अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के कितने आदेश, निर्देश और कानूनों का उल्लंघन किया है। इस सफलता के बाद पाक की हालत पतली जरूर पड़ जायेगी और पाकिस्तान दबाव में झुकेगा। **–अंशुल पाराशर, लटेरी**

भक्ति तरंग

गुनपूरित अरिहंत

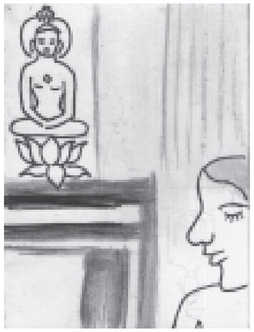

भविन सरोरुहसूर भूरिगुनपूरित अरहंता ।
दुरित दोष मोक्ष पथघोषक, करन कर्म अन्ता ।।भविन..।।
दर्श बोधतैं युगपता लखि जाने जु भाषऽनंता ।
विगताकुल जुतसुत अनंत विन, अंत शक्तिवंता ।।1भविन..।।
ज़ा तनजोत उदोत थकी रवि, शशि दुति लाजंता ।
तेज थोक अवलोक लगत है फोक सचीकंता ।।2 भविन..।।
जास अनूप रूप को निरखत, हरषत हैं सन्ता ।
जाकी धुनि सुनि मुनि निजगुनमुन, पर-गर उगलन्ता।।3 भविन..।।
'दौल' तौल बिन जस तस वरनत, सुरगुरु अकुलंता ।
नामाक्षर सुन कान स्वान से राक नाकगंता ।।4।। भविन..।।

हे सर्वगुण सम्पन्न अरिहंत। आप भव्य जनरूपी कमलों को विकसित करने वाले सूर्य हैं। पापों का नाश कर मोक्ष की राह बतलाने वाले हैं। आपने कर्म राशि का अंत कर दिया है।

युग पथ ज्ञान और दर्शन से अपने अनंत भावों को देखा व जान लिया है आप निराकुल सुख के और अनंत बल के धारी हो।

जिनकी तन की द्युति(प्रभा) के समक्ष, रवि का तेज व चन्द्रमा की कांति भी लजाती है, फीकी पड़ जाती है। आपके उस अनुपम तेज, पुंज को देखने पर इन्द्र जैसे तेजस्वी का तेज भी फीका व हल्का लगता है।

जिनके अद्‌भुत सुन्दर रूप को देखकर सन्त जन हर्षित होते हैं। जिनकी दिव्यध्वनि को सुनकर मुनिजनों को निज गुणों का भान होता है और वे मिथ्यात्व रूपी विष को उगल देते हैं, बाहर निकाल देते हैं।

जिनके अतुल यश का वर्णन करते हुए सुरगुरु (देवताओं के गुरु) भी थक जाते हैं । दौलतराम कहते हैं कि अपने कानों से इनके नाम के अक्षर सुनकर के जैसे नाग झूमने लगते हैं उसी तरह जिनेन्द्र भक्त भी भगवान का नाम सुनकर झूमने लगते हैं । ■

संस्कार प्रवाह

सशल्य की भक्ति क्यों नहीं ?

वर्तमान में समाज के दो धड़े भक्ति के क्षेत्र में दिखाई दे रहे हैं। एक धड़ा वीतरागी पंच परमेष्ठी की पूजन भक्ति करने में ही अपना विश्वास व्यक्त कर रहा है, तो दूसरा धड़ा सवस्त्र साधकों की पूजन करने में अपनी अंध भक्ति प्रकट कर रहा है। जैन धर्म दर्शन में पूजन कुल, जाति, रूप और लिंग की नहीं होती है, अपितु पूजन तो गुणों की ही होती है। सवस्त्र साधक कितना भी बड़ा ज्ञानी क्यों न हो जावे, परन्तु वह वीतराग अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकेगा । कारण दशलक्षण पूजन के आकिंचन धर्म में एक छोटी सी लाईन लिखी गई है। ''फांस तनिक सी तन में साले, चाह लंगोटी की दुख भाले'' इस पंक्ति से यह तात्पर्य अर्थ स्पष्ट होता है कि लंगोटी की चाहत भी साधक को निशल्य नहीं रहने देती है। जिस तरह से निशल्य व्यक्ति की उपासना करने पर शल्य का अभाव होता है उसी तरह सशल्य व्यक्ति की उपासना करने से, भक्त श्रावक के मन में सशल्यता अवश्य ही पैदा होती है जबकि भक्ति का उद्देश्य मन की कलुषता और क्लेश को दूर करना ही होता है । यदि शल्य समाप्त न हो तो भक्ति का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। सराग मूर्ति की उपासना करने से राग-द्वेष, क्रूरता और क्लेश को समाप्त नहीं किया जा सकता है, राग-द्वेष, क्रूरता और क्लेश तो वीतरागता की मूर्ति की उपासना करने से ही दूर होता है, इसी तरह सशल्य व्यक्ति की उपासना करने से शल्य को दूर नहीं किया जा सकता है। वर्तमान में निर्ग्रन्थ साधु के समान सवस्त्र पंचम गुणस्थानवर्ति साधकों की उपासना का, नवधा भक्ति का जो पक्ष उभरकर सामने आ रहा है, वह जैन दर्शन की उपासना पद्धति के बिल्कुल विपरीत ही नजर आ रहा है। यदि

पंचम गुणस्थानवर्ति को मध्यम पात्र में समाहित न करके उत्तम पात्र में रखने की व्यवस्था मान्य कर ली जावेगी तो यह आगम के साथ अपलाप की स्थिति बनेगी, जिससे हास्यास्पद स्थितियाँ ही निर्मित होगी।

जब यह प्रश्न आता है कि क्या आर्यिका मुनि के द्वारा स्तुत्य है ? तो विद्वान कहते हैं हाँ, सीता जैसी दृढ़शीला आर्यिकाओं की स्तुति मुनि कर सकते हैं, किन्तु स्तुति का अर्थ पूजन करना अथवा अर्घ चढ़ाना नहीं होगा अपितु स्तुति का अर्थ प्रशंसा करना होगा। किसी भी छोटे के द्वारा अच्छा कार्य करने पर यदि कोई बड़ा व्यक्ति उसकी सराहना करता है तो वह पूजन या नवधा भक्ति की श्रेणी में नहीं आयेगा। जैसे कि सात सौ मुनि के उपसर्ग दूर करने में जो क्षुल्लकजी ने भूमिका निभाई उस भूमिका की सराहना बड़े-बड़े मुनियों ने की है। इसका तात्पर्य यह तो नहीं निकाला जा सकता है कि मुनियों के द्वारा क्षुल्लकजी पूज्य हो गये ?

''चारित मोह वश लेश न संयम पै-सुरनाथ जजे हैं ।'' अर्थात् असंयत सम्यक् दृष्टि भी इन्द्र के द्वारा पूजा जाता है, यहाँ पर पूजन से तात्पर्य उस चतुर्थ गुणस्थानवर्ति अव्रती सम्यक्दृष्टि की पूजन इन्द्र नवधा भक्तिपूर्वक तो नहीं करेगा अपितु सिर्फ उसकी निर्भीकता, निष्कांक्षता एवं तत्त्व की श्रद्धा की ही प्रशंसा करेगा। यह प्रशंसा ही पूजन के अर्थ में ग्रहण की जावेगी।

जब किसी वस्त्रधारी सशल्य साधक की फल से पूजन की जायेगी तब वहाँ मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा बोला जायेगा लेकिन समस्या यहाँ यह उपस्थित हो जायेगी कि सशल्य वस्त्रधारी के पास जब मोक्ष प्राप्त करने की योग्यता ही नहीं है तब वह हमारी मोक्ष प्राप्ति की भावना या कामना की पूर्ति कैसे कर सकता है। इसी तरह से अर्घ चढ़ाते समय पुजारी अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा और धूप चढ़ाते समय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा की कामना या भावना की पूर्ति सवस्त्र पूज्य आराध्य कैसे कर सकता है अतः सशल्य सवस्त्र की पूजन जैन पूजन उपासना पद्धति निषिध्य है। ■

श्रमण– शतक में प्रतिपादित आत्मत्रय

• ब्र. जय 'निशांत', टीकमगढ़ •

जैन दर्शन और अध्यात्म के व्याख्याता आचार्य ने 'अध्यात्मवृत्ति' की शुरूआत आत्मत्रय से की है। मोक्ष पाहुड़, परमात्म्यप्रकाश, योग सार, ज्ञानार्णव, जैसे अध्यात्म मूलक ग्रन्थों में तीन प्रकार की आत्माओं का वर्णन खूब गहराई से किया गया है। इसी पद्धति का अनुकरण करतें हुए परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपनी अलीक अलंकारमयी रचना **श्रमण शतकम्** में तीन प्रकार की आत्माओं को केन्द्र बनाया है। अध्यात्म के ज्ञाता वे ही माने जाते हैं। जो बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा के स्वरूप को अपनी प्रज्ञा में स्पष्ट कर लेते हैं। यद्यपि छहढालाकार पंडित दौलतराम जी ने इस विषय को बहुत सरल और सुबोध शैली में स्पष्ट किया है, लेकिन श्रमण शतकम् ग्रन्थ में अंलकारिक शैली में साहित्यिक विधा का समावेश करते, सरलता और सुबोधता को किसी प्रकार की क्षति न पहुँचाते हुये हिन्दी संस्कृत भाषा में प्रस्तुत विषय को विवेचित किया गया है। आचार्य श्री विद्यासागर जैसे स्थितिप्रज्ञ महर्षि द्वारा यह विषय प्रस्तुत करने में निश्चित ही पाठकों के सौभाग्य और विशेष पुण्य का उदय रहा होगा।

चैतन्य शक्ति युक्त ज्ञान दर्शनमयी आत्मा प्रत्येक प्राणी के तन में विद्यमान है। उस आत्मा के अस्तित्व की अनुभूति या आभास जिस साधक को हो जाता है। वह साधक अपनी आत्मा की यथास्थिती को जानने में सदा उत्सुक रहता है। बहुत कम ऐसा होता है जब कोई अपने ज्ञान के व्यापार को बाहर से समेटकर भीतर ला दे क्योंकि ज्ञान का व्यापार अवधारणाओं के आधार पर वर्हिगामी होता है जिससे वह अपने शरीर को ही चेतन समझने लगता है। मोहादि से भरी यह समझ जब अनुभव में आती है तब वह प्राणी छटपटा कर अपने अंतर की शक्तियों का बोध करना प्रारम्भ कर देता है। अंतर की शक्तियों में जब पूर्ण आस्था स्थिर हो जाती है और उन अंतर शक्तियों में ज्ञान दर्शन का व्यापार स्थिर हो जाता है। उस समय जो संवेदना जागृत होती है, वह अद्वितीय व आनंदमय होती है। उस आनंद को पाने की ललक जिस साधक को लग जाती है वह साधक बार–बार उस अंतर्यात्रा के लिये प्रयत्नशील हो जाता है और एक समय ऐसा आता है जब वह अपने आप में पूर्ण ध्यानस्थ होकर स्थितिप्रज्ञ बन जाता है। और विश्वदर्शी बनकर परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर लेता है। ऐसे ही अध्यात्म की यात्रा पूर्ण होती हुई निरंजन स्वरूप को प्राप्त करके शुद्धात्मा लोक के अग्र भाग में स्थिर हो जाती है और हम यह कह सकते हैं कि एक आत्मा पतित से पावन होकर भगवान बन जाती है।

श्रमण-शतकम् में बहिरात्मा :-

शरीर और आत्मा को एक मानने वाले का मन, शरीर, स्त्री, पुत्र, मकान में आदि भ्रमवश

ममकार-अहंकार की प्रवृत्ति से युक्त हो जाता है और जो वह इन्ही जड़ संपदाओं आदि में फूलता-भूलता रहता पाप लिप्त दुखों को भोगता रहता है। ऐसा कुबुद्धि अज्ञानी मानव अपनी आत्मा के प्रति रुचि और फिर उसकी प्रतीति को प्राप्त नहीं होता है। इससे विपरीत जो मुनि स्वस्थ-आत्मस्थ होता हुआ सुख से जीवित रहता है उसे मैं सिर से नमस्कार करता हूँ। श्रमण–शतक के इस बहिरात्म स्वरूप को रेखाकित करने वाले निम्नलिखित छन्द में तीन प्रकार के ककार का तीन प्रकार से अलग अर्थ में प्रयोग किया गया है। एक ककार का अर्थ आत्मा लिया गया है। दूसरे ककार का अर्थ सुख और तीसरे ककार का अर्थ शिर लिया है। इस प्रकार यमक अलंकार की एक अक्षरीय अनेकार्थ प्रयुक्ति विरले ही साहित्य में देखी जाती है। अध्यात्म कुछ अलग ही है। विद्वानों की दृष्टि में यह छन्द अनुवाद सहित मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

रुचिमेति कुधी: केन परवस्तुदन्तचिन्तो युतोक़ेन।
स्वस्थो जीवति केन सह मुनिस्त नमामि केन॥

आत्मा जिसे न रुचता वह तो मुधा है,
मिथ्यात्व घर में रहते सदा ये,
ज्ञानी निजीय घर में रहते सदा ये,
वन्दूँ, उन्हें , द्रुत मिले निज संपादायें ॥46॥

इसी विषय को आगे स्पष्ट करते आचार्यश्री ने अपनी लेखनी को साधते हुए सीधा बहिरात्मा पर निशाना लगाया है और अलीक शब्द के अनुप्रास और उसके यमकत्व को कागज की रेख पर लेखनी से उकेरा है ऐसा लगता है जैसे किसी कलाकार ने समुद्र की रेत पर कोई कृति उकेर दी हो। इस छन्द का भाव पक्ष यह है कि जो मनुष्य नालीक मूर्ख है, जो आत्मा के स्वरूप को नहीं जानता है जिसने अलीक अर्थात् मिथ्या अर्थ को ही जान रखा है जो समान नालीक अर्थात् अहंकारी एवं अज्ञानी है। हे जिनेन्द्र देव ! ऐसा मनुष्य शिव श्री, कल्याणकारी लक्ष्मी अथवा मोक्ष लक्ष्मी के लिये अलीक अप्रिय क्यों नहीं होगा ? अर्थात् अवश्य ही होगा। इस छन्द में नालीक का अर्थ मूर्ख है अलीक का मिथ्या है और अलीक का अर्थ अप्रिय भी प्रयुक्त किया गया है। इस सन्दर्भ में दृष्टव्य है।

स ना नैति नालीक:स्वतेनेतोऽर्थोऽतो नालीकः।
यः समाननालीकः शिवश्रियेद्रव्यस्तु नालीकः?॥

संसार बीच बहिरात्म वो कहता,
झूठा पदार्थ गहता, भव को बढ़ाता,
व्यर्थ मान करता निज को भुलाता है,
लक्ष्मी उसे नहीं वरती, वह अति कष्ट-उपजाता ।54।

श्रमण शतक में प्रतिपादित अन्तरात्मा–

शरीर से पृथक, चेतन शक्ति, अमूर्तिक आत्मा का बोध प्राप्त हो जाना और शरीर के प्रति मद, गर्व अथवा ममत्व छोड़ देना ही अन्तर आत्मा का स्वरूप है। जैसे कमल जल से अलग होता है। वैसे ही जड़ शरीर से भिन्न आत्मा को मानने वाला अंतरात्मा पाँच इन्द्रिय के विषयों से निवृत्त होकर अप्रमादी हो जाता है। संसार से उत्पन्न होकर भी जड़ पौद्गलिक

संसार से अपने आप को जो पृथक अनुभव करने लगता है, वह अन्तरात्मा बनेगा। अंतरात्मा तीन प्रकार के होते हैं। जघन्य अन्तरात्मा अविरत सम्यग्दृष्टी होता है। तथा मध्यम अन्तरात्मा के अन्तर्गत देशव्रती आते हैं। उत्तम अन्तरात्मा मुनि शुद्धोपयोगी साधक माने जाते हैं। श्रमण-शतकम् में इस विषय का विवेचन संकेत रूप में उपलब्ध है। अन्तरात्मा का स्वरूप जानकर ही व्यक्ति अन्तरात्मा बन सकता है और अपने ध्यान के माध्यम से सम्पूर्ण कषाय-कालिमा दूर करके आत्मा-सत्ता की सर्वोच्चता को प्राप्त कर सकता है ? और शुक्ल ध्यान के माध्यम से भी सम्पूर्ण आत्म विकास को प्राप्त कर सकता है। इस संदर्भ में परम पूज्य आचार्यश्री के छन्द 33 और 34 यहाँ प्रासंगिक हैं, दृष्टव्य है।

जलाशये जलोद् भव मिवात्मानं जलतोऽनुभव
प्रमादी माऽये भव भवय ! विषयतो विरतो भव ॥3॥
भिन्नोऽहमद्रगान्मद-रूपिणोअपि च भिन्नभित्द्रंगमदः।
मुञचामीत्वेति मद-माड़ग हे गतभवहेतुमद ॥34॥

जैसे कहे जलज जो जल से निराला
वैसे बना रहा सदा जड़ से खुशाला।
क्यों तू प्रमत्त बनता, बन भोग त्यागी,
रागी नहीं बन कभी, बन वीतरागी ॥33॥

हूँ देह से पृथक चेतन शक्ति बाला,
स्वामी सदैव मुझसे तन भी निराला।
यों जान मान तनका मद छोड़ता हूँ,
मैं मात्र मोक्ष-पथ से मन जोड़ता हूँ॥

श्रमण शतकम् में परमात्मा का स्वरूप–

श्रमण शतक ग्रन्थ में परमात्मा का स्वरूप प्रथम काव्य में ही स्पष्ट किया है। जब आत्मा सर्व कर्मों से मुक्त हो जाती है तो वह परमात्मा हो जाती है। जैन दर्शन में परमात्मा दो रूप में मान्य है।

1. अरिहंत या सकल परमात्मा
2. सिद्ध या निकल परमात्मा

सकल परमात्मा चार घातिया कर्मों के नाशक होते हैं और निकल परमात्मा अष्ट कर्म रहित, शरीर रहित होते हैं। जिनका ज्ञान ही शरीर होता है। ऐसे परमात्मा के संबंध में परम पूज्य आचार्यश्री ने एक छोटा सा संकेत दिया है। चूंकि ग्रन्थ में श्रमण की मुख्यता होने से परमात्मा का संकेत ही पर्याप्त माना है। वह संकेत इस प्रकार है।

श्री वर्धमान ! माऽय आकलरय
नत सुराप्तमानमाय !
विधीश्चामानमाय मचिरेण
कलयामानमाय ॥

योगी करें स्तवन भावभरे स्वरों से
जो है सुसंस्तुत नरों, असुरों, सुरों से।
वे वर्धमान गतमान मुझे बचावें,
काटें कुकर्म मम मोक्ष विभो ! दिलावें ॥1॥

इस तरह परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने अपने अध्यात्म ग्रन्थ श्रमण-शतकम् में आत्मत्रय की विशद विवेचना की है जिसका आध्यात्मिक रसिक पूर्ण आनंद ले सकते हैं। ■

परिषहजय शतक और आचार्य विद्यासागर

• डॉ. नीलम जैन सर्राफ, ललितपुर •

संस्कृत काव्य वाङ्मय में शतकों की अति समृद्ध रचना परम्परा उपलब्ध होती है जिसके प्रस्थान बिन्दु दूसरी शती के आचार्य समन्तभद्र हैं और उस बिन्दु का विसर्पण बीसवीं शती के महाकवि आचार्य विद्यासागर जी तक दृष्टिगत होता है।

संस्कृत साहित्य के इतिहास के साक्ष्यानुसार शतक काव्य के रचनाकारों में दक्षिण भारतीय कवियों का विशेष इतिहास प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत के इन्हीं शतक प्रणेता कवियों की परम्परा में प्रसिद्ध दक्षिण कर्नाटक प्रान्त के मूल निवासी महाकवि आचार्य विद्यासागरजी का नाम है

शतक काव्यों के वर्णन में विभिन्न कवियों ने श्रृंगार या करुण रस को प्रमुखता दी है पर आचार्यश्री ने शान्तरस को ही प्रधान रखा है और इसी रस में उन्होंने मुख्यतः पाँच शतकों की रचना की है। 'श्रमणशतकम्, निरञ्जनशतकम्, भावनाशतकम्, परिषहजय-शतकम्, और सुनीतिशतकम्।'

आचार्यश्री का तर्क मूलक अभिप्राय यह है कि जो अध्यात्म को श्रृंङ्ग अर्थात् उच्च स्थान या शिखर स्थान प्रदान करता है वही श्रृंगार रस है। इस प्रकार प्राचीन रसवादियों की परम्परित अवधारणा को अवखण्डन करके आचार्यश्री से शान्त रस या प्रशमरस को ही प्रमुख प्रमाणित किया है।

संस्कृत-वाङ्मय के महाकवि विद्यासागरजी के पद्यों में ग्रन्थ कौशल की विस्मयकारिणी गरिमा है। जिसमें 'परिषहजय शतकम्' एक अभिनव काव्य के रूप में प्रस्तुत हुआ है। परिषह की ओर ध्यान या लक्ष्य का न होना ही वास्तविक परिषह-जय है। महाकवि विद्यासागर जी ने इसी परिषहजय की विषय वस्तु को अपने प्रस्तुत शतक काव्य में परिनिबद्ध किया है। आचार्यश्री का कहना है कि मुक्तिकामी मुनियों को सभी प्रकार के यान, वाहनों को भूलकर सम्यग्ज्ञान की सवारी करनी होती है। मुनि को किसी से किसी प्रकार की सहायता की कामना नहीं करनी होती है। इस प्रकार की चर्या परिषह सहन करने वाले साधु ही कालजयी होते हैं।

समधिरोहित......... तु दर्शकाः ।।43।।

आचार्यश्री का चिन्तन है कि तपश्चर्या में संयम जितना आवश्यक है परिषह विजय में चारित्र उतना ही अनिवार्य है और उतना ही अपेक्षित है सम्यग्ज्ञान के लिए सम्यग्दर्शन। इस शतक काव्य का सर्वाधिक प्रभावक पक्ष है परिषह सहन की मानसिकता। परिषह-सहन के लिए जो उद्धत होता है उसमें परिषह स्वयं पराजित हो जाते हैं। इसके लिए अर्थात् परिषह सहन के लिए तैयारी शरीर के स्तर पर कम और मन के स्तर पर अधिक होनी चाहिए तभी व्यक्ति परिषह सहन कर पाता है।

शपदि संपादि......... विधातुमिह क्षमः।।96।।

अर्थात् जो मुनि सम्पत्ति और सम्यग्ज्ञान से सुखी नहीं होता तथा विपत्ति और अज्ञान से भी शीघ्र दुःखी नहीं होता वही परिषह-सहन करने में समर्थ तथा निर्मल तप करने में सक्षम होता है।

'परिषहजयशतकम्' में शब्दालंकारों की विशेष प्रधानता है। यमक, श्लेष और अनुप्रास का तो विराट साम्राज्य ही फैला है। जिससे अर्थ का चमत्कार अधिक बढ़ गया है। यहाँ उक्त तीनों प्रकार के अलंकारों से सुसज्जित एक पद्य दर्शनीय है।

अथ निवारितकापद......... लोहिताः।।41।।

अर्थात् जिन्होंने सभी प्रकार के पदत्राणों (जूता, चप्पल) आदि का परित्याग कर दिया है जो पैदल चलने से श्रान्त है जो अपने को विभिन्न आपदाओं से बचाने का प्रयास नहीं करते, अकुशल यानी कल्याण रहित (कुश, कंटक आदि से व्याप्त) मार्ग पर चलने से जिनके पैर लहूलुहान हो रहे हैं, ऐसे सुधी या विवेकी मुनिजन क्या अपने अन्तःकरण से भी लोहित अर्थात् अनुरागी यामासक्त होते हैं अर्थात् नहीं होते हैं ?

इस प्रकार पूरे शतक में महाकवि विद्यासागर जी ने कला-सौष्ठव और भाव-सौन्दर्य का विनियोग किया है। परिषह के विभिन्न अपात्रों का चित्रण सजीव और प्रभावकारी है। आचार्यश्री ने अपने इस काव्य में प्रथम/शांतरस को अपनी काव्य प्रतिभा और शब्द शक्ति से जो रसमयता प्रदान की है वह दुर्लभ है। शान्तरस के काव्य में भाव और कला का अन्वेषण कर आचार्यश्री ने रमणीयता का दर्शन कराया है। काव्य मनीषी आचार्यश्री ने परिषह सदृशय कड़वी औषधि को भव रोगियों के लिये काव्य की चाशनी से लिप्त करके परिवेषित किया है। यह काव्य संस्कृत वाङ्मय के लिये अभूतपूर्व उपहार है। ■

संत शिरोमणि

महामनीषी आचार्य
तुमको प्रणाम।
मूकमाटी के कालजयी
रचनाकार
शतशःप्रणाम
सिध्दिसाधक,दिगम्बर शिव
तुमको प्रणाम।
मूकमाटी के मंगलघट
तुमको प्रणाम।
असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
इस वेदवाक्य के सहज
साकार रूप
जीवन्त कोष तुमको प्रणाम।
इच्छा क्रिया ज्ञान के
समन्वय रूप
त्रिवेणी–प्रवाह के तीर्थराज
तुमको प्रणाम।
मिथ्याचारों के विद्रोही स्वर
कांति के अमर घोष
विद्या के सागर तुमको
प्रणाम।
तेजस्वी अंशुमाली समान
दिगदिगन्त आलोक पर्व
हे ज्योतिपर्व के ज्ञानदीप !
उज्वल महिमा से मण्डित
महामहिम संत
शिरोमणी कबीर !
तुमको प्रणाम।
(ज्ञानदीप विद्यासागर जी को समर्पित)

• डॉ.संकटाप्रसाद मिश्र •

संयम स्वास्थ्य योग

स्तनपान बच्चे का प्रथम अधिकार

माँ का दूध प्रकृति की सबसे बड़ी धरोहर है। माता नवजात शिशु के लिए स्तनपान नहीं करा देती तब तक उसे सन्तोष नहीं होता है। क्योंकि स्तनपान का माता एवं शिशु के मानसिक संतोष से गहरा संबंध है। ममतामयी गोद में स्पर्श सुख के साथ मिला भोजन बच्चे को विशेष तृप्ति एवं संतुष्टी देता है और उसे आत्मविश्वासी बनाने में मददगार होता है। इसके विपरीत जिन बच्चों को माँ का दूध नहीं मिलता है, वे निराशावादी, शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर बुद्धि वाले होते हैं। बात-बात में झगड़ा फसाद करते हैं। वे ईर्ष्या राग-द्वेष एवं हीन भावना से ग्रसित होते हैं।

माँ के दूध में वे सभी तत्व विद्यमान है जो बच्चे के विकास के लिए आवश्यक हैं इसमें खनिज, कैल्शियम, मैग्नेशयम, सोडियम, आयोडीन, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स एवं विटामिन्स का भरपूर भंडार है। यह शरीर में शक्ति देने वाला होता है। जन्म से ही माँ का दूध अनुकूल होता है, शरीर में स्निग्धता लाता है एवं शिशु के समुचित विकास में सहायक होता है।

माँ का दूध अन्य दूधों से श्रेष्ठ क्यों ?

कोलोस्ट्रम एक अमृत पेय- प्रसव के बाद 3-4 दिन तक कुछ गाढ़ा एवं पीलापन लिए हुये होता है इसे कोलोस्ट्रम कहा जाता है। यह दूध बहुत ही गुणकारी एवं पौष्टिक होता है इसमे रोग प्रतिरोधक तत्व होते हैं जो शिशु में रोग प्रतिरोधक प्रदान कर संक्रामक रोगों से बचाते हैं। साथ ही माँ से प्राप्त इस अमृत में अनेकों विटामिन्स कैल्शियम, लौह तत्त्व एवं खनिजों की प्रचुर मात्रा रहती हैं यह बच्चों के विकास में बड़ी सहायक होती है धीरे-धीरे दूध सन्तुलित होता जाता है एवं अन्य तत्वों के साथ लेक्टोज की मात्रा बढ़ती जाती है। अतः प्रसव के कुछ ही समय पश्चात् ही स्तनपान शुरु कर देना चाहिए। इस प्रक्रिया को बच्चा स्वाभाविक रूप से अपना लेता है, जैसे स्तनपान जन्म से ही सीख कर आया हो।

मानसिक विकास में सहायक- माँ के दूध में ग्लेक्टोलिपिड्स एवं लेक्टोज नामक तत्व होने से यह शिशुओं के शारीरिक एवं मानसिक विकास में सहायक होता हैं जबकि पशुओं के दूध में प्रोटीन्स होने से शारीरिक विकास तो होता है परन्तु शिशु के मानसिक विकास के लिए माँ के दूध के स्तर का श्रेष्ठ कोई विकल्प नहीं है।

दूध प्रकृति की निःशुल्क देन- माँ का दूध प्राकृतिक रूप से सुलभ और सुपाच्य भोजन है। यह गरीब-अमीर सबको समान रूप से मिलता है, आसानी से पचता है एवं प्रदूषण रहित होता है। इसमें किसी तरह की मिलावट व अशुद्धता होने की सम्भावना ही नहीं रहती है। यदि माँ स्वस्थ है तो बच्चे को भी पौष्टिक तत्वों से भरपूर दूध मिलता है। इसके लिए प्रसव उपरान्त माता को हल्का सुपाच्य एवं पौष्टिक

भोजन दिया जाता है। 6 माह तक बच्चे के लिए माँ का दूध ही सम्पूर्ण आहार है। फिर धीरे-धीरे दाल का पानी, फलों का रस आदि देना शुरू करते हैं।

स्तनपान के समय माता को ध्यान रखने योग्य बातें-

1. यदि माता किसी रोग से ग्रसित है तो शिशु में भी बाल्यावस्था से ही उस रोग के लक्षण आ जाते हैं। अतः रोगी माता का दूध बच्चे को नहीं देना चाहिए। कई बार माता में रोग के स्पष्ट लक्षण नहीं दिखाई देते है, परन्तु बच्चा बीमार हो जाता है, जैसे -अतिसार, दस्त, कब्जियत, पेट फूलना, सर्दी , खाँसी ज्वर आदि। जब तक बच्चा माँ का दूध पीता है, जब तक बच्चे को अलग से औषधि देने की आवश्यकता नहीं रहती है। इस समय माँ को दवा देने एवं परहेज करने से बच्चा स्वतः ही ठीक हो जाता है। यही आयुर्वेद चिकित्सा का सिद्धांत है।

2. स्तनपान के समय माँ को ज्यादा शीत या गर्मी के कार्य नहीं करना चाहिए। अधिक शीत या गर्म स्थान से आकर तुरन्त दूध नहीं पिलाना चाहिए।

3. गुस्से में, क्रोध, संताप आदि करते हुए दूध नहीं पिलाना चाहिए।

4. हमेशा हंसमुख एवं शांत स्वभाव से प्रसन्नचित होकर स्तनपान करना चाहिए।

5. दूध हमेशा आराम से बैठकर ही पिलाना चाहिए, दूध पिलाते समय बच्चे का सिर थोड़ा सा ऊंचा रखना चाहिए।

6. दूध पिलाने के बाद बच्चे को कंधे पर लेकर थपथपाना चाहिए। इससे बच्चे को डाकर आ जाती है एवं उल्टी करने का भय नहीं रहता है।

7. स्तनपान के मध्य यदि बच्चा सो जाता है तो उसे जगा देना चाहिए जिससे वह पूर्ण खुराक ले सकें।

8. कुछ महिलाएं मद्यपान, धूम्रपान या तम्बाखू आदि का सेवन करती हैं उनको स्तनपान नहीं कराना चाहिए। क्योंकि स्तनपान द्वारा निकोटिन आदि हानिकारक तत्व दूध में आकर बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

9. गर्भ निरोधक गोलियाँ एवं एन्टीवायोटिक्स, कैफीन, सल्फर, ड्रग्स आदि के सेवन से भी बच्चों को नुकसान पहुंचता है। अतः स्तनपान काल में इनका सेवन नहीं करना चाहिए।

10. संक्रामक रोगों से ग्रस्त माता को स्तनपान नहीं कराना चाहिए।

11. विपाक्त भोजन के बाद पिलाया गया दूध भी विषाक्त हो सकता है। जिससे बच्चा विभिन्न प्रकार के रोग जैसे आँत्रशोध एवं अतिसार आदि से पीड़ित रहता है।

स्तनपान से माँ को लाभ-

1. जब तक बच्चा माँ का दूध पीता है। माता को मासिक धर्म देर से आता है, अतः यह प्राकृतिक गर्भ निरोधक है।

2. स्तनपान कराने वाली महिलाओं को अंडकोष एवं स्तन के कैंसर की सम्भावना कम रहती है।

3. दूध पिलाने से गर्भाशय में जमी हुई वसा का प्राकृतिक रूप से शरीर में उपयोग होता रहता है जिससे शरीर सुन्दर और सुडौल हो जाता है।

4. कुछ माताएं यह सोचती हैं कि स्तनपान से उनके फिगर पर असर पड़ेगा पर यह उनकी मानसिक भ्रान्ति है। स्तनपान से स्तन सुडौल और पुष्ट होते हैं।

दूध बढ़ाने के कुछ सामान्य उपाय-

1. बारीक पिसा हुआ जीरा (बिना सिका) 5 ग्राम गुड़, 5 ग्राम घी मिलाकर खायें ऊपर से गर्म दूध पियें। यह मात्रा दिन में दो-तीन बार लें।

2. 50 ग्राम मूंगफली दाने को रात्रि में पानी में भिगो दें। सुबह नमक लगाकर या सादे ही, ये दाने अच्छी तरह से चबा-चबा कर सेवन करें मूंगफली सेकें नहीं कच्ची ही प्रयोग करें।

3. अश्वगंधा एवं शतावरी का चूर्ण 10 ग्राम दूध के साथ सुबह शाम सेवन करें ।

4. ताजे कच्चे सिंघाड़े खाएं या सूखे सिंघाड़े पीसकर हलुवा बनाकर खाएं।

5. बिना सिके दलिया की खीर बनाकर खाएं।

6. 25 ग्राम खसखस एवं दो बादाम को रात्रि में पानी में भिगो दें। सुबह सिल पर बारीक पीस कर गर्म मीठें दूध में मिलाकर पीयें। या खीर बनाकर खाएं।

7. 2-3 ग्राम सुहागा का फूला बनाकर पान में रखकर खाने से दूध पतला एवं सुपाच्य होता है।

8. हालो(चन्दशूर) 2 चम्मच (10 ग्राम) को दूध के साथ सुबह-शाम खाएं या दूध में डाल खीर बनाकर घी डालकर खाएं अच्छा लाभ होता है। माताएं उपरोक्त विधियों में जो उपलब्ध एवं प्रकृति अनुकूल हो उनका प्रयोग कर सकती हैं। प्रयोग 4-5 माह लगातार करें। ■

युग सृजेता

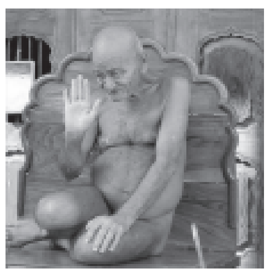

विद्यासागर आज के महावीर हो
हिंसा की अग्नि बुझाने नीर हो।

दीन दुखियों के मसीहा तुम बने
डूबती किश्ती की तुम तकदीर हो।

चरण चिन्तन चेतना की मूर्ति तुम
तत्त्व चिन्तक आत्मा ध्याता धीर हो।

कौन कहता है तुम मुझसे दूर हो।
तुम मेरे पलकों की गुरु तस्वीर हो।

युग सृचेता क्रान्ति दृष्टा संततुम
युग सृजेता मोक्ष की तकदीर हो।

संस्कार फीचर्स

ज्ञान सागर के मुक्ता को

• अरुणकुमार, भुवनेश्वर (उड़ीसा) •

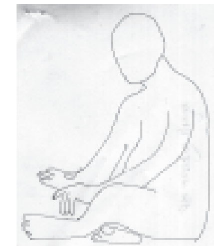

जिनके पग तले, अग्नि दग्ध ह्रद, शीतलता पाता है;
जिनके चहुँ और, भक्ति-सरोवर, लहराता है।
जिनकी दिव्यवाणी से, रत्नत्रय खिरते हैं;
जिनके कर-प्रस्तर को वंदनीय करते हैं।
ऐसे सृजक-वाचस्पति, शिल्पी को मेरा शत वंदन है
पूज्य संत शिरोमणि को, मेरा नित वंदन है ॥1॥

जिनका आलम्बन, भव सिन्धु पार कराता है;
जिनकी कृपा दृष्टि से, त्याग कंचन हो जाता है।
जिनके मुख-मण्डल पर, रवि-शशि की आभा है;
जिनकी देहदृष्टि में नंदन-वन-समाया है;
ऐसे विद्याधर विष्णु को मेरा नित वंदन है।
चतुर्विध संघाधिपति, को मेरा नित वंदन है ॥2॥

जिनके चरण से मरु, में मान सरोवर सजते हैं;
जिनकी पगधूलियाँ, वंजर मधुवन से बनते हैं।
जिनके गुण गायन से शब्द भी लघु बन जाते हैं;
जिनकी स्तुति कर कोटि कष्ट तृप्ति अमित पाते हैं
ऐसे कामदेव महामानव को मेरा शत वंदन है;
108 विद्यासागर जी को, जग का नित वंदन है ॥3॥

जिनके आशीषों से, श्री सुधा, क्षमा सागर हैं;
अरु श्री समता, प्रमाण, उदार व ध्यान सागर हैं।
जिन्होंने विगत तीस वर्षों में शताधिक मुनि रत्न दिए;
चन्द्र सूर्य, पवन, राम उदार वन, जग को सदा चरण दिए है।
ऐसे भागीरथ, उद्धारक को, मेरा शत शत वंदन है;
ज्ञानसागर के मुक्ता को मेरा नित वंदन है ॥4॥

जिनका नेतृत्व निश्चय से, स्वर्णिम कल लाएगा;
तममय कलयुग निशा में, सतयुग प्रभात आएगा।
प्राणियों का सदन, कंदन, कराह विलुप्त हो जाएगा;
दुखमा-दुखमा नहीं, सुखमा काल आएगा।
ऐसे क्रांतिकारी, नवसृजक, पुनुरोद्धारक को मेरा कर वंदन है;
नभ, जल जलचारी जलचेतन का प्रतिपल वंदन है ॥5॥ ■

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी का साहित्यिक योगदान

• डॉ. रजनी जैन •

जैन परम्परा में अंतिम 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर के बाद की लिखित वाङ्मय पुष्पदंत, भूतबली, कुंदकुंद उमास्वामी, अकलंकदेव, संतभद्र आदि अनेक आचार्य हुए, जिन्होंने अपनी कृतियों से असंख्यात भव्यों को मोक्षमार्ग का राही बना दिया। बीसवीं शताब्दी में आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज जैसे साधक साहित्यकार हुए, जिन्होंने जयोदय, वीरोदय, सुदर्शनोदय, दयोदय जैसे संस्कृत महाकाव्य लिखे, वहीं हिन्दी में भी प्रचुर साहित्य का निर्माण उन्होंने किया। आचार्य ज्ञानसागरजी के मेधावी होनहार शिष्य, 21वीं शताब्दी में प्रतिभाशाली, प्रभावक श्रमण संस्कृति के तिलक, महान तपस्वी आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने भी अनेक संस्कृत, हिन्दी काव्य कृतियों को लिखकर इस परम्परा को जीवित ही नहीं रखा अपितु नव-नूतन रूप देकर उसे अग्रणी रखा। आपके द्वारा 'मूकमाटी' महाकाव्य छन्द मुक्त अध्यात्म परक राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखा पहला महाकाव्य है, जिस पर अनेक शोधकार्य सहित समीक्षाएं के साथ मीमांसाएं भी लिखी गई है। अब यह काव्य हिन्दी साहित्य की निधि बन गया है। मूकमाटी के अतिरिक्त अन्य काव्य साहित्य पर भी अनेक शोध कार्य, डी.लिट् आदि कार्य हो चुके हैं या हो रहे हैं। प्रस्तुत लेख में आचार्यश्री के साहित्यिक योगदान को संक्षिप्त परिचयात्मक रूप से लिखने का प्रयास किया गया है।

भारत वसुधा धर्म प्रधान है, इस भूमि पर तीर्थंकर, महान पुरूषों एवं अनेक मनीषियों, आचार्यो ने जन्म लेकर इसे पवित्र, गौरवान्वित, पूज्य बनाया है। जिन्होंने अपने आत्महित के साथ-साथ इस भूमि के भव्य प्राणियों (जन-जन को) को जनकल्याण के अनेक कार्य अपनी कथनी और करनी से किए हैं। भारत की संस्कृति अध्यात्म प्रधान है, इस भूमि पर मात्र जीवन जीने की कला ही नहीं सिखायी जाती, अपितु आत्मकल्याण की शाश्वत् विद्या भी सिखायी जाती है, जिसके माध्यम से प्राणी भौतिक सुख के साथ आत्मिक आध्यात्मिक सुख को भी प्राप्त कर आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होकर अलौकिक सुख की अनुपम, अद्भुत-अनुभूति भी करता है। इस शाश्वत विद्या का ज्ञान महान आत्माओं के मार्गदर्शन के बिना संभव नहीं है।

इन्हीं महान आत्माओं की श्रृंखला में वर्तमान में इस धरा पर एक अनूठा नाम है, आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज का जो दिगम्बर परम्परा के सर्वश्रेष्ठ, महान तपस्वी, ज्ञान के भण्डार, सरस्वती के पुत्र, युगप्रवर्तक, जन-जन के पथप्रदर्शक, समाज एवं देश के हर पहलू पर सुधारात्मक गंभीरता से विचारक एवं चिंतक है, जिन्होंने अपनी तपस्या, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से पाश्चात्य संस्कृति के अंधकार में डूबते हुए भारतीय समाज को वह सब दिया है, जिसकी

आज भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को महती आवश्यकता है।

आचार्यश्री का संक्षिप्त परिचय-

आचार्यश्री विद्यासागरजी का जन्म शरद पूर्णिमा के दिन 10 अक्टूबर सन् 1946 में कर्नाटक प्रांत के सदलगा ग्राम जिला बेलगांव में हुआ था पिता का नाम श्री मलप्पा अष्टगे एवं माता का नाम श्रीमति था। आप 4 भाई एवं 3 बहिनें है, जिन्में बड़े भाई महावीर को छोड़कर शेष सभी परिवार के लोग जिन दीक्षा अंगीकार कर आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हैं। पिताश्री (मुनि श्री मल्लिसागरजी) एवं माताश्री (आर्यिका समयमति माताजी) समाधिस्थ हो चुके हैं। मुनिश्री समयसागरजी एवं योगसागरजी आपके संघ में ही रहकर उत्कृष्ट साधना में तत्पर हैं। आपके अंदर वैराग्य का बीज आचार्य श्री शांतिसागरजी ने बालावस्था (9 वर्ष) में ही आरोपित कर दिया था। इस बीज को पल्लवित किया। आचार्य देशभूषण ने ब्रह्मचर्य व्रत देकर तथा मुनि रूप में फलित हुआ। आषाढ़ शुक्ल पंचमी, 30 जून 1968 को 21 वर्ष की उम्र में आचार्यश्री ज्ञानसागरजी के वरदहस्त को पाकर। आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने इस युवा मुनि का वैराग्य, लगन, सेवा से प्रभावित होकर शिष्य को ही अपना गुरू बनाना स्वीकार किया और मार्गशीर्ष कृष्णा दूज, 22 नवम्बर 1972 को विधिपूर्वक अपना आचार्य पद मुनि विद्यासागरजी को देकर इनसे ही समाधि ग्रहण करके एक नया इतिहास स्वर्णिम पात्रों पर अंकित कर दिया। इतिहास में यह दिन हमेशा अमर रहेगा, जिस दिन एक शिष्य अपने गुरु का ही गुरु बना था।

शिक्षा - यदि लौकिक शिक्षा की बात की जाए तो आचार्य श्री विद्यासागरजी के पास कोई डिग्री नहीं है। वह कन्नड़ भाषी है, मात्र नवीं कक्षा तक स्कूली शिक्षा है, लेकिन आपका प्रखर ज्ञान सूर्य देखकर कहा जा सकता है कि आपकी शिक्षा बिन्दु से सिन्धु की है। आज कौन-सा विषय है, जिस पर आचार्यश्री जी की पकड़ न हो ? ऊँची से ऊँची शिक्षा प्राप्त विद्वान, राजनेता, धर्मनेता, समाजनेता उनके ज्ञान के सामने नतमस्तक होकर उनसे मार्गदर्शन पाने के लिए लालायित रहते हैं।उनकी हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बंगला, मराठी, हिन्दी, कन्नड़, आदि देशी भाषाओं क़ी पकड़ इतनी मजबूत है कि उनके मुख एवं कलम से निकले शब्दों का रहस्य शब्दकोश में खोजना पड़ता। विदेशी आंग्लभाषा के भी आप अच्छे जानकार है।

आचार्यश्री ग्राम, नगर और तीर्थस्थलों पर आत्मसाधना में शांतभावना से अनवरत विचरण करते हुए अपनी हित मित प्रिय अमृतवाणी से जनकल्याण में तत्पर रहते हैं। उनके अगाध ज्ञान, चिंतन, मनन, शब्दकोश से अनेक ऐसी अनूठी कृतियाँ निकली है, जिनसे संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य भण्डार समृद्ध हुआ है। इनमें से कुछ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषा की अनुवादित कृतियाँ हैं तो कुछ उनकी मौलिक रचनाएँ हैं। कृतियों का उल्लेख इस प्रकार है-

प्रारम्भिक रचनाएं-

आचार्य श्री शांतिसागर स्तुति (1971)
आचार्य श्री वीरसागर स्तुति (1971)
आचार्य श्री शिवसागर स्तुति (1971)
आचार्य श्री ज्ञानसागर स्तुति (1973)
भक्तिगीत

[illegible]

वंदन विद्यासागर को

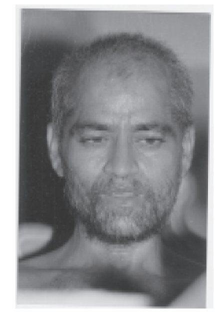

[illegible] वंदन विद्यासागर को।
[illegible] ॥

[illegible].....

[illegible]।
[illegible] ॥

[illegible].....

[illegible]।
[illegible] ॥1॥

[illegible].....

[illegible]।
[illegible] ॥

[illegible].....

[illegible]।
[illegible] ॥2॥

[illegible]......

[illegible]।
[illegible]।

[illegible].....

[illegible]।
[illegible] ॥3॥

[illegible].....

• ब्र. [illegible], इन्दौर •

[illegible]

तिरुमलै : [illegible]\[illegible]

[illegible] – [illegible]

[illegible]-604505, तमिलनाडु।

टेलीफोन - 04183-291136, 321520

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ – आवास हेतु (अटैच बाथरूम) 8 धर्मशालाओं में 10 कमरे, (बिना बाथरूम) 6 हॉल। [illegible] क्षमता - 100, औषधालय-नियमित-निःशुल्क, भोजनालय है।

[illegible] – [illegible], [illegible], 60 किमी., [illegible] 125 किमी., कांचीपुरम 50 किमी., [illegible] 120 किमी.।

बस स्टैण्ड-[illegible]-10 किमी., [illegible]-25 किमी., बस क्र.-15 बी, 148, 208, 422, 130, 104

[illegible] – [illegible]-4 किमी., [illegible]-125 किमी., [illegible] 60 किमी.।

[illegible] – [illegible] 09820248303, [illegible]-09867128508, [illegible]-09444053310, [illegible]-04183-291136, [illegible]-04183-203239

[illegible] – [illegible] 04। [illegible] 333 हैं।

[illegible] – [illegible]

[illegible] – [illegible] 50 किमी., [illegible] 50 किमी., [illegible]-50 किमी., [illegible]-50 किमी., कांचीपुरम-50 किमी., [illegible]-50 किमी.

[illegible] : [illegible]

नई दिल्ली। [illegible] 50 [illegible]।

आगम दर्शन

न्यायदीपिका का विषय सार

न्यायशास्त्र की परम्परा में अभिनव धर्मभूषण रचित न्यायदीपिका का विशिष्ट स्थान है। प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता अभिनव धर्मभूषण यति हैं। यह कृति न्याय विषय की संक्षिप्त विशद और महत्वपूर्ण प्रथम कोटि की रचना हैं। न्याय शास्त्र की विवेचना करने वाली इकलौती कृति है। इस कृति में जिस तरह से प्रमाण और नय का सुस्पष्ट वर्णन है वह अपने आप में अनूठा है जैन की दृष्टि से यह ग्रन्थ में प्रथम श्रेणी में रखे जाने योग्य है। दर्शन शास्त्रों की परम्परा में न्याय आद्य पद को ग्रहण करके जैन-जैनेत्तर विद्वानों की कई रचनाएँ उपलब्ध हैं और पार्थ सारथि जैसे विद्वानों की शास्त्र दीपिका जैसे दीपिकान्त शीर्षक उपलब्ध होवें।अतः अभिनव धर्मभूषण ने पूर्व परम्परा को ध्यान में रखकर इस कृति का शीर्षक न्याय दीपिका सुनिश्चित किया।

सच तो यह है कि न्यायग्रन्थों की भाषा जटिल और दुरुह होती किन्तु इस ग्रन्थ की भाषा सरल सुबोध और प्रांजल है। न्याय ग्रन्थ तीन शैली में प्राप्त होते हैं। 1. सूत्र शैली, 2. व्याख्यात्मक शैली, 3. प्रकरणात्मक शैली, इस कृति की शैली प्रकरणात्मक है। इस ग्रन्थ को तीन विभाग में विभाजित करके प्रस्तुत किया गया है। प्रथम विभाग प्रमाण लक्षण प्रकाश के नाम से है, दूसरा विभाग प्रत्यक्ष प्रकाश के नाम से उपलब्ध है तथा तीसरा विभाग परोक्ष प्रकाश के नाम से रचा गया है। इसी तरह के विभाग आचार्य वादिराज के प्रमाण निर्णय तथा प्रमाण परीक्षा ग्रन्थ आचार्य विद्यानंदी के ग्रन्थ में दृष्टिगोचर होते हैं। न्याय के मूल के विषय को स्थूल रूप से वर्णनित किया गया है। न्यायदीपिका का आधार तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ के प्रथमाध्याय का 6 वां सूत्र **''प्रमाण नयैरधिगमः''** है।

पहले प्रमाणसामान्य लक्षण-प्रकाश में प्रथमतः उद्देश्यादि तीन के द्वारा ग्रन्थ-प्रवृत्तिका निर्देश उन तीनों के लक्षण, प्रमाण सामान्य का लक्षण, संशय विपर्यय अन्धयवसाय का लक्षण इन्द्रियादिकों को प्रमाण न हो सकने का वर्णन, स्वतः परतः प्रामाण्य का निरूपण और बौद्ध भाट्ट प्रभाकर तथा नैयायिकों के प्रमाण सामान्य लक्षणों की आलोचना करके जैन मत सम्मत सविकल्पक अगृहीतग्राही सम्यग्ज्ञानत्व को ही प्रमाण सामान्य का निर्दोष लक्षण स्थिर किया गया है।

दूसरे प्रत्यक्ष प्रकाश में स्वकीय प्रत्यक्ष का लक्षण, बौद्ध और नैयायिकों के निविकल्पक तथा सन्निकर्ष प्रत्यक्ष लक्षणों की समालोचना अर्थ और आलोक में ज्ञान के प्रति कारणता का निराश विषय की प्रति नियामिक योग्यता का उपादान तदुत्पत्ति और तदाकारता का निराकरण, प्रत्यक्ष के भेद-प्रभेदों को निरूपण, अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष का समर्थन और सर्वज्ञसिद्धि

आदि का विवेचन किया गया है।

तीसरे परोक्ष प्रकाश में परोक्ष का लक्षण उसके स्मृति-प्रत्यभिज्ञान-तर्क-अनुमान और आगम इन पांच भेदों का विशद वर्णन प्रत्यभिज्ञान के एकत्व, प्रत्यभिज्ञान सादृश्य, प्रत्यभिज्ञान आदि का प्रमाणान्तर रूप से उपपादन करके उनका प्रत्यभिज्ञान में ही अन्तर्भाव होने का सयुक्तिक समर्थन, साध्य का लक्षण साधन का अन्यथानुपपन्नत्व लक्षण त्रैरूप्य और पाञ्चरूप्य का निराकरण, अनुमान के स्वार्थ और परार्थ दो भेदों का कथन हेतु भेदों के उदाहरण हेत्वाभासों का वर्णन उदाहरण उदाहरणाभास, उपनय उपनयाभास, निगमन निगमनाभास आदि अनुमान के परिवार का अच्छा कथन किया गया है।

अंत में आगम और नय के विषय का वर्णन करते हुए अनेकान्त तथा सप्तभंगी का भी संक्षेप से वर्णन किया गया है। इस प्रकार न्याय दीपिका में न्याय का आधारभूत पाठ्यक्रम का स्थूल एवं बाह्य परिचय दिया गया है। अतः न्याय की प्राथमिक ज्ञान कराने वाला यह ग्रन्थ सिद्ध होता है। ■

जलप्रपात...

पक्षपात..
यह एक ऐसा
जलप्रपात है
जहाँ पर
सत्य की सजीव माटी
टिक नहीं सकती
... वह जाती
पता नहीं कहाँ ?
.... वह जाती
और सत्य के अनगढ़
विशाल पाषाणखण्ड
अधगढ़े, टेड़े, मेड़े
अपनी धुन पर अड़े
शोभित होते....

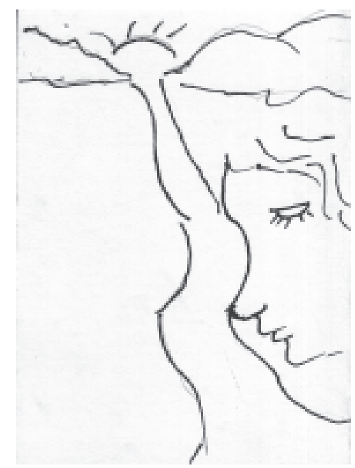

• प. पू. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज •

मानविकी कोष की अक्षय निधि

• डॉ. बृजेश कुमार द्विवेदी •

मूकमाटी मीमांसा भाग 3 सर्वाधिक महत्वपूर्ण समीक्षा ग्रन्थ है। मिट्टी और कुम्हार के संवाद एवं आख्यान को लेकर विविध संरचनाएं विवेचन-विश्लेषण की प्रक्रिया में साहित्य के मानदण्डों को दोहराती है। आचार्यश्री की रचनाओं में आज को टटोलते हुए आधुनिक साहित्यिक परिदृश्य में विभिन्न कोणों से झांकने का प्रयास हुआ है। समीक्ष्य ग्रन्थ पर चर्चा करने से पूर्व डॉ. प्रभाकर माचवे ने शब्द से शब्दातीत तक जाने की यात्रा में कवि के मानस लोक और अन्तर्जगत केभूगोल और मूकमाटी को सांस्कृतिक तथा दर्शानिक संश्लिष्टता को पुनर्रचना के स्तर तक ले जाने का प्रयास किया है। ताकि रचना और आलोचना के पूर्वा पर सम्बन्धों को लेकर भ्रम न रह जाय।

पातनिकी में आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का साहित्य विवेक अत्यन्त ऊर्वर रूप से मूकमाटी का स्निग्ध सृजन चेतना को उद्घाटित करता है। आचार्य जी की पातनिकी पढ़कर सहज ही यह धारणा बलवती होती है कि आलोचना केवल प्रतिभा और संवेदना की ही नहीं विद्वता और सृजन की गहरी समझ के साथ भाषा की विशिष्ट और गहन सर्जना है। आचार्य त्रिपाठी जी ने साहस और ईमानदारी से है। यहाँ शास्त्रीयता के सुदृढ़ आधार में स़ाहित्य-विमर्श है। मूकमाटी मीमांसा और प्रायोजित सच से भिन्न प्रीतिवर विचार एवं मानवीय चेतना तथा चारित्रिक विशेषताओं आदि की लयपूर्व आवृत्ति है। आचार्यश्री की साहित्य और अध्यात्म साधना का रहस्य उद्घाटित करना असीम को समेटना है। विषय वस्तु और चिन्तन की बहुआयामिता में भी आचार्य श्री के शब्द सत्य की गहराइयों से आते हैं। उन सभी आस्थाओं सभी भाषाओं को समय की धुन में गुनगुनाते हुए असीम को स्वर देना पाना, कवि की उंगलियों के हरेक फर्क से गुजरना कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। मूकमाटी मीमांसा के तृतीय भाग में शामिल विद्वानों ने अपने अंदाज में मूकमाटी की संवेदनात्मक चेतना और रहस्यात्मक यथार्थ को सामने रखने की कोशिश की है। इसमें डॉ. प्रेमशंकर, डॉ. महावीर जैन, डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, डॉ. सुधाकर गोलाकार, प्रो. आनन्दप्रकाश दीक्षित, डॉ. रामनाथ त्रिपाठी, पदम श्री रामनारायण उपाध्याय, डॉ. देवव्रत जोशी आदि प्रमुख हैं अन्य विद्वानों ने भी आचार्य जी के कल्पना के संसार में जलते दीपक की आलोक में जीवन और जगत के राग विराग को पहचाना है।

मूकमाटी का मूल स्वर मानवीय चेतना है। मानवीयता की प्राणशक्ति का सम्पूर्ण सम्भार

जिस पर टीका है उनमें मुख्य है जैन धर्म और दर्शन तथा तदानुसार आचार-संहिता। ख्याति प्राप्त साहित्यकारों ने आचार्यश्री के सरोकारों, सांस्कृतिक और वैचारिक चेतना से अनुप्राणित बिम्बों प्रतीकों के यथार्थ के मूर्त रूप देते रचना के सच एवं परिकल्पना के मूल्यों को बखूबी उभारा है। उत्तरोत्तर विकसित रचनात्मक प्रतिमानों को समीक्षकों ने सराहा है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि रचना की सृजनात्मक शक्ति जितनी सुदृढ़ है कविता के रास्ते में उतने भी पड़ाव है। इन पड़ावों से़ गुजरते हुए समीक्षक का लेखवीय संस्कार, स्मृतियां, सरोकार, इतिहास दृष्टि, विवेक और कौशल सक्रिय है, वह रचना के अर्थ विस्तार में चारों दिशायें छू पाता है। स्वर ताल और लय के स्पन्दन समीक्षमक को रचनाकार की अभिलाषा की पराकाष्ठा तक ले जाते हैं कवि की अनुभूति के सहारे वह ब्राह्माण्ड के विशाल दायरे तक अपने लेखन को समृद्ध बनाने की चेष्टा करता है। भावों की समृद्धि में समीक्षक खो नहीं जाता, बल्कि रचनात्मक अंगों प्रत्यंगों को परिभाषित करते हुए निहित अभीष्ट तक पहुंचने की चेष्टा करता है। मूकमाटी मीमांसा के तृतीय खण्ड में 94 विद्वानों एवं समीक्षकों ने अलग-अलग विषयों को शास्त्रीय परिभाषिक एवं नय अर्थों में प्रकट किया है।

समृद्ध शास्त्रीय वह विवेक और दर्शन की सूक्ष्म दृष्टि, जिस पांडित्य, विद्वता और गहरी समक्ष की मांग करती है। वह समीक्षकों के भाव और भाषा की साधना तो है ही रचना को साहित्य के मानदण्डों में परखने की मेधा है। एवं विभिन्न विषयों की गहरी समझ भी। इसलिए मूकमाटी मीमांसा में प्रस्तुत आलोचनाओं में एकरूपता नही हैं। प्रतिभा की उर्वर जमीन में मूकमाटी को आस्वाद प्रविधि अधिक स्वाभाविक और वैज्ञानिक है विराट फलक के अर्थ में कवि के आशय से संश्लिष्ट आत्म तत्व दर्शन की एक झांकी और है जो एक नये तेवर के साथ इतिहास तथा वर्तमानों के स्पर्श कर एक दूसरे को समझने का मौका देती है परम्परा और विरासत से जोड़ती है। इस बड़े फलक, इतनी महत्वपूर्ण विषय वस्तु की समीक्षा, सामाजिक यथार्थ और मानवीय आदर्श तथा आध्यात्मिक अवधारणा एवं दार्शनिक परिपार्श्व के बीच विवेक के धरातल पर लोकोत्रर संदेश से कम नहीं है। मूकमाटी की समीक्षा प्रकारान्तर से ख्याति प्राप्त साहित्यकारों द्वारा आचार्यश्री के प्रति अर्पित भाव प्रसून है जो रचनाकार के भाव प्रणव स्पंदन के संस्पर्श से अधिक गंभीर और ममस्पर्शी हो सके हैं। कम शब्दों में गहरे पानी पैठ मूकमाटी की मानवीय संचेतनाओं व सच्चाईयों को समकालीन जीवनानुभवों में पकड़ने की चेष्टा है। गहरी मानवीयता का समकालीन जीवन-संदर्भ-में पड़ताल है।

डॉ. केदारनाथ के शब्दों, ''वर्तमान में

दम घुटनेवाली, दुर्गन्धमय, खूनी, विद्वेष भरी, अभावभरी, शोषणोन्मुख परिस्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए जनसमाज-कल्याण को ध्यान में रखकर इस ग्रन्थ में परोक्ष आन्दोलन का संकेत किया है।'' समीक्षकों ने माना है कि माटी और कुम्हार आदि के संवाद के जीवन राग जो मानवीय शालीनता का पर्याय है एवं एक कर्मयोगी साधक को भी चुनौती देता है। भाव रूप में अधिक मृदु और सन्तुलित है। प्रतीकात्मक अभिप्राय इस चुनौती में सही रास्ता चुनने की परिकल्पना है। मिट्टी, जल, अग्नि, आकाश और धरा की छवि से अनुप्राणित अध्यात्म जैन प्रस्थान का मूलभूत सिद्धांत है। भावों के शास्त्रीय निरूपण हेतु आचार्यश्री ने विरासत वंचित उच्चवर्ग की बिरादरी से बाहर चरित्र नायक के जीवन की संभावनाओं की तलाश की है। यहाँ पात्रों का चयन वैचारिक आलोक में बिखरे जीवन को निकट से देखने परखने की चेष्टा है। आध्यात्मिक मूल्यों पर केन्द्रित संस्कृति को वरीयता देते हुए सत्य के प्रामाणिक मर्म का उद्घाटन है। संवादों की वैचारिक दृष्टि जिस अक्षय ऊर्जा से सम्पन्न है उसकी प्रभा से प्रखर तथा समर्थ व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। जीवन के जय पराजय के दास्तान की ढेर सारी अंतकर्थाओं में भोग से योग की गहराई है।

मूकमाटी मीमांसा भाग 3 में समीक्षकों आचार्यश्री के व्यक्तित्व का निरूपण करते हुए उसके अनुभूति तथा चिन्तन की मार्मिक वास्तविकताओं में व्यापक भावबोध के भीतर जिन भक्ति, आस्था, त्याग और साधना से प्राप्त विराट आत्म शक्ति की शास्त्रीय व्याख्या करते हैं। कवि की अनभिष्ट पथ पर चलते हुए चेतन को सावधान करती प्रेम भरी फटकार से अभिभूत हो जाते हैं।

डॉ. शरेशचन्द्र चुलकीमठ का कथन है कि इसमें (मूकमाटी)निहित बिम्ब प्रधान प्रतीक योजना शब्द प्रयोग चिन्तन पद्धति कबीर की याद दिलाती है। तात्पर्य है कि विद्वानों ने मूकमाटी की जो मीमांसा करते हुए उस शब्दावली को पहचानने तथा प्रकट करने की चेष्टा की है। जो नई भाव धाराओं, विचार सारणियों से साहित्यिक इतिहास के विवेचन के नये पृष्ठ जोड़ सके हैं। वे कृतियां सम्पूर्ण मानवीय चेतना के अग्रिम विकास की कड़ी बन सकी हैं। सर्जनात्मक स्वरूप में नए प्रश्न और प्रचलित आदर्शों को भी चुनौती देने में सक्षम हैं। वाह्याचारों, धार्मिक आडम्बरों और अंधविश्वासों की शक्ति झूठलाते हुए वास्तविक गतिशील चरित्र सृष्टि कर सके हैं आदि से मूकमाटी की तुलना अत्यन्त गम्भीर है। डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र का कथन है हिन्दी के तीन अमर महाकाव्यों पद्मावत, रामचरित मानस और कामायनी की उज्जवल परम्परा में एक महाकाव्य और आ जुड़ा है और वह है **'मूकमाटी'**।

'मूकमाटी' की समीक्षा करते हुए अनेक

विद्वानों ने रचनाकार के साधक मन तथा राष्ट्रीय चेतना से स्निथ जीवन मूल्यों एवं भीतरी द्वंद्वों आदि को पकड़ने क़ा सफल प्रयास किया है। कथानक और पात्रों तथा संवादों के सरल रूपात्मक विन्यास उसमें रागात्मक चेतना आदि के माध्यम से जिस प्रायोजित लक्ष्य और गंतव्य का रेखांकन है, उससे आनन्द भी उच्चतम अवस्था में स्थित समस्टि मूलक राग विस्तार का अनूठा निदर्शन है। समीक्षकों ने ऐसे स्थलों को मानविकी पारिभाषिक कोश की अक्षय निधि कहा है।

आचार्यश्री के रचनात्मक मूल्यों में कला साहित्य और संस्कृति से जुड़ी अनेक परिकल्पनाओं क़ा योग है। समीक्षकों ने इन्हें पर्याप्त निकटता से देखा है और माना है कि मानव कल्याण के केन्द्र पर निर्मित समाज की संकल्पना एवं संरचना के सूत्र की मर्मस्पर्शी अनुगूंज साहित्य के जिस परिदृश्य का साक्षात्कार कराती है उनमें कबीर के सामाजिक संघर्ष और प्रेमचन्द की रचनात्मक दिशा की सहज अनुभूति है। रचनाकार स्वयं को केन्द्र में न रखकर नेपथ्य से भी अपनी वाग्विदग्धता एवं उसके गूढ़ अर्थो से मानव को सामर्थ्यवान बनाने की चेष्टा करता है आचार्यश्री तो माटी के मूकभाव को उसकी समग्रता में पकड़ते हैं। मानते है कि मिट्टी का जीवन और जगत् के संघर्ष से सीधा साक्षात्कार होता है। उनकी मूकसंवेदना और संघर्ष में युग का सारा प्रतिरोध सामाहित है। वह अपनी जमीर को पहचानती है। उसका वजूद उसकी आजादी में ही है। इसीलिए मंगल गीत में भी वह क्रांति का आह्वान करती है। वर्तमान सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक सोच की गहरी जाँच पड़ताल के उपरान्त माटी में निस्संगता का भाव विकसित तथा प्रकट होता है वह उसकी निष्ठुरता नहीं दारूण स्थितियों से विद्रोह है। आलोच्य कृति के आलेख जितने गहरे शाश्वत एवं जटिल जीवनानुभव के चित्र प्रस्तुत करते हैं उनमें लगभग आचार्यश्री कृत मूकमाटी के कथ्य को समेटने एवं उसे उभारने की कोशिश है। संकलित आलेखों में समीक्षक इतना गहरे उतरे हैं कि सचमुच उन्हें पढ़ने से ऐसा लगता हैं कि इन समीक्षकों के बहाने मूकमाटी को पुनः पुनः देखने और अनुभूत करने का अवसर मिल रहा है। यहाँ महत्वपूर्ण यह भी है कि समीक्षकों के मन में मूकमाटी को लेकर पहले से एक अर्थ या कथ्य निश्चित नहीं है और वह उसी के सांचे में उसकी प्रस्तुति पर विचार विमर्श करते हैं। यह मात्र संयोग नहीं है कि मूकमाटी मीमांसा तीन भागों में प्रस्तुत है इनमें निहित महत्वपूर्ण अर्थ है जो कृति की समीक्षा को अनेक कोणों से देखते हुए सामने आती है इसलिए लिखित आलेखों में जितना वैविध्य है, उतने ही वे गहरे, शाश्वत एवं नए भावबोध से हिन्दी जगत को समृद्ध करते हैं। क्रांतिकारी पहल में आचार्यश्री दीन-हीन जनों का पक्ष लेते हुए उनके शोषण का चित्रण करते हैं।

माटी की गुरूता, सहनशीलता,भोलेपन एवं अबोधता आदि का निरूपण प्रामाणिक और सामान्य से लेकर उत्कृष्ट एवं अति उत्कृष्ट रूप ने दार्शनिक तथा शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में है। समीक्षकों ने आचार्यश्री की रचनाधर्मिता को प्रतिबिम्बित करते हुए आलोचनात्मक विवेक के साथ मूकमाटी के विविधि पक्षों को उद्‌घाटित किया है। तीनों भागों में आचार्यश्री के रचना संसार व सोच विचार आदि को रेखांकित करते हुए डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ने महत्वपूर्ण भूमिका लिखी है। भूमिका में डॉ. त्रिपाठी ने माना है कि मूकमाटी में साधक के जीवन के बहुविध पक्ष मिलते हैं। मानो जीवन और साधना का समूचा विस्तार इनकी कविता में सिमट आया है। कवि ने शब्दों के चयन से लेकर उसके शास्त्रीय सौन्दर्य और चाक्षुष बिम्बों आदि तत्त्वों के वैशिष्टय को ध्यान में रखते हुए काव्य में अध्यात्म, दर्शन और आचरण से जुड़ी सूक्ष्मताओं का समाहार करते हुए संवाद शैली में विभिन्न और विविध स्तरों पर हमें सोचने-समझने एवं व्याख्या करने की छूट दी है। वार्तालाप और उसके साथ-साथ जन्म लेने वाली आध्यात्मिक चेतना का समीक्षकों में व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस माध्यम से कवि विशेष ही नहीं आम पाठकों के पास भी पहुंचना चाहते हैं। रचनाकार ने अपने लिए जो लक्ष्य स्थिर किये थे। साधना और तपश्चार्य से जिस ममत्व का विस्तार कवि में हुआ उसकी परिधि में माटी कंकड़ से लेकर तोता पशु पक्षी तक आते गए गरीब और शोषित वर्गों के प्रति प्रतिबद्धता उनकी भक्ति का पर्याय और साधना शास्त्रीय चेतना का एक अध्याय है। आलोचकों ने आचार्यश्री की रचनात्मकता में सात्विकता से उपजी क्रांति धर्मिता एवं चिन्तन मनन आदि में प्रतिबिम्बत बाह्य यथार्थ को लक्ष्य करते हुए रेखांकित किया है कि किस तरह उनकी कविता अनेक सूक्ष्मताओं और विराटताओं का विविध और अद्‌भुत प्रकारों से सामना करती रही है। मानवीय चेतना एवं तप तथा साधना कवि की कल्पना में एक अनोखे ढंग से एकाकार होकर सागर में उठती गिरती लहरों की भांति प्रवाह में समाए जीवन के रहस्य एवं सत्य उद् घाटित करते हैं। सागर की लहरों का पता देती प्रेम और साधना की अटूट श्रृंखला का पथ दर्शाती मूकमाटी मीमांसा भाग-3 की समीक्षाएं वीतरागी संत की निपट सूनी रेत पर बने शब्द चित्र की अभिराम झांकी को दर्शाती है।

समीक्षकों ने मूकमाटी मीमांसा का निरूपण विशेष मनोयोग से किया है। आचार्यश्री की अन्य रचनाएं जैसे, तोता क्यों रोता, नर्मदा का नरम कंकर आदि से भी समीक्षकों ने कविता की पंक्तियां उठा कर नए-नए अर्थ संधान, नए रूप विधान आदि उद्‌घाटित किया है। इन रचनाओं में रोजमर्रा की घटनाएं भी दार्शनिक महत्व ग्रहण कर लेती हैं। यह कविताएं वास्तव में जिनधर्म की तात्विक

चेतना पर आधारित हैं। उसी की अनुभूति इनमें हैं। इस प्रकार की कविताओं में अपने परिवेश का अपने आसपास खिलते ढलते जीवन का सहज-सरल चित्रण तो है ही कविता के नए मोड पर नए अध्याय है आत्मालोचन परक हैं। धर्म और दर्शन की सप्राणता इन कविताओं का मूल स्वर है। समीक्षकों ने इन रचनाओं का रेखांकन करते हुए स्वीकार किया है कि निर्धारित और निश्चित अवधारणाएं भी यहां जितनी खुली उन्मुक्त एवं बहुकोणीय हैं उतनी भी सामाजिक सरोकार से भरपूर हैं। समाज और समय का तापमान विडम्बना, विद्रूपता, जुल्मों आदि के घटना प्रसंगों को धर्म एवं दर्शन की चेतना में रूपांतरित करना एक बहुत बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए संतत्व की संवेदना के अनुरूप जीवन की गति, नियति, विकृति आदि की न केवल सैद्धांतिक चर्चा की वरन पात्रों के मन के भीतर उतरकर रखते सफर का हरेक कोने से मुआयना भी किया है। खेत, खलियान, घर, आंगन, परिंदों के सफल आदि भी आचार्यश्री की आत्मीयता की महक में शामिल है। इस प्रकार मूकमाटी आचार्यश्री की काव्य यात्रा का प्रतिनिधि महाकाव्य है जिसमें निश्चय ही शास्त्रीय परम्परा की गौरवशाली कविता अपनी पूरी दिव्यता के साथ मानवीय बोध को प्रकट करती है। आचार्यश्री ''जिन साधना'' की प्रतिबद्धताओं के बावजूद समाज के व्यापकतर सरोकारों को गहरे बोध के साथ व्यक्त करते हैं। उनकी रचनाओं में धर्म और दर्शन की धूप छांव की दीप्ति है तो प्रेम सौन्दर्य एवं हास्य व्यंग्य की प्रतिध्वनियों की दस्तक है। लोकभाषा के शब्दों-बिम्बों के गहरे आकर्षण और माटी से फूटती सोंधी गंध में रची बसी करुणा एवं वात्सल्य की मिठास से परिपूर्ण कविता से पाठक तथा समीक्षक का रिश्ता सहज ही जुड़ जाता है। नए युग की चुनौतियों का सामना करने में आचार्यश्री की रचनाएं सक्षम तो हैं ही उनमें एक नई ताजगी है जो बारीक से बारीक संवेदना को रागात्मक सत्य उद्‌घाटित कर जीवन की विडम्बरनाओं में ताकत के साथ हस्तक्षेप करती हैं। यहां यह कहने में कोई संकोच नहीं है। कि पारखियों ने मूकमाटी मीमांसा के तीन खण्डों में आचार्यश्री की दार्शनिक चेतना एवं भाव संपदा को गहराई से निरखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

डॉ. प्रभाकर माचवे के प्रश्न ''**हम जो नहीं जानते उसे जानने के मददगार हैं और बहुत कुछ जो अन्जाना रह जाएगा उसके पुनराविष्कार के सूत्र की तलाश सुनिश्चित हो सकेगी।**'' इतना बड़ा जो 'अभिधान राजेन्द्र कोष' उन्होंने ने बनाया वो भी रात को स्याही को सुखाकर रख देते थे। दिन दिन में स्मृति से लिखते थे यह 'मूकमाटी' भी बहुत अद्‌भुत काव्य है क्योंकि और किसी जैन मुनि ने ऐसा महाकाव्य लिखा हो ध्यान में

नहीं आता इस तरह के अमूर्त विषय पर किसी ने कार्य किया हो ऐसा भी ध्यान में नहीं आता । यह बहुत आधुनिक है मेरे मत से क्योंकि ये विज्ञान के लिए भी प्रेरित करता है। आज विज्ञान की जो खिड़कियाँ खुल रही हैं, विभिन्न विद्वान लिख रहे हैं डॉन्स ऑफ शिवा आदि विदेशों में जो लोग हैं वो इसी तरफ आ रहे हैं। इसी भारतीय मनीषा का जो चरम बिन्दु है। सारे भौतिकवादी चिन्तन सारे द्वान्द्वात्मक चिन्तन सीमित हो गए हैं वे भी धीरे-धीरे वहीं पर आ रहे हैं, उसी बिन्दु पर। उसकी ओर ही संकेत करता है ये ग्रन्थ। इसीलिए मैं इसको **'फ्यूचर पोयट्री यानि भविष्यवादी काव्य'** जैसा कि अरविन्द ने कहा है इसे बहुत अच्छा दिग्दर्शक मानता हूँ अन्य कवियों के लिए भी ये बहुत प्रेरणादायक ग्रन्थ है।''

इस प्रकार मूकमाटी-मीमांसा के तीन खण्डों मे ख्याति प्राप्त साहित्यकारों और विद्वानों के मध्य महत्वपूर्ण विचार-विमर्श हुआ है । भूमिका लेखन आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने किया है। आलोच्य पुस्तक इशारा करती है कि डॉ. प्रभाकर माचवे द्वारा शब्द से शब्दातीत तक जाने की यात्रा में सहभागिता में प्रस्तुत प्रश्न उत्तर बेहद उत्तेजक, ठोस एवं गहरे चिन्तन से परिपूर्ण है। प्रश्नों में शब्दों का शिल्प यायावर प्रकृति के कारण अधिक प्रभावशाली और आदर्श है। प्रश्नों की नवीन विचारधाराएँ, चिन्तन, नानाविध स्थितियाँ आदि के अतिरिक्त सामाजिक सरोकार वैचारिक विकास क्रम आदि का समाहार है जो आचार्यश्री की रचनाधर्मिता को प्रकट करते हैं । अद्यतन शोध द्वारा प्राप्त सामग्री का संकेत रूप में प्रस्तुत किया गया है। ताकि कलेवर को अनावश्यक विस्तार बचाते हुए इस रिक्तांश को भी पूरा किया जा सके । अन्त में समीक्षकों का संक्षिप्त पता है। कई-जाने-माने लेखकों द्वारा व्यक्तित्व परिचायक कृतियों को शामिल किया गया है।

सम्पादक मण्डल में डॉ. आर.डी. चौरसिया, डॉ. शकुन्तला चौरसिया, डॉ. सरला मिश्रा और प्रबन्ध सम्पादक के रूप में सुरेश सरल (जबलपुर), संतोष सिंघई (दमोह) नरेश दिवाकर (सिवनी), सुभाष खमरिया (सागर) के नाम उल्लेखनीय हैं। तीन खण्डों में मूकमाटी-मीमांसा का प्रकाशन एक चुनौती थी। इस स्वीकार तथ्य के साथ भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्ट्रीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड़, नई दिल्ली-110003 ने प्रभूत साहित्य सम्पदा को अधिकाधिक पाठकों तक पहुँचाया है। भारतीय ज्ञान पीठ देश का एक कद्दावर प्रकाशन संस्थान है। भारतीय ज्ञानपीठ को इस बात के लिए बधाई दी जानी चाहिए कि उन्होंने प्रस्तुत तीन खण्डों में आचार्यश्री के रचना संसार को बहुत ही रोचक रूप में प्रस्तुत किया है । ये तीनों अंक एक संदर्भ ग्रन्थ के रूप में जितने उन्मुक्त और ठोस रूप में निष्कर्ष सामने रखते हैं। उससे इनमें संग्रहित आलेख महज नाम-परिणमन के अंक नहीं,

रचनात्मक पुरुषार्थ के मापदण्ड बन जाते हैं। इस प्रकार मूकमाटी मीमांसा में संग्रहित आलेखों में सौन्दर्य को समग्रता से प्रस्तुत करने का प्रयास है। वह सौन्दर्य जो वस्तुतः प्रबंधकार की प्रतिमा है। कवि की चेतना का उज्ज्वल वरदान और दर्शन की पृष्ठभूमि है।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का अक्षय सौन्दर्य एवं रचनात्मक पुण्य, अपनी पूरी व्याप्ति के साथ कमल के पत्ते पर पड़ी पानी की बूँद की भाँति दर्शन की व्याख्या को अनावृत्त करता है। दिनकर ने प्रसाद की कामायनी के लज्जा सर्ग को सौन्दर्य के समाधि की कविता कहा है। आचार्यश्री की रचनाओं में भी वही सहज चलती जिन्दगी की महक है जो कोमल मिट्टी के भीतर छिपकर इंसान के ईमान को गढ़ती है। समीक्षकों ने माना है कि जीवन को गढ़ती, सुवासित करती मान-मद को तोड़ती एक-एक पंक्ति की व्याख्या, तुलसी, कबीर और रवीन्द्र से जोड़ती है। मानविकी कोशली अक्षयनिधि को अधिक समृद्ध करती है। ■

धर्मयुग

यह युग
अप्रत्याशित
आगे बढ़ चुका है बहुत दूर....
और !
धर्म वह
बहुत..... दूर.....
पीछे रह चुका है
अन्यथा !
पत्रिका नाम
''धर्मयुग''
क्यों पड़ा यह ?

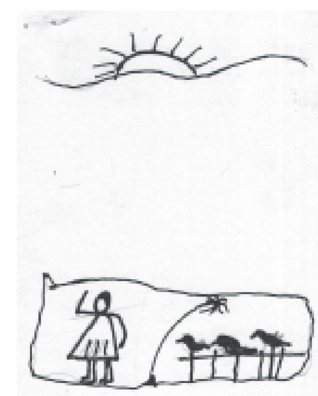

• प. पू. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज •

क्या है निरंजन शतक में

• ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर •

आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने अपने संस्कृत शतक की परम्परा में एक निरंजन शतक का भी सृजन किया है। इस शतक में अंकत शून्य शुद्धात्म तत्त्व का वर्णन मुख्यता से किया गया है। इसमें प्रायः कवि ने अपने आपको लक्ष्य बनाकर संबोधित किया है, क्योंकि एक आत्मानुभूति युक्त एक आदर्श यथार्थ द्वारा पर कल्याण के साथ साथ निज कल्याण की प्राथमिकता सदैव लक्ष्य निष्ठ होती है। इस शतक के रचियता यथार्थ परमेष्ठी इस युग के आदर्श आचार्य हैं। उन्होंने जिनेश्वर अथवा सिद्ध परमेष्ठी को लक्ष्य इसलिये किया है जिससे भव भ्रमण नष्ट हो सके।

निजरुचा स्फुरते भवतेऽयते गुणाणं गणनातिगंकयते ।
विदितविश्व ! विदा विजितायते। ननु नमस्तत एष जिनायते ।।

''स्वामी अनन्त गुण-धाम बने हुये हो,
शोभायमान निज की द्युति से हुए हो।
मृत्युंजयी सकल विज्ञ विभावनाशी,
वन्दू तुम्हें , जिन बनू सकलाव भाशी (षी)''

इस शतक में निज व पर पद दोनों की समीक्षा करते हुए आचार्यश्री ने कहा है कि संसार के प्रत्येक पद विपत्ति के कारण होते हैं और एक निज पद विपत्ति से रहित होता है। आचार्यश्री का लक्ष्य निज निरंजन स्वरूप को करता रहा है इसलिये उन्होंने भगवान की भक्ति को निमित्त बनाकर अपने अन्दर के आनंद को प्राप्त करने के लिये इस शतक का सम्पूर्ण लेखन किया है।

प्रस्तुत शतक में द्रुत विलंबित छन्द एक सौ छन्द संस्कृत भाषा में अनुप्रास और अलंकार सहित रखे हैं। इन छन्दों में लयबद्धता स्वभाविक है। भाषा की सरलता और सुबोधता का ध्यान तो रखा गया है किन्तु साहित्यिक शैली में होने के कारण काठिन्य निवारण नहीं हो पाया है अतः आचार्यश्री ने हिन्दी अनुवाद करके 100 वसन्त तिलका छन्दों की रचना की है। इस ग्रन्थ की रचना संस्कृत भाषा में 23 मई 1977 में की गयी है एवं हिन्दी अनुवाद सिद्ध क्षेत्र कुंडलपुर में बैठकर 18 जून 1977 में सम्पन्न किया है।

ग्रन्थ का विषय परिचय - मंगलाचरण से प्रारम्भ करके मृत्युंजयी सर्वज्ञ और सर्वज्ञता की महिमा उत्तम निज पद की सिद्धि, पूजा का लक्ष्य मोक्ष, नयों का वर्णन, सर्वज्ञ के विषयगत पदार्थों का वर्णन, द्रव्य, गुणों पर्यायों का वर्णन, जिनेन्द्र भगवान की महिमा बताते हुए भगवान, कर्म अप्रभावी, अवर्णनीय, मोहांधकार नाशक, पारस व सोना जैसा बताया है। प्रभु के

ध्यानाग्नि का स्वरूप शान्तिप्रदायक अनन्त ज्ञानयुक्त, सर्वज्ञ, वीतरागता, हितोपदेश युक्त परमात्मा को रागी से वैरागी बनाने वाला बताया है। पापमुक्त परमात्मा पापी के लिये शरण होते हैं और प्रभु आस्था, आत्मानुराग का फल तथा अहिंसा को सुख का साधन, हिंसा को दुःख साधन बतलाया है। श्रद्धा भक्ति का फल बताते हुए गुणधारी के विनय की प्रेरणा दी है। छत्र जैसे प्रातिहार्यो की महिमा विज्ञानरमणी की शोभा बताते हुए प्रभु को सर्वज्ञ, निःसंग व अनंग बताया है। विरोधाभास अलंकार प्रस्तुत करते हुए प्रभु को शीतल सूरज कहा है। साधु के स्तुत्य परमात्मा होते हैं। आत्मलीनता से प्रभु परमात्मा की प्राप्ति होती है। देवाधिदेव मेरी बुद्धि में हर्ष पैदा करते हैं। संसार के नाशक परमात्मा शम्भू व स्वयंभू होते हैं। परमात्मा को नमस्कार करने से पाप का नाश होता है। मनरूपी सरोवर में प्रभु के नख की शोभा का वर्णन किया गया है तथा प्रभु के चरण माँ की गोद के समान शरण होते हैं।

भगवान वर्धमान की विशेषताएँ गिनाते हुए भगवान के मोक्षमार्ग को सुदूर व सुंदर बताया है प्रभु को अपूर्व रवि बताते हुए उनसे बोधिकृपा की याचना की है और कहा है हे प्रभु, तुम वैरागी, मैं सरागी हूँ। आप सहजवृत्ति वाले हैं और मैं विकृत वृत्ति वाला हूँ। आप स्वसमय के स्वाद है। हे प्रभो आपका ज्ञान दर्पणवत् है। सम्यक्त्व के दाता और आप समुद्रवत् है जिससे मणि याचना से नहीं, खोजने से मिलती है। भगवान को दिगम्बर रूप बताया है पहले द्रव्यलिंग व फिर भावलिंग की प्रेरणा दी है।

आगे आचार्यश्री ने प्रस्तुत ग्रन्थ में कहा है कि मृत्यु व भय ने सबको हराया है इसलिए सभी ने परिग्रह को धारण किया है, आपका भक्त मैं अलख व ग्रन्थ त्यागी हूँ। मद त्यागने से अतीन्द्रिय सुख मिलता है आप निज में गंभीर है संयम व शील की सार्थकता श्रम से होती है। शुद्धातम रुचि को मोक्ष की साधना बताते हुए प्रभु के चरण स्पर्श करने से अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है व निजानुभव समाधि द्वारा भव किनारा मिलता है। आपका शासन मेरा पाथेय व पंथ है। भवसागर सुखाने के लिए आप सूर्य हैं स्याद्वाद मतके धारी भगवान स्तुति के सरोवर और स्तुति करते समय स्तुति अमृत सागर में पाप की विषबिन्दु अप्रभावी होती हैं। मुझे आपकी स्तुति का सहारा है। मिथ्यादृष्टि को आपके वचन रुचिकर नहीं है आपकी स्तुति से मैं कवि के आगे निजानुभवी हो गया हूँ आपको श्रद्धा से जानने के कारण मैं शुद्धातम को पहचानने लगा हूँ। समुद्र के पंछी के समान प्रभु आपका ही सहारा है। स्तुति की किरणावली काम रूपी शत्रु को नष्ट करती है। अंधे को दर्पण कोई कार्यकारी नहीं होता इसी तरह से आपमें अरुचि रखने वाला कोई कार्यकारी नहीं होता है। जिनवाणी स्वाद्य पेय जल की सरिता है इसमें मिथ्यात्व विष कार्यकारी नहीं होता है। जिनेन्द्र भगवान को चन्द्रमा, झरना बताया है। निदान से पूजा करने वाले को कुबुद्धि कहा है। इस तरह से निरंजन स्वरूप की निरंजन शतक में विविध प्रकार से आलौकिक आराधना की गई है। ■

आचार्य विद्यासागर महाराज और उनका भावना शतकम्

• डॉ. शिखरचन्द जैन, दिल्ली •

प्रातः स्मरणीय श्रद्धेय परम पूज्य कुशाग्रबुद्धि, बहुभाषाधिकारी (रसनाग्रनर्तकी विद्या) आचार्य विद्यासागर (जन्म -10 अक्टूबर 1946, चिक्कोड़ी (बेलगाँव) कर्नाटक) विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। उनकी मानसिक, शारीरिक, दुरूह तपस्या बहुल यह ग्रन्थ हृदय में सहज रूप में रचित है। जहाँ पर कि हृदय के तन्तुओं से सरस्वती की लहरें कल्लोल करती हुई श्लोक रूप में प्रस्फुटित होती है। (spontaneous flow) आधुनिक वैज्ञानिक युग की प्रवृत्तियां, जीवन को नवीन रूप से परिणत कर रही हैं । इन मनुष्यों में इन्द्रिय सुख की लालसा वायुयान की गति को भी परास्त कर रही है। अखिल विश्व संक्षिप्त प्रतीत होता है। इच्छा रूपी घोड़े पर बैठा हुआ मनुष्य पंचेन्द्रिय सुख की लालसा में लिप्त है, किन्तु इसके साथ में संयम रूपी चाबी नहीं है, इसलिए गिरने पर वह चकनाचूर हो जाएगा। इसकी तनिक भी भनक उसके हृदय में नहीं है। चारों ओर अन्धकार व्याप्त है। कैसा आश्चर्य। चकाचौंध के मध्य अंधेरा, सुविधाओं में विनाश और आपस में कलह। परन्तु यहाँ पर एक ऐसा व्यक्ति जिसने बाल्यकाल से ही सांसारिक वैभव से मुँह मोड़ लिया और इन्द्रियजन्य सुख को तिलांजलि दे दी एवं मानव मात्र के कल्याण के लिए आत्मालोचन किया तथा आत्मध्यान, आत्मचिंतन में तल्लीन हो गया। विषयभोगों को ऐसा ललकारा कि वे मुँह छिपाकर भाग गए। ऐसे महर्षि प्रणीत साहित्य का समाज पर गहरा प्रभाव अवश्य पड़ेगा क्योंकि ये शब्द तपस्या-निसृत हैं।

पूज्य आचार्य विद्यासागर रचित ग्रन्थ-चिन्तन साध्य है। उन्होंने भव्य श्रावक-श्राविकाओं को आशीर्वाद रूप में अन्य ग्रन्थ दिए हैं जो जिस प्रकार ग्रहण करना चाहे उस ज्ञानपुंज राशि को प्राप्त कर सकता है। साहित्य की कसौटी पर आप महान् दार्शनिक में प्रकट हुए हैं। ज्ञान का अक्षय भण्डार आप स्वयं हैं। अनेक ग्रन्थों का प्रणयन, अनुवाद इत्यादि करके सरस्वती देवी का आशीर्वाद प्राप्त किया है। जन्म से कन्नड़ भाषी होते हुए भी आचार्यजी ने प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का गूढ़ अध्ययन किया। आपने समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, वारसाणुवेक्खा, अष्टपाहुड़ आदि प्रकृत भाषा के महान् ग्रन्थों का पद्यानुवाद कर जिज्ञासुओं का मनन करने में महान सहयोग दिया है। पद्यानुवाद करने में उन्होंने ग्रन्थ को भाव को पूर्ण रूप से समझा है एवं मूलभूत भावना को निगूदित किया है। स्वामी समन्तभद्र आचार्य के 'स्वयंभूस्तोत्र' का सुंदर हिन्दी पद्यानुवाद 'समन्तभद्रता की भद्रता' अनोखी कृति है। नाम भी आचार्यजी ने बहुत ही भावपूर्ण रखा है। रत्नकरण्ड श्रावकाचार, जो कि गृहस्थों के लिए एक आचार-संहिता की आधारशिला है उसको रयणमंजूषा ग्रन्थ में अनुदित किया है। ताकि श्रावक-श्राविका किसी भ्रष्ट पथ में न जायें एवं चरणीय मार्ग का आचरण करें। आचार्य

पूज्यपाद रचित ग्रन्थ, इष्टोपदेश का दो बार पद्यानुवाद कर आध्यात्मिक सुप्तावस्था को जागृत करने में सिद्धहस्थ हुए हैं। गुणभद्राचार्य की कृति आत्मानुशासन का गुणोदय के नाम से हुआ। अनुवाद आपके अलौकिक ज्ञान प्रतिभा का परिचायक है। आचार्य अमृतचन्द्र के 'समयसार-कलश' का अनुवाद 'निजामृतपान' (कलशा-गीत) अपने आप में काव्य श्रृंखला का अनूठा ग्रन्थ है। भाषा, भाव एवं संयोजन अपने आप में अनुपम है। 'समणसुत्तं' ग्रन्थ का 'जैनगीता' के नाम से अनुवाद श्रावकों को भगवान् महावीर के सदुपदेशों को ग्रहण करने में अत्यन्त सहायक एवं सहज रूप में प्राप्य बना देता है।

महाराज श्री के अन्य अनुवादों में 'एकीभाव स्तोत्र', 'कल्याणमन्दिर स्तोत्र', 'गोम्मटेस थुदि', 'आप्तमीमांसा', 'पात्रकेसरी स्तोत्र', 'नन्दीश्वर भक्ति', 'सिद्धभक्ति', 'आचार्य भक्ति', 'चारित्र भक्ति', 'योगिभक्ति', 'निर्वाण भक्ति', 'चैत्यभक्ति', 'पंचमहागुरुभक्ति', 'शांति भक्ति' एवं स्वरूपसंबोधन इत्यादि मनुष्यों के हृदय में सद् भक्ति जागृत करते हैं । इनके स्तोत्रों की काव्यकला के गायन रूप में प्रस्तुत होने पर मनुष्य आत्मपर्यालोचन में लीन होकर आत्मा के रूप में आत्मसात् कर अपना स्वरूप जानने में तत्पर होता है।

आपके साहित्य में दार्शनिक पुट, धार्मिक चेतना, नैतिक जागरण, मानवीय गुण एवं गम्भीर चिन्तन परिलक्षित होता है। इतने ग्रन्थों का विशाल अध्ययन एवं लेखन किसी अदम्य शक्ति, सरस्वती के वरद पुत्र को ही संभव है। इस शक्ति को दैवीशक्ति कहें या परिश्रम प्राप्त विचक्षणता। धन्य है आचार्यश्री को जिन्होंने अपने विशाल, निरन्तर अध्ययन से सरस्वती के भण्डार को और भी अधिक प्रदीप्त किया है। प्रतीत होता है आचार्यश्री स्वेच्छानुसार लेखनी को स्वरूप देते हैं , अब लेखनी इतनी आज्ञानुसार चलती है और इनकी इच्छा को पूर्ण रूप से अंगीकार करती है। आपके प्रवचन संग्रह भव्य प्राणियों को उद्बोधन करने में अत्यन्त सक्षम हैं। अपने रसमाधुर्य, भाषा-भाव गाम्भीर्य से भाषा जनमानस तक सहज रूप में पहुँचती है। आपके प्रवचन-सार संकलन रूप में समय-समय पर प्रकाशित हुए हैं, उनमें प्रभाव हैं - प्रवचन परिजात, प्रवचन प्रमेय, प्रवचन प्रदीप, प्रवचन सुरभि, प्रवचन पीयूष, प्रवचन पर्व, प्रवचनामृत, प्रवचन पंचामृत, पावन प्रवचन, गुरुवाणी, अंकिचित्कर, सर्वोदय-सार, आत्मानुभूति ही समयसार, आदर्श कौन ? डबडबाती आखें, न धर्मो धार्मिकैर्बिना, तेरा सो एक, जैन दर्शन का हृदय, जयन्ती से परे, कर विवेक से काम, चरण.... आचरण की ओर, सत्य की छाँव में ,व्यामोह की पराकाष्ठा, मूर्त से अमूर्त की ओर, मानसिक सफलता, मर हम... मरहम बनें, भक्त का उपसर्ग, ब्रह्मचर्य... चेतन का भोग, भोग से योग की ओर, धीवर की धी, सिद्धोदयसार, तपोवन देशना, कुण्डलपुर देशना, धर्म-देशना, प्रवचनिका, आदर्शों के आदर्श, समागम एवं विद्यावाणी। इन संग्रहों के पठन-पाठन एवं चिन्तन से मानसिक स्वरूप सहिष्णुता, परोपकार,

करुणा एवं सन्तोष धन से परिप्लावित होता है य़। आत्मरूप को समझता हुआ आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होता है।

'भावना शतकम्' (तीर्थंकर ऐसे बने) लघुकाय रूप में या कहो (खण्डकाव्य रूप में रचित अत्यन्त अर्थगाम्भीर्य पूर्ण है। जिससे गागर में सागर उक्ति चरितार्थ होती है। (सतसइया के दोहरे.....)। शब्दालंकार बाहुल्य यह ग्रन्थ विषय को उपस्थित करने में पूर्ण रूप से सफल है एवं दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र में अनूठा स्थान रखता है। इस काव्य में आचार्यजी ने 84 आर्याछन्द तथा 16 मुरज बन्धों में अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया है। मुरजबन्ध का प्रयोग इस ग्रन्थ में 10,16,22,28,34, 40, 46, 52,58, 64,70,82,88,94 एवं 100 नम्बर के छन्दों में किया है।

चारों गतियों में मनुष्यगति सर्वश्रेष्ठ हैं क्योंकि मनुष्यगति ही निर्वाणप्राप्ति में कारण है। तीर्थंकर प्रकृति का बंध 16 कारणों से मनुष्यगति में ही प्रारम्भ होता है। ये 16 कारण तीर्थंकर नामकर्म के आस्रव के कारण हैं। जो तीर्थ चलाते हैं, तीर्थ का उपदेश देते हैं वे तीर्थंकर होते हैं तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर्मभूमिया मनुष्य उपशम, क्षयोपशम व क्षायिक तीनों ही सम्यक्त्व धारी जीव को केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में होता है और तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध 16 कारण भावाएं भाने से होता है। आचार्य उमास्वामी ने भी तत्त्वार्थसूत्र में इन 16 कारण भावनाओं का वर्णन किया है छटवें अध्याय के चौबीसवें सूत्र में -1. दर्शन विशुद्धि, 2. विनय सम्पन्नता, 3. शील और व्रतों का अतिचार रहित पालन करना, 4. ज्ञान में सतत् उपयोग, 5. सतत् संवेग, 6. शक्ति के अनुसार त्याग, 7. शक्ति के अनुसार तप, 8. साधु समाधि, 9. वैय्यावृत्ति, 10. अरिहंत भक्ति, 11. आचार्य भक्ति, 12. बहुश्रुत भक्ति, 13. प्रवचन भक्ति, 14. आवश्यक क्रियाओं को न छोड़ना, 15. मोक्षमार्ग की प्रभावना, 16 प्रवचन वात्सल्य।

किन्तु आचार्यश्री ने किंचित् नामों में अन्तर करके उन्हीं कारणों को दिये हैं जो समीचीन हैं, परम्परा रूप में निरन्तर उपस्थित रहते हैं 1. निर्मल दृष्टि, 2. विनयावनति, 3. सुशीलता, 4. निरन्तर ज्ञानोपयोग, 5. संवेग, 6. त्यागवृत्ति, 7. सत्तप, 8. साधु समाधि सुधा साधन, 9. वैयावृत्य, 10., अर्हद् भक्ति, 11. आचार्य स्तुति, 12. शिक्षागुरु स्तुति, 13. भगवद् भारती भक्ति, 14. विमलावश्यक, 15. धर्मप्रभावना, 16. प्रवचनवत्सलता।

तीन मूढ़ताओं क़ा त्याग, शंका आदि आठ मूलों से रहित होना, ज्ञान-दर्शन और चारित्र विनय से युक्त होना, अहिंसादि व्रत और उनके रक्षक, क्रोध त्याग आदि शीलों में निर्दोष रूप से प्रवृत्त होना, निरन्तर ज्ञानमय उपयोग होना, संसार-शरीर भोगों से विरक्त होना, शक्ति के अनुसार दान देना, शक्ति के अनुसार उपवास आदि करना, साधुओं की चर्या में सहयोग करना

एवं उनकी रक्षा करना साधु सेवा करना, वीतराग प्रभु के गुणों का ध्यान करना, गुणीजनों के प्रति अनुराग रखना, उनका सम्मान करना इत्यादि ये भावनाएँ हैं जो मनुष्य को परम पद की ओर अग्रसर करती हैं।

आचार्यश्री की शैली अत्यन्त सशक्त, विकसित एवं परिष्कृत है। जिस स्थान पर जैसा भाव या प्रसंग है उसी के अनुसार पदावली का प्रयोग है। मुरजबन्ध जैसा कठिन प्रयोग किया गया है। अलंकार योजना अति प्रभावोत्पादक है। इतने दार्शनिक विषय को उन्होंने भव्य प्राणियों को सुंदर रूप में बताने का प्रयत्न किया है। वर्ण की विलोमशक्ति में आपका अपूर्व अधिकार है। विचक्षण बुद्धि के धनी संसार से विरक्त महान योगी विद्यासागर एक साक्षात् जीवित सरस्वती देवी के वरद पुत्र हैं। दिगम्बरत्व का साक्षात् स्वरूप एवं शास्त्र मर्मज्ञ विद्यासागर आचार्य अनन्त ज्ञान के भण्डार हैं। कृतज्ञता प्रकाशन में पूज्य गुरुवर ज्ञानसागर को ही कारण मानते हैं, उनके ही आशीर्वाद से वे विद्यासागर कहलाते हैं।

श्री ज्ञानसागर कृपा परिपाक एव,यद भावनाशतक काव्य-मद्यारिहन्त।
अध्यास्य सुश्रयमतोऽस्य सुशस्यकस्य, विद्यादिसागरतनुर्लघु ना भवामि ॥101॥

पूज्य ज्ञानसागर जी कृपा से मेरे द्वारा पाप रूप शत्रुओं को नष्ट करने वाला भावना-शतकम् नामक काव्य का प्रणयन हुआ। अतः अतिशय प्रशंसनीय आत्मा वाले गुरु का आश्रय प्राप्त करके मैं एक साधारण मनुष्य विद्यासागर बन गया हूँ।

महर्षि के महान विचार सांसारिक प्राणियों के लिए प्रेरणाप्रदायक हैं कि कृतज्ञ बनो, कृतघ्न नहीं। हे महान् गुरु ज्ञानसागर ! आप मुझे दर्शन दें-

रतिरागविरक्तो ऽसि सद् गुरो ! ज्ञानसागर।
रत्नाकराय दोषेशो दर्शन देहि शङ्कर ॥3-मंगलकामना।

महान योगी केवल समाधिलीन ही नहीं रहते। वे समस्त विश्व के कल्याण की सर्वदा शुभकामना करते हैं। उनका आदर्श चिन्तन हमारे देश के लिए सर्वदैवं उन्नति कर है -

भारतः सर्वदेशेषु भातु भेषु शशिप्रभा।
वनेऽप्यत्र सन्तः सन्ति मृगेन्दाः विभया इव ॥5-मंगलकामना।

उनकी राष्ट्र के प्रति महति मंगलकामना है कि भारत वर्ष सब देशों में उस तरह सुशोभित हो जिस तरह नक्षत्रों में चन्द्रमा की प्रभा। जिस प्रकार वन में सिंह निर्भय रहते हैं उसी प्रकार इस देश में सत्पुरुष वन में भी निर्भय रहें।

तले क्षितेर्जनाःसर्वे सुखिनः सन्तु सौगात।
कं भजन्तु सदैवैते यान्तु कदापि ह्यकम् ॥7।-मंगल कामना

हे भगवान् ! पृथ्वीतल पर सब मनुष्य सुखी हो, ये सदा ही सुख को प्राप्त हों, कभी भी दुख को प्राप्त न हो, ऐसी मेरी भावना है। कवि ने समस्त विश्व के प्रति ऐसी मंगलकामना की है।

राष्ट्र सन्त आचार्य विद्यासागर का परम सन्देश है - **'क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम'** एवं कषायों को क्षीण करना, मानव मात्र के प्रति समर्पित होना- इन सदगुणों का पालन करते हुए अपने लक्ष्य मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होना ही मनुष्य जन्म को सफल करता है। महान् साहित्यकार अपनी लेखन त्रुटियों के प्रति विनयावनत हैं-

क्षायोपशमिक ज्ञानात्, स्खलनमत्र भावतः ।
विज्ञैरतः समाशोध्य, पठितव्यं सुखप्रदम ।। 8-मंगल कामना ।।

आचार्यप्रवर कवि ही नहीं, अपितु उच्चकोटि के दार्शनिक भी हैं। कविजनोचित विदग्धता के साथ-साथ उच्चकोटि की विद्वता एवं विश्व के प्रति, मंगलमय जीवन के प्रति भी उनका सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित है। **'भावनाशतकम्'** तत्त्वज्ञान समाहित ग्रन्थ है। इसका प्रधान आधार तीर्थंकर प्रकृति की कारणभूत सोलह भावनाओं (दर्शनविशुद्धि इत्यादि) का वर्णन है। अतः इसका वाचन परायण करना प्रत्येक श्रावक-श्राविका का अनन्य कर्त्तव्य है ताकि मोक्षमार्ग को समझ सकें एवं उपर्युक्त भावनाओं का चिन्तन करके आत्मकल्याण कर सकें।

अन्त में विनयावनत विद्यासागर आचार्य उस स्थान को भी शत-शत वन्दन कर कृतज्ञता प्रकाशन करते हैं जहां की पवित्र भूमि पर इस महान ग्रन्थ की रचना पूर्ण हुई। ■

रंगीन व्यंग

बालक और पालक
दो दर्शक हैं
हरित-भरित
मनहर परिसर हैं
सरवर तट हैं
श्वास-श्वास पर
तरंग का
प्रवास चल रहा है
अंतरंग गा रहा है
तरंग-रंग
भा रहा है

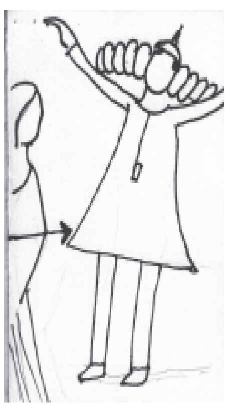

तभी तो
बालक का प्रतिपल
प्रयास चल रहा है
बहिरंग जा रहा है
तरंग पकड़ने
और निस्संग तट में
फेन का बहाना है
हास चल रहा है ?
या उपहास चल रहा हैं ?
बालक पर क्या ?पालक पर
पता नहीं किस पर

• प. पू. आचार्यश्री विद्यासागरजी •

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जून 2017
ये पानी की धारा

प्रथम -

ऊपर से नीचे गिरे, आगे बढ़ती जाय
सतत् गति इसकी रहे, सागर में मिल जाये
पत्थव फोड़े काट कर, पर्वत से नहीं हार
रुके नहीं आगे बढ़े, ये पानी की धार

-श्रीमती निकीता जैन, गुना

द्वितीय -

मन उत्साह भरे अविरल
मेटों घोर निराशा
नर्तन करती आगे बढ़ती
ये पानी की धारा

-श्रीमती रूचि जैन, सागर

तृतीय-

गति प्रगति तक ले जाती है
और सिखाती आगे बढ़ना
मुश्किल कितनी भी आ जाये
कभी नहीं तुम पीछे हटना
घबड़ाया जो देख आपदा
वह ही सबसे हारा
जीतो मुश्किल धीरज रख कर
कहती ये पानी की धारा

- श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
मई 2017

प्रथम : श्रीमती रजनी सेठ, सागर (म.प्र.)
द्वितीय : सरिता ललितकुमार जैन, नागपुर (महा.)
तृतीय : शांतिदेवी पाटनी, सदर नागपुर (महा.)

वर्ग पहेली क्र. 217
मई 2017 के विजेता

प्रथम : श्री वीरेन्द्र जैन, इन्दौर (म.प्र.)
द्वितीय : श्रीमती खुशबू जैन, गुना (म.प्र.)
तृतीय : श्रीमती इन्द्रा जैन, नागपुर (महा.)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : जून 2017 का हल

1. 7 आवली प्रमाण
2. 2 नाड़ी
3. 3 ऋतु
4. 1 लाख x 100
5. 84 लाख
6. 1 पूर्व x1 पूर्वांग
7. 1 पूर्व x 1धतांग
8. पद्म x महापद्म
9. कुमुद x तुटीय
10. चर्चिका
11. 3
12. कोटि कोटि प्रमाण पल्य x 10
13. नवहार
14. 4 कोटि कोटि प्रमाण
15. 21 हजार वर्ष
16. नौ
17. नौ-नौ
18. 14
19. सीमंधर
20. मरूदेव
21. शास्त्र, गुरु
22. धोबी का
23. भगवान की
4. आस्रव, बंध, संवर
5. ज्वार के दाने का
6. व्यवहारनय
27. फूल
28. व्यवहारदृष्टि
29. व्यवहार
30. पाँव
31. आचार्यश्री ने
32. आचार्यश्री से
33. व्रति परिसंख्यान व्रत
34. 1930
35. ग्वालियर
36. कोल्हापुर
37. असंयमपूर्ण
38. शिथिलता
39. सात
40. नौ
41. कंवर मिट्टी
42. व्यायाम
43. भोजन बनाना, पानी भरना,
44. व्यापार, हल चलना, कुदाल चलना आदि
45. व्यायाम
46. सात
47. समिति शताब्दी सम्मान
48. पं. सुरेश जैन मारौरा
49. कोतमा
50. आचार्य वादिराजॅ 43

पुराण प्रेरणा

कुल दीपिका

गुण रत्नाकरो भव्यः सज्जनानन्द दायकः ।
तस्येयं कामिनी दिव्या सपुत्रा कुलदीपिका ।।

यह भव्य गुणों का समुद्र और सज्जनों को आनन्द देने वाला है। उसकी यह कुलदीपिका दिव्य स्त्री है।

अभया तत्समाकर्ण्य दासी वाक्यं मनोहरम्।
विश्वास कारणम् तब हसित्वा कपिलां जगौ ।।

अभया विश्वास के कारण दासी के उस मनोहर वाक्य को सुनकर वह हंसकर कपिला से बोली।

मन्येऽहं वञ्चिता त्वं च विप्रे तेन महाधिया।
पुण्यवांल्लक्षणोपेतः स किम् तादृग्विधो भवेत् ।।

मैं तो यह मानती हूँ कि उस महा बुद्धिमान के द्वारा हे ब्राह्मणी ! तुम ठगी गई। पुण्यवान के लक्षणों से युक्त वह क्या उस प्रकार का हो सकता है ?

यस्य पुत्रो मया दष्टाः सर्व लक्षण मण्डिताः ।
अतस्त्वं ब्राह्मणी लोक सत्यम् पश्चिमबुद्धि भाक् ।।

जिसका पुत्र मैंने समस्त लक्षणों से मण्डित देखा है। अतः हे ब्राह्मणी ! तुम लोक में सचमुच विपरीत बुद्धिवाली हो।

हसित्वा कपिला प्रोक्त्वा स्ववृत्तं यत्पुराकृतम्।
राजपत्नीं पुनः प्राह श्रुणु त्वम् देवि मद्वचः ।।

हँसकर कपिला ने अपने पुराने किये हुए आचरण के विषय में राजपत्नी से पुनः कहा। हे देवि ! तुम मेरे वचनों को सुनो।

सौभाग्यं च सुरुपत्वं चातुर्यं च तथापि ते।
अस्यानुभव नान्मन्ये साफल्यं नान्यथा भुवि ।।

यद्यपि तुम सौभाग्य से युक्त सरूपा और चातुर्य से युक्त हो। यद्यपि मानती हूँ इसका अनुभव किये बिना पृथ्वी पर यह सफल नहीं है। ■

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. त् न् अ ग् ई आ जै
2. अ ओ व् म् अ त् अ ल् ग् आ ओ डू
3. ओ त् आ क् य् र् ओ त् आ तो
4. क् अ म् आ ट् ई मू
5. आ र् व् त् अ न् अ क् ए ग् ए अ ह् अ म् चे

परिणाम :

जून 2017: (1) हिन्दी भाषा (2) संस्कृत भाषा (3) प्राकृत भाषा (4) अपभ्रंश (5) पालिभाषा

टॉपर टिप्स

कैरियर

कैट में बेहतरीन परफॉर्म करने वाले मनु अग्रवाल की सलाह है कि तय समय में पूरा पेपर हल करने की प्रेक्टिस करना बेहद जरूरी है। इसके लिए तैयारी के समय से ही आपका टाइम मैनेजमेन्ट अच्छा होना चाहिए। तय समय में उत्तर देने की आदत डालें। आपको प्रश्नपत्र में एक प्रश्न के लिए निर्धारित किए गए समय में ही उसे करना सीखना होगा। अगर किसी छोटे से प्रश्न को हल करने में आप एक मिनिट के बजाय पाँच मिनिट लगा रहे हैं तो फिर आप आसानी से सफलता नहीं पा सकते। प्रश्नपत्र में पूछ गए प्रत्येक प्रश्न को अलग-अलग हल करने में आपको कितना समय देना चाहिए कि तीन घंटें में पूरा पेपर हल हो जाए, इसके लिए आपको प्रेक्टिस करनी होगी।

सफलता का यह मंत्र देश भर में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट (आईआईएम) व टॉप बिजनेस स्कूलों में प्रवेश के लिए आयोजित कॉमन एडमिशन टेस्ट (कैट) में 99.39 पर्सेन्टाइल लाने हेतु मनु अग्रवाल का है। उनका कहना है कि किसी भी पीरक्षा की तैयारी करने से पहले आप सिलेबस को देखें और सबसे पहले अपनी कमियों व मजबूती को पहचाने, फिर उसके अनुसार रणनीति बनाकर तैयारी करें, तभी सफलता मिलेगी।

मनु अग्रवाल ने आईआईटी कानपुर में बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। उनके पिता बिजनेसमेन हैं। मनु कहते हैं कि परीक्षा के समय में प्रेशर झेलना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में बेहतर होगा कि आप अपनी प्रेक्टिस इतनी मजबूत कर ले कि प्रश्नपत्र तय समय में हल करना सीख जाएँ बहुत से अच्छे विद्यार्थी परीक्षा में सफलता पाने से इसलिए रह जाते हैं कि उनका टाइम मैनेजमेंट अच्छा नहीं होता।

रिविजन के लिए समय निकाले – मनु सलाह देते हैं आप कोर्स पढ़ने के साथ-साथ उसका बेहतर ढंग से रिविजन करने का समय भी जरूर निकाले। विषय से जुड़ा कोई भी पार्ट बाद में पढ़ने या तैयार करने के लिए न छोड़े वरना आखिर में आप पढ़ाई के बोझ से दब जाएंगे। कैट में सफलता पाने के लिए इंग्लिश, डाटा इंटरप्रिटेशन एंड लॉजिक व क्वान्टिटेटिव एप्टिट्यूड पर बराबर पकड़ होनी चाहिए। बदले पैटर्न के अनुसार तैयारी करें और भविष्य के मूल सिद्धांत को समझें ताकि प्रश्न को घुमाकर पूछा जाए, तो भी आप उसका उत्तर दे पाएं।

परखें अपनी तैयारी – मनु कहते हैं परीक्षा में कभी भी आप किसी दूसरे से प्रतिस्पर्धा न रखें, बल्कि आप खुद आत्ममंथन कर अपनी तैयारी का ढंग से विश्लेषण करें। इसमें आपको जो कमियाँ नजर आएँ उन्हें तत्काल दूर करने की कोशिश में लग जाएँ। ग्रुप स्टडी कर अपनी तैयारी को बेहतर बनाने पर जोर दें तो अच्छा रहेगा। अपने नोट्स खुद बनाकर तैयारी करें और बहुत ज्यादा कोर्स मेटरियल एकत्र करने के चक्कर में न पड़े।

बिना तनाव के दें परीक्षा – परिक्षार्थियों को मनु सलाह देते हैं परीक्षा कक्ष में आप तनाव में बिल्कुल पूरा फोकस प्रश्नपत्र में पूछे गए प्रश्नों को बेहतर ढंग से निर्धारित समय में हल करने पर बगैर हड़बड़ाहट के प्रश्नों के उत्तर दें। ■

दुनिया भर की बातें

मई 2017

■ **1 मई**

- पाकिस्तान ने युद्ध विराम तोड़ा दो सैनिक शहीद हुए उनके शवों को क्षत विक्षत किया भारतीय सेना ने पाक के 10 सैनिक मार गिराये।

- नेपाल में मुख्य न्यायाधीश सुशीला कार्की के खिलाफ महाअभियोग प्रस्ताव संसद में चर्चा के लिए सूचीबद्ध हुआ।

- भारत तुर्की ने आतंकवाद को साझा समस्या घोषित की।

■ **2 मई**

- आप पार्टी को छोड़ने का संकेत कुमार विश्वास ने दिया।

- उत्तर कोरियाई नेताओं से मिलने को अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प तैयार हुए।

- देवरिया और तारन तरन में शहीद प्रेमसागर एवं परमजीत सिंह का अंतिम संस्कार हुआ।

■ **3 मई**

- आईएसआई के दो एजेन्ट अल्ताफ अली और अल्ताफ कुरैशी को यू.पी. एटीएस ने हिरासत में लिया।

- काबुल : अमेरिकी दूतावास के पास शक्तिशाली धमाका किया गया आठ लोग मरे दो अमेरिकी सैनिक सहित 25 लोग घायल हुए।

- उत्तर कोरिया के साथ बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका ने कैलिफोर्निया से दुनिया में कही भी परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम मिसाईल का परीक्षण किया।

■ **4 मई**

- चीन ने साफ किया कि कश्मीर समास्या में मध्यस्थता करने का उसका कोई ईरादा नहीं।

-गुजरात के बिलकिस बानों दुष्कर्म एवं उसके परिजनों की हत्या मामले में मुंबई उच्च न्यायालय ने 11 दोषियों को उम्र कैद की सजा बरकरार रखी।

- भारत के सबसे स्वच्छ शहरों में इन्दौर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। स्वच्छ सर्वेक्षण 2017 में कुल 434 शहरों को परखा।

■ **5 मई**

- एटा (आगरा) जलेसर नेशनल हाईवे पर रैलिंग विहिन पुलिया ने पंद्रह लोगों को मौत के मुंह में धकेल दिया।

- सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में 16 दिसम्बर, 2012 के सनसनीखेज सामूहिक दुष्कर्म और हत्याकांड के चारों दोषियों को फांसी की सजा पर अपनी मुहर लगा दी।

- भारत ने अपने अंतरिक्ष अभियान में एक और शानदार अध्याय जोड़ा। बेहद महत्वाकांक्षी दक्षिण एशियाई उपग्रह को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में भेज दिया।

■ **6 मई**

- देश की पहली हाईकोर्ट चीफ जस्टिस महिला लीला सेठ का निधन हुआ। वे 86 वर्ष की थी।

-जम्मू कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने कहा कश्मीर को दलदल से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही निकाल सकते हैं।

- केरल में भाजपा की तारीफ करना मुस्लिम लीग की नेता कमरुनिश अनवर को महंगा पड़ा उन्हें पार्टी से निकाला।

■ **7 मई**

- पूर्व मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा केजरीवाल ने मेरे सामने सत्येन्द्र जैन से दो करोड़ रुपये की रिश्वत ली।

- एयरलायंस की कराची मुम्बई, फ्लाइट पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस ने बंद की।

■ **8 मई**

- फ्रांस में राष्ट्रपति पद के चुनाव को इमैनुएल मैक्रो ने जीता।

- भारत भेजने की अर्जी लेकर भारत उच्चायोग में शरण लेने वाली युवती उजमा ने आरोप लगाया कि उसकी शादी बन्दूक की नोंक पर ताहिर अली पाकिस्तानी नागरिक ने की।

■ **9 मई**

- सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता हाईकोर्ट के जज सीएस कर्णन को 6 माह की सजा सुनाई वे जेल जायेंगे।

- नेपाल की प्रचंड सरकार में 6 मधेसियों को शामिल किया गया।

- लंदन : विश्व में पहली बार रोबोट ने 6 मरीजों की आँख की सर्जरी सफलतापूर्वक की।

■ **10 मई**

- श्रीनगर : दक्षिण कश्मीर के शोपियाँ में आतंकियों ने लेफ्टिनेंट उमर फैयाज परे का अपहरण कर हत्या कर दी।

- सुश्री मायावती ने बसपा के पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन सिद्किी व उनके बेटे अफजल को अवैध कत्लखाने चलाने व टिकट के बदले पैसे बटोरने के आरोप में पार्टी से निकाला।

- जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना सैयद अरशद मदनी ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की।

■ **11 मई**

भारत के कस्बे सेक्टर में तेज आँधी से मेरिज गार्डन की दीवार गिरने से 28 लोग मरे 35 घायल हुए।

- पाक गोलाबारी का भारत ने करारा जवाब दिया पाक के 4 बंकर ध्वस्त, 5 सैनिक गम्भीर, 1 युवक की मौत।

- नक्सलियों को हथियार सप्लाई करने वाला मध्यप्रदेश का बुरहानपुर जिला पचौरी निवासी रिचपालसिंह गिरफ्तार हुआ।

■ **12 मई**

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा तीन तलाक शादी तोड़ने का सबसे घटिया तरीका है।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी श्रीलंका यात्रा पर गये कोलम्बो में उन्होंने कहा नफरत और हिंसा में डूबे लोग सबसे बड़े खतरा है।

■ **13 मई**

- भारत सहित 100 देशों पर साइबर हमला हुआ।

- बठिंडा : एसी बस में आग लगने से 3 लोग जिंदा जले 20 झुलसे।

- कराचीः दस मजदूरों की गोली मारकर हत्या कर दी।

■ **14 मई**

- राँची : 15 लाख के ईनामी नक्सली कुंदन पाहन ने आत्म समर्पण किया।

- पाक ने स्वीकार किया कि जेहाद के नाम पर हाफिज सईद आतंकवाद फैला रहा है।

- आप के पूर्व मंत्री कपिल मिश्रा अरविंद केजरीवाल के खिलाफ सबूत देते-देते बेहोश हुए।

■ **15 मई**

- हंग- अन्तर्राष्ट्रीय अदालत आसीजे में भारतीय वकील हरीश साल्वे ने आशंका जताई

कि कहीं कुलभूषण जाधव को पाक फैसले के पहले ही फांसी की सजा न दे दे।

- किशनवाड़ा - डोडा जिले में तबाही मचाने के पहले सुरक्षा बल ने आतंकी अड्डा ध्वस्त किया।

■ **16 मई**

- बिहार के लालूप्रसाद यादव पर एवं उनके करीबियों पर छापा आयकर विभाग ने डाला 1000 करोड़ की बेनामी सम्पत्ति पकड़ी।

- दिल्ली के पूर्व जलमंत्री कपिल मिश्र ने मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के खिलाफ 225 करोड़ के घोटाले के साक्ष्य सीबीआई को सौंपे।

- मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने तीन तलाक को आस्था से जुड़ा मुद्दा बताया।

■ **17 मई**

- पश्चिमी उ.प्र. में आंधी-बारिश से उ.प्र. बिहार में 21 लोग मरे।

- अफगानी टीवी सेन्टर स्टेशन पर तालीबान ने आत्मघाती हमला किया दो ने खुद को उड़ाया, दो आतंकियों क़ो सुरक्षा बल ने मार गिराया।

- पटना - प्रदेश भाजपा कार्यालय पर राजद कार्यकर्ताओं ने हमला बोला।

■ **18 मई**

- केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री अनिल दवे का निधन हुआ। आप 60 वर्ष के एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के थे दो बार राज्यसभा सदस्य रहे।

- भारतीय नौसेना के पूर्वाधिकारी कुलभूषण जाधव की फाँसी पर अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय ने रोक लगाई। पाक पस्त पड़ा।

- प्रवर्तन निदेशालय ने विजय माल्या का 100 करोड़ का फार्म हाउस जब्त किया।

■ **19 मई**

- भूस्खलन से बद्रीनाथ का मार्ग बंद हुआ। 15000 श्रद्धालु फंसे।

- पूर्व केन्द्रीय वित्त मंत्री पी चिदम्बरम के बेटे कीर्ति चिदम्बरम् के खिलाफ मनी लाड्रिंग का केस दर्ज हुआ।

■ **20 मई**

- चुनाव आयोग ने 3 जून से 7 जून तक ईवीएम को हैक करने को चैलेंज दिया।

-इंदौर : रानीपुरा की तीन मंजिला इमारत में भीषण आग लगी माल खाक हुआ।

- अंडमान निकोबार द्वीप समूह में आये भूकंप के झटके गुना(म.प्र.)की वैधशाला में पहली बार दर्ज हुए।

■ **21 मई**

- पाक ने विएन समझौते को ताक में रख कर मुम्बई में नवी अहमद को घुसपैठ के आरोप में बंदी बनाया।

- सीमा पर आपरेशन में 4 आतंकी ढेर हुए तथा तीन जवान भी शहीद हुए।

- हरियाणा की सब इंस्पेक्टर अनीता कुंडू ने जुनून और जज्बे का साथ दूसरी बार एवरेस्ट पर तिरंगा फहराया।

■ **22 मई**

- मुम्बईः रेलमंत्री सुरेश प्रभु ने आधुनिक सुविधाओं से युक्त तेजस एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई।

- कोयला घोटाले मसले में पूर्व कोयला सचिव एचसी गुप्ता को स्पेशल सीबीआई कोर्ट ने 2 साल की सजा सुनाई।

- कानपुरः लालबंगला इलाके में एक साड़ी व्यापारी के घर में आग लगने से नीरज जैन के परिवार के चार सदस्य जिंदा जले।

■ **23 मई**

- मैनेचेस्टर : आईएस ने अमेरिकी पॉप स्टार एरियाना ग्रैडे के म्यूजिक कसर्ट को निशाना बनाया 22 लोग मरे, 56 से अधिक घायल हुए।

- भारतीय सेना ने पाकिस्तान की कई चौकियों बंकरों को ध्वस्त किया। 24 सैकण्ड में दुश्मन के 2 5-30 सैनिक ढेर किये।

- लालूयादव की बेटी मीसाभारती को सीए को प्रवर्तन निदेशालय ने गिरफ्तार किया।

■ **24 मई**

नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड ने अपना इस्तीफा दिया आपने 9 महीने तक सत्ता संभालने के बाद पद छोड़ने के समझौते का सम्मान करते हुए इस्तीफा दिया।

- इस्लामाबाद हाईकोर्ट ने भारतीय युवती उज्मा को भारत लौटने की अनुमति दी।

- शीना बोरा हत्याकांड की जाँच कर रहे मुम्बई के पुलिस इंस्पेक्टर ज्ञानेश्वर गनोरे 42 वर्षीय पत्नी दीपाली गनोरे की हत्या घर में कर दी।

■ **25 मई**

- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस का हैलीकॉप्टर क्रेश हुआ वे बाल-बाल बचे।

- गैरतगंज म.प्र. के पदस्थ टी.आई. संजय दुबे ने अपनी सर्विस रिवाल्वर से गोली मारकर आत्महत्या कर ली।

- बिहार शरीफ : पटना से शेखपुरा के लिए चली बस में आग लगी 8 लोग जिंदा जले।

■ **26 मई**

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ढोला सादिया पुल का उद्घाटन भूपेन्द्र हजारिका के नाम किया यह एशिया का सबसे बड़ा पूल है।

- पंजाब में आतंकवाद को नेस्तनाबूद करने वाले के. पी.एस गिल का निधन हुआ वे पूर्व पुलिस महानिदेशक 42 वर्ष के थे।

- भारतीय सेना ने पाक के बार्डर एक्शन टीम के दो सैनिकों को मार गिराया।

■ **27 मई**

- कश्मीर के सेना के जाबांजों ने 8 आतंकियों को ढेर कर दिया।

- जीका वायरस भारत में दस्तक दिया अहमदाबाद के बापूनगर में 3 मरीज मिले।

श्रीलंका में बाढ़ ने मचाई तबाही 100 की जान गई।

■ **28 मई**

-सेना प्रमुख जनरल विपिन रावत ने कहा सेना जम्मू कश्मीर में घ्रणित युद्ध का सामना कर रही है।

- सीबीएसई - 12 वीं रक्षा गोपाल नोएडा की इंडिया में टॉप रही।

- भारतीय पाक संगीतकार नजहत अत्रे का निधन हुआ वे 68 साल के थे।

■ **29 मई**

- नेपाल ने 10 वां गणतंत्र दिवस मनाया।

- कश्मीर घाटी में पाक पत्थरबाजों को फंडिंग कर रहा है। इसका खुलासा एनआए ने अलगाववादी नेताओं के बयान से किया।

- इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन में छेड़छाड के आरोपों को साबित करने की चुनाव आयोग की चुनौती का सामना करने को कोई भी दल नहीं आया।

■ **30 मई**

- अयोध्या में विवादित ढाँचा विध्वंस मामले में भाजपा नेताओं पर सीबीआई अदालत ने आरोप तय किये और लालकृष्ण आडवाणी, उमाभारती, मुरली मनोहर जोशी को निजी मुचलके पर जमानत मिली।

- बिहार में 12 वीं की परीक्षा का परिणाम आया 65% छात्र फेल हुए।

- बर्लिन : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया के देशों से आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर मुकालबना करने का आह्वान किया।

■ **31 मई**

- राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाना चाहिए गोवंश हत्या पर उम्र कैद की सजा हो।

- काबुल में जर्मनी दुतावास के सामने विस्फोट आतंकी हमला हुआ। 90 लोग मरे 400 से अधिक घायल हुए।

- दिल्ली के बर्खास्त मंत्री कपिल शर्मा को आप विधायकों ने लातों-घूसों से पीटा। ■

डाक टिकटों का जैन इतिहास

आचार्य तुलसी

• सुरेश जैन, लुधियाना •

आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर 1914 को राजस्थान के नागौर जिले के एक छोटे से शहर लाडनूं में एक जैन परिवार में हुआ था बचपन में ही उनके पिता चल बसे तथा उनका लालन-पालन की माता ने किया, छोटी सी उम्र से ही वह अपने जीवन के लक्ष्य के प्रति जागरूक थे, और केवल ग्यारह वर्ष की अवस्था में उन्होंने दीक्षा ग्रहण कर ली। 22 वर्ष की अवस्था में उन्हें उनके गुरु जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी द्वारा इस धर्म संघ का आचार्य (परम धर्माध्यक्ष) नियुक्त किया गया।

वे प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी सहित अनेक भाषाओं के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी भाषा में 50 से अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। 2 मार्च 1949 को जीवन के मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया तथा संयम ही जीवन है कि घोष के साथ जन-जन में जाति धर्म, सम्प्रदाय आदि के भेदभाव के बिना अणुव्रत (संयम के छोटे-छोटे संकल्पों) का प्रचार किया। वह दार्शनिक, लेखक, कवि, गायक, वक्ता, आध्यात्मिक संत, महान समाज-सुधारक तथा महिला उत्थान के पक्षधर थे। इसके लिए उन्होंने कई पग उठाये जिनमें मुख्य महिलाओं की पर्दा प्रथा, विधवा होने पर काले कपड़े पहनने, दहेज प्रथा मृत्यु भोज के खिलाफ उन्होंने समाज को जागरूक किया। अणुव्रत आन्दोलन जन कल्याण के लिए संसार के सामने रखा, जिसमें शिक्षा, शोध, साहित्य, सेवा , साधना संस्कृति एवं समन्वय पर जोर दिया गया।

1955 में उन्होंने आगम (जैन धर्म वैधानिक साहित्य) अनुसंधान का एक भागीरथ कार्य प्रारम्भ किया तथा बाद में सभी 32 आगमों का समीक्षात्मक संस्करण प्रकाशित कराया। जैन इतिहास में यह एक अभूतपूर्व घटना है। आगम संपादन कार्य शुरू करने पर उन्होंने अपने सहयोगी संतों को कहा, देखो एक बात का ध्यान रखना, हम आगम का संपादन कर रहे हैं। आगम पूरे जैन समाज के मान्य ग्रन्थ हैं। केवल तेरापंथ का उन पर अधिकार नहीं हैं। इसलिए हमारे ऊपर बहुत बड़ा दायित्व है, हमने यह गुरुतर कार्य हाथ में किया है। इस बात का ध्यान रहे कि अनुवाद करते समय टिप्पणी लिखते समय टीका लिखते समय जो आगम में है , वही आए। उसमें तेरापंथ की मान्यता को शामिल नहीं करना है। कई पर मतभेद हो तो फुटनोट में दिया जा सकता है किन्तु मूलपाठ

में हम अपनी मान्यता को जबरदस्ती शामिल न करें। यह सम्पादन का काम बिल्कुल असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण से करना है।

आचार्य तुलसी ने अपने गुरुत्व की व्याख्या स्वयं की है। उन्होंने कहा धर्मसंघ का संचालन करने वाले व्यक्ति में तीन गुणों का विकास होना चाहिए।

पहली बात - **समता का विकास**

दूसरी बात - **क्षमता यानी सहन की शक्ति का विकास**

तीसरी बात - **ममता उसमें ममता होनी चाहिए, सब मेरे अपने हैं कोई पराया नहीं।**

आचार्य तुलसी कहा करते थे मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मुझे एक मात्र सत्य से मतलब है। महावीर वाणी को मैं सत्य और संयम का आधार मानता हूँ। समर्पण न किसी व्यक्ति के प्रति, न संस्था के प्रति, न किसी अन्य वस्तु के प्रति, केवल सत्य के प्रति समर्पण होना चाहिए। बहुत कठिन बात है सत्य के प्रति समर्पित होना, आज गुरुता खंडित हुई है, इसका कारण है बहुत सारे गुरु कहलाने वाले लोग सम्प्रदाय के प्रति समर्पित हो गये। सत्य के प्रति उनका समर्पण नहीं रहा।

आचार्य तुलसी का स्वभाव अत्यंत विनम्र था। सरलता, शुचिता, मृदुता की त्रिवेणी थे। आपकी संयम साधना उच्चकोटि की थी, आपमें प्रवचन करने की अद्भुत कला थी। वीतराग प्रभु महावीर के शासन को धर्म, ध्यान, तप, त्याग, स्वाध्याय द्वारा सींचते हुए अपनी विशिष्ट शैली से प्राणी मात्र के कर्म व धर्म का महत्व समझाते थे। 1971 में लाड़नू में उनके मार्गदर्शन में प्राच्य विद्याओं की शिक्षा, शोध, साधना आदि के लिए एक संस्था जैन विश्वभारती की स्थापना की गई जिस भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग University Grants Commission ने 1991 में मान्य विश्वविद्यालयय का दर्जा दिया तथा आचार्य तुलसी को प्रथम अनुसास्ता (First Disciplianarian) के रूप में मान्यता प्रदान की।

पुरस्कार एवं सम्मान - 1962 में आचार्य पद प्राप्त करने की रजय जयंति के अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण ने गंगा शहर (बीकानेर) में आचार्य तुलसी अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर उन्हें सम्मानित किया।

1992 में जैन संघ ने इन्हें युगप्रधान आचार्य की उपाधि प्रदान की और इसे भारत के राष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरी द्वारा प्रदान किया गया। 1974 में उनके 60वें जन्मदिवस के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने उन्हें दिल्ली में 'षष्टिपूर्ति' ग्रन्थ भेंट कर सम्मानित किया।

1985 में राजस्थान विद्यापीठ (मान्य विश्वविद्यालय) द्वारा प्रदत्य सर्वोच्च उपाधि 'भारत ज्योति' भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जेल सिंह द्वारा उदयपुर में प्रदान की गई।

1992 में तिब्बती बौद्ध शोध संस्थान, सारनाथ की ओर से दलाई लामा ने उन्हें वाकपति (डी.लिट्) की मानद उपाधि प्रदान की।

1992 में उनहें इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1994 में आचार्य तुलसी ने अपने आचार्य पद का त्याग कर पदत्याग का विरला उदाहरण प्रस्तुत किया। 23 जून 1997 को 83 वर्ष की आयु में गंगा शहर में आचार्य तुलसी ने महाप्रयाण किया।

आचार्य तुलसी पर डाक टिकट तथा डाक टिकट का डिजाइन- 20-10-1998 को आचार्य तुलसी के 85 वें जन्म दिवस पर उनकी स्मृति में भारत के राष्ट्रपति श्री कृष्णकांत ने एक डाक टिकट जारी किया था तथा तेरापंथ जैन समाज ने इस डाक टिकट को जारी करने का समारोह पूरे भारत वर्ष में मनाया था। 300 पैसे मूल्य वाली लाल ब्राउन तथा खुले ओरेंज रंग को मिलाकर इस दो रंगी डाक टिकट के बायीं ओर हल्के भूरे रंग में आचार्य तुलसी का चित्र और दायी और केशरिया रंग में अणुव्रत आन्दोलन का प्रतीक चिन्ह लगा है जिसमें ऊपर 'संयम खलु जीवनम्' और नीचे संयम ही जीवन है' लिखा है। बीच में पंच अणुव्रत के नाम दिये हैं तथा प्रतीक चिन्ह के दोनों और स्वास्तिक का चित्र बना है। यह डाक टिकट 14 लाख संख्या में छापा गया था। सटेनले गिब्नस केटालाग (इंग्लैण्ड) में इसका विवरण एस.जी. नं. 1650 तथा स्काट केटालाग (अमेरिका) में इसका विवरण नम्बर 1710 पर दिया गया है।

■

कंजूस बाप

कंजूस बाप को मरती हुई हालत में देखकर,
बेटे ने बुलवा लिया दो गुना बड़ा 'कफन'
कि पिताजी ने जीवन भर बड़ा कष्ट पाया
न तरीके से खाया, न तरीके से पहना।
मैं आज कम से कम जी भरकर उड़ा सकूँगा कफन
कान में पड़ते ही लड़के की बात
पिताजी ने धीरे से खोली तुरन्त आँख।
और बोले, बेटा ठीक नहीं है तेरी मर्जी।
क्यों करता है फिजूलखर्ची।
इस कफन के आधे से मेरी लाश को ढँक देना।
फाड़कर आधा सम्हालकर रख लेना।
कपड़ा नहीं जायेगा बेकार तू जब मरेगा तेरे काम आयेगा।

• वीरेन्द्र भूपत, सिरोंज •

■

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी महाराज संबंधी जैन विद्या शोध- एक विश्लेषण

• श्रीमती ज्योति जैन, खतौली •

संस्कार सागर पत्रिका पाठको को यह जानकर आश्चर्य होगा साथ ही गौरव की अनुभूति होगी कि आचार्य विद्यासागर जी महराज के व्यक्तित्व व कर्तव्य पर तीन डीलिट चालीस पीएचडी और अनेक लघुशोध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं और शोध कार्य भी चल रहा है।

भारत एक धर्मप्रधान एवं धर्मनिरपेक्ष देश है भारती संस्कति में अनेकता में एकता रुप जैन बोध्द हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई आदि एक साथ रहते आये हैं यही कारण है कि एक दूसरे के धर्मो का अध्यन और उन पर शोध कार्य होता रहा है।

जैन साहित्य प्राकृत-अपभ्रंश-संस्कृत भाषा मे लिखा गया है मराठी, कन्नड़, गुजराती आदि भाषाओं में भी जैन साहित्य उपलब्ध है सभी प्रमुख ग्रंथों का वर्तमान में हिन्दी भाषा में ही अधिकांश जैन साहित्य लिखा एवं प्रकाशित किया जा रहा है।

सत्य का अन्वेषण मानव का स्वभाव है जैन साहित्य शोधार्थियों को सदैव आकर्षित करते रहे हैं यही कारण है कि चारों अनुयोगों के ग्रन्थों पर अनेक शोधकार्य सम्पन्न हुये और अनेक चल रहे हैं साथ ही शोधकार्य विपुल मात्रा में प्रकाशित हो रहे हैं।

आचार्य विद्यासागर श्रमण परम्परा के उन्नायक हैं संयम त्याग की साधना में रत श्रेष्ठतम साधक तो हैं ही उच्चकोटि के साहित्यकार भी हैं आप प्राकृत-अपभ्रंश-संस्कृत-कन्नड़-मराठी-बंगला-अंग्रेजी-हिन्दी सहित अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं संत काव्य परम्परा में आचार्य विद्यासागर जी का नाम अपनी एक विशिष्ट गरिमा के साथ अंकित है आपकी साहित्यक रचना में जहाँ आध्यात्मिकता की अवगाहनात्मक गहराई मे आत्म रस का रसास्वादन होता है वहीं दूसरी ओर जीवन की बहुविध रूपो का चित्रण दिखाई पड़ता है। आपने अनेक रचनाओं के माध्यम से साहित्य जगत को अनेक नयी विधायें, नये संदर्भ और नये शब्द दिये हैं। निज आत्म स्वरुप की पहचान आपकी समस्त रचनाओं का सार है।

सर्वाधिक चर्चित और कालजयी कृति मूकमाटी हैं। इस महान काव्य में संस्कृति को संस्कारित और मानव जीवन के विभिन्न पहलूओं को दर्शाया गया है। आचार्यश्री की इस साहित्यिक विलक्षणा पर हिन्दी साहित्य जगत धन्य हो गया। आचार्यश्री द्वारा रचित काव्य संग्रहों ने काव्य जगत को एक नयी विचारधारा, एक नयी दिशा प्रदान की। नर्मदा का नरम कंकर, डूबो मत लगाओ डूबकी,

शेष पेज 53 पर....

इसे भी जानिये

विविध जातियों का विवरण

पुनन - मध्य वर्नियों में रहने वाले व्यक्ति जो अधिकांशतः कृषि करते हैं और वनों से खाद्य पदार्थ एकात्रित करते हैं।

कजाख या कज्जाक - कज्जाक फजाखिस्तान गणराज्य व सीक्यांग में घुमक्कड़ी जीवन व्यतीत करने वाले लोग है। इनका जीवन खिरगोज की भाँति पशुपालन पर निर्भर करता है।

माया- मध्य अमरिका के आदिवासी इण्डियन जो मैक्सिको, वाटेमाला और होण्डुरास में निवास करते हैं मूलतः माया लोग कृषक है जो मक्का फलियां और अन्य कृषि फसलें उगाते हैं।

माओरी - न्यूजीलैण्ड के पोलिनेशियन आदिवासी लोग माओरी कहलाते हैं माओरी आखेटक हैं लेकिन वर्तमान में कृषि आखेट और वन्य पदार्थ एकत्रित कर जीवन व्यतीत करते हैं ये पत्थर तराशी और लकड़ी तराशी में प्रवीण है।

मगयार- इन्हें हंग्रेरी भी कहते हैं क्योंकि ये हंग्ररी भाषा बोलते हैं इनकी अधिकांश जनसंख्या रूमानिया, यूगोस्लाविया, पूर्व चेकोस्लाविया और यूक्रेन में रहती है मगयार मूलतः कृषक है और वर्तमान में इन देशों में पर्याप्त औद्योगिक विकास के बावजूद भी ये कृषि कार्य करते हैं और ग्रामों में रहते हैं।

बोअर- बोअर का अर्थ कृषक है यह नाम दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले डच या हुगुएनोट के लिए प्रयुक्त होता है ये ट्रान्सवाल और आरेन्ज फ्री स्टेट में रहते हैं

अफ्रीडी-पाकिस्तान में सेकेंड कोद्ध से पेशावर जिले में रहने वाली पख्तूनी आदिवासी जाति है। 16वीं व 17वीं शताब्दी में मुगल बादशाहों के आक्रमण का सामना करने के लिये अफगान के शासक अहमदशाह दुर्रानी ने इन्हें अपनी सेना में भर्ती किया था, ये कुशल योद्धा व साहसी लोग हैं।

जुलु-दक्षिण अफ्रीका के गणराज्य के नैटाल क्षेत्र के निवासी न्गूनी भाषा बोलते हैं। ये वान्टू लोगों से धार्मिक, भाषाई, सांस्कृति दृष्टि से काफी करीब हैं। ये मूलतः खाद्यान्न उत्पादक कृषक हैं ये पशुपालन भी करते हैं। वर्तमान में कुछ जुलु अंग्रेजों के फार्मों पर मजदूरी भी करते हैं।

कोसेक्स-कालासागर और कैस्बियन सागर के निकटवर्ती उत्तरी भागों में निवास करने वाले कोसेक्स स्वतन्त्र विचारों के लोग हैं। रूसी सरकार ने इन्हें भर्ती की प्राथमिकता का आश्वासन दिया है ये पौलेण्ड, लिथुआनिया, और मास्कोवा में 15 वीं शताब्दी से कृषक का जीवन यापन कर रहे हैं। ये खूंखार, लड़ाकू और वीर लोग हैं ।

नीग्रो- यह प्रजाति दक्षिणी-पश्चिमी और मध्य अफ्रीका में पायी जाती हैं। इनकी त्वचा काली होती है तथा बाल भी ऊन के समान घूँघराले होते हैं। इनके होंठ बाहर निकले होते हैं। नीग्रो प्रजाति के लोग अमरिका में भी बसते हैं।

महसूद-यह उत्तरी पश्चिमी पाकिस्तान में रहने वाली एक पहाड़ी जाति है।

टारटर - यह साइबेरिया एवं तर्किस्तान की एक प्रजाति है।

अफरीदी-यह प्रजाति पाकिस्तान की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर पहाड़ियों में बसती है यह लड़ाकू जाति है। ■

दिशाबोध

चुगली से घृणा

1. जो मनुष्य सदा अन्याय करता है और न्याय का कभी नाम भी नहीं लेता उसको भी तब प्रसन्नता होती है, जब कोई कहता है - ''देखो, यह आदमी किसी की चुगली नहीं खाता।''
2. सत्कर्म से विमुख हो जाना और कुकर्म करना निस्संदेह बुरा है, किन्तु मुख पर हँसकर बोलना और पीठ पीछे निन्दा करना उससे भी बुरा है।
3. झूठ और चुगली के द्वारा जीवन व्यतीत करने से तो तत्काल मर जाना अच्छा है, क्योंकि इस प्रकार मर जाने से शुभकर्म का फल मिलेगा।
4. पीठ पीछे किसी की निन्दा न करो, चाहे उसने तुम्हारे मुख पर ही तुम्हें गाली दी हो।
5. मुख से चाहे कोई कितनी ही धर्म-कर्म की बातें करे, पर उसकी चुगलखोर जिह्वा उसके हृदय की नीचता को प्रकट कर ही देती है।
6. यदि तुम दूसरे की चुगली करोगे, तो वह तुम्हारे दोषों को खोजकर उनमें से बुरे दोषों को प्रकट कर देगा। एवं गुणों को ढँकता रहेगा।
7. जो मधुर वचन बोलना और मित्रता करना नहीं जानते, वे चुगली करके फूट का बीज बोते हैं, और मित्रों को आपस में एक दूसरे से जुदा कर देते हैं।
8. जो लोग अपने मित्रों के दोषों को स्पष्ट रूप से सबके सामने कहते हैं, वे अपने बैरियों के दोषों को भला कैसे छोड़ेंगे ?
9. पृथ्वी अपनी छाती पर निन्दा करने वाले के पदाघात को धैर्य के साथ किस प्रकार सहन करती है ? क्या चुगलखोर के भार से अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए ही धर्म की ओर बार-बार झुकती है ?
10. यदि मनुष्य अपने दोषों की विवेचना उसी प्रकार करे, जिस प्रकार कि वह अपने बैरियों के दोषों की करता है; तो क्या उसे कभी कोई दोष स्पर्श कर सकेगा ?
11. चुगलखोर या निन्दा करने वाले लोग प्रायः स्वयं भी वैसे ही पापी-दोषी होते हैं।

प्रवचन

मन और इन्द्रियों को वश में करना ही संयम है

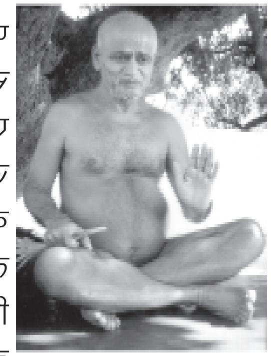

... में ... 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि आज ... संयम ... **... इन्द्रियों को वश में करना ही संयम है** । आज लोग संयम ... [illegible]

[illegible]

हिन्दी शतक परम्परा और जैनाचार्य विद्यासागर

• शीलचन्द्र जैन, छिंदवाड़ा •

मूकमाटी महाकाव्य के प्रणेता, अप्रतिम प्रतिभा के धनी, मुक्ति-पथ के पथिक, संत सुकवि आचार्यश्री विद्यासागर जी की सशक्त लेखनी से अनवरत अनुपम साहित्य सृजित ही नहीं, अपितु निःसृत हो रहा है। इस कलिकाल में भी चतुर्थकालीन चारित्र के साधक वीतरागी संत आचार्यश्री संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, कन्नड़, मराठी,बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के प्रकाण्ड पंडित हैं। अध्यात्म, धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, साहित्य, न्याय, व्याकरण, मनोविज्ञान एवं योग-विधाओं में अनुपम ज्ञान आपकी विशिष्ठता है। आयु-कवित्व एवं प्रत्युत्पन्नमतित्व आपके प्रशस्त गुण हैं। स्वसाधनारत बहुज्ञानाभ्यासी भव्य जीवों के आत्म कल्याणार्थ ग्रन्थ पवयन में निरन्तर प्रवृत्त रहते हैं। आपके सानिध्य मात्र से भावों और विचारों की निर्मल परिणिति होने लगती है। आपके तत्वोपदेश भव्य जनों को मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ऐसी है प्रभावना आपकी।

बीसवीं शताब्दी के आदर्श राष्ट्रीय संत सुकवि की साहित्य सर्जना में अध्यात्म-चिन्तन की ऊंचाई और कवित्व की गहराई का मणिकांचन योग दृष्टव्य है। आचार्यश्री ने संस्कृत साहित्य की शतक् सृजन-परम्परा, हिन्दी साहित्य की सतसई-परम्परा और गुरु परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखने के निमित्त से सप्त शतकों की सर्जना कर, साहित्य-जगत को अक्षय निधि प्रदान की है। आपके द्वारा रचित सप्त शतकों में सुनीति शतकम्, श्रमण शतकम् , परिषह जय शतकम्, निजानुभव शतक, निरंजन शतकम्, भावना शतकम्, तीर्थ शतकम् एवं मुक्तक शतकम् प्रमुख हैं।

जैन साहित्य में स्व. कविवर द्यानतरायजी कृत चर्चा शतक बहुचर्चित एवं लोकप्रिय है। इसमें साधारण पाठक/श्रावक की जिज्ञासा की संतुष्टि हेतु जैन-दर्शन के मूल भूत सिद्धांतों, तत्वों तथ्यों एवं मान्यताओं को समाविष्ट-किया गया है। यह शतक आत्मार्थी जीवों को कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

आचार्यश्री ने पृथक-पृथक शतकों में अध्यात्म, धर्म, दर्शन एवं चिन्तन को नवीन उद् भावनाओं और नवीन परिकल्पनाओं द्वारा नई दिशा देकर युग-बोध कराया है। ये शतक भव्य जीवों के लिये प्रेरणाप्रद एवं मार्ग-दर्शक, मील के पत्थर के समान हैं। इन शतकों के विषय-वैविध्य, अर्थगाम्भीर्य एवं मार्मिक प्रभावना की ओर दृष्टिपात्र करें तो हमें ज्ञात होगा कि ये सप्तशतक आकाश में स्थित ऋषि मण्डल के समान शाश्वत दैदीप्यमान रहेंगे। इन शतकों के सन्दर्भ में पूज्य मुनि उत्तमसागरजी की निम्नांकित पंक्तियाँ उदधृत करना प्रासंगित एवं समीचीन है-

नीति न्याय से जीना है तो सतक सुनीति का मनन करो,
श्रमण शतक का पाठ करो अरु अष्ट करम का हनन करो।
परिषह को जय करके निजानुभव का पाठ करो,
तुम्हें निरंजन बनना है तो विद्या गुरु का ध्यान करो॥

इन शतकों में आचार्यश्री का काव्य-वैभव एवं कला पौष अनुपम है। भावपूर्ण कोमलकान्त पदावली काव्यानन्द में अवगाहन करने के लिये विवश कर देती है। पाठक भाव विभोर हो गाने में तल्लीन हो जाता है और ब्रह्मानंद सहोदर की आनन्दानुभूति करने लगता है। यह है विशेषता आचार्यश्री के काव्य-जगत की।

नीति शतक में विविध विषयों को समाविष्ट किया गया है -यथा-मोह, मान, माया, मद, पाप, पुण्य, परिग्रह, समता, शील, संयम, व्रत, तप, दान, धर्म, नीति, भाग्य पुरुषार्थ आदि। नीति शतक शिक्षाप्रद एवं प्रेरक शतक है, जिसके पठन-मनन से सद्मार्ग प्रशस्त होता है। कतिपय उदाहरण दृष्टव्य है - सत्संगति-कथन न करोति पुंसाम् की उक्ति को सार्थक करती हुई उक्ति-

पाप पंक में पतित हुआ हो साधु समागम यदि पाता।
प्रथम पुण्य से भव वैभव पा मुक्ति समागम पुनि पाता॥
मिश्री का यदि सुयोग पाती खट्टी हो वह यदपि दही।
इष्ट-मिष्ट श्रीखण्ड बनेगी मूढ़ चाहता तदपि नहीं॥

संत कबीर ने सत्संगति के प्रभाव को इस प्रकार अभिव्यक्ति दी है-

कबीर संगत साधु की, ज्यों गंधी की बास।
जो गंधी कछु दे नहीं, तो भी बास सुवास॥

संत कवि गोस्वामी तुलसीदास ने सत्संगति का महत्व दर्शाते हुये लिखा है- **संत समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोय।**

उद्यमेन हि सिद्धन्ति कार्याणि न मनोरथैः- की भावना चरितार्थ करने वाली पंक्तियां

गृही बना पर उद्यम बिन हो धन से वंचित यदि रहता।
श्रमण बना श्रामण्य रहित हो धन में रंजित यदि रहता॥
ईख पुष्य आकाश पुष्प सम इनका जीवन व्यर्थ रहा।
सही-सही पुरुषार्थ वन्दय है जिस बिन सब सुख गर्त रहा॥

अहिंसा परमो धर्मः - की प्रतिस्थापना करती हुई निम्नांकित पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

महाव्रतों में महा रहा है मुनियों का व्रत शील रहा।
इन्द्रिय विजयों में रसना की विजय मुख्य सुख झील रहा॥

सब दानों में अभयदान ही श्रेष्ठ रहा वरदान रहा।
सब धर्मों में धर्म अहिंसा मान्य रहा मन मान रहा।।

सच्चे श्रावक/साधु का स्वरूप व्यक्त करती हुई पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं :-

शरणागत के शरण प्रदाता निराह तरू सम उपकारी।
नियमित उद्यम में रत रहता रवि शशि सम है तमहारी।।
सिंह वृत्ति का धारक मेरु है संग रहित है हवा समा।
योगों में तो अचल मेरु है धरा बना है धरा क्षमा।।

आचार्यश्री की ये नीति विषयक पंक्तियां हृदयांगम करने योग्य है -

रहे नीति के वीर प्रणेता शिवपथ के जो नेता हो।
नीति प्राप्त हो तुम्हें भजूं मैं सकल तत्व के वेत्ता हो।
क्यों न निर्धनी करे धनिक की सेवा धन से प्रीति रही।
रीति नीति हम कभी न भूले गीत गा रही नीति यही।।

श्रमण शतकम् - मैं जैन श्रमण साधु के गुणों एवं चर्या का विरेचन किया गया है। श्रमण शब्द जैनत्व या जैन संस्कृति का पर्यायवाची बन गया है, जबकि इसका शाब्दिक अर्थ होता है - जो अपनी विकृतियों को विनष्ट करने के लिये श्रम कर रहा है, वह श्रमण कहलाता है। विषय-कषाय राग-द्वेषादि भावों के शमन में तीन श्रावक/साधु श्रमण कहलाता है, जो निजानन्द की ओर उन्मुख रहता है यथा-

नाना प्रकार तप से तन को तपाया,
है छोड़ वस्त्र जिनने अघ को हटाया।
पाया निजानुभव को जिन को दिया था,
मैं उन्हें विनय से उर बीच पाया।।

संसार की असारता और शाश्वत सुख की जन पंक्तियां मानव मन को स्पर्श करती हुई, व्यक्त करती हैं -

संसार में धन न सार असार सारा,
स्थायी नहीं, न उनसे सुख हो अपारा।
है सार तो समयसार अपार प्यारा,
हो प्राप्त शीघ्र जिससे वह मुक्ति दारा।।

मोह-माया, राग-द्वेष आत्मा का स्वभाव नहीं है। सच्चिदानन्दैक रूप आत्मा अजर, अमर और अविनाशी है। इसी स्वरूप का चिन्तवन ध्येय और ज्ञेय है-यथा-:-

ये पाप पुण्य इनमें फिर मौन धारे,
औ देह स्नेह तज के निज को निहारे।।

मन, वचन और काय से धर्म का पालन करने वाला नियम से अनन्त सुख को प्राप्त करता है। आचार्यश्री के शब्दों में-

जो काय से वचन से मन से सुचारे,
पा बोध, राग मल धोकर शीघ्र डारे।
ध्याता निरन्तर निरंजन जैन को है,
पाता वही नियम से सुख चैन को है।।

परिषह जय शतक में आचार्य प्रवर ने दिगम्बर जैन साधुओं के 22 परिषहों का विवेचन किया है। ये परिषह जीव द्रव्य एवं पुद्गल द्रव्य के परिणाम हैं, जो जीव की शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा के परिणाम हैं - यथा भुख-प्यास जीव के परिणाम है और सर्दी -गर्मी पुद्गल (शरीर) के परिणाम हैं। ये परिषह एवं उपसर्ग कर्म निर्जरा की दिशा में साहस, धैर्य एवं सहनशषीलता का बोध कराते हैं। ऐसे साधु सदा वन्दनीय है।

दुख में सुख में तथा अशुभ शुभ में नियमित रखते समता,
शुचितम चेतन को नमते है श्रमण श्रमणता से ममता।
यम संयम दम शम भावों कीलेता सविनय शरण अतः
विभाव-भावो दुर्भावों का क्षरण शीघ्र हो मरण स्वतः।।

एक साथ शारीरिक एवं मानसिक उन्नीस परिषहों तक को शान्त भाव से सहन कर सकने वाले साधु अपने साधना मार्ग अडिग रहते हैं। वे समस्त जीवों के प्रति समता भाव रखते हैं और कर्म उदय से आये उपसर्गों की निर्जरा करते हैं -

चराचरों से मैत्री रखते कभी किसी से बैर नहीं,
निलय दया के बने हुये है नियमित चलते स्वैर नहीं।
तन से मन से और वचन से करे किसी को व्यथित नहीं,
सुबुध जनों से पूजित होते मान-गान से सहित सही।

आचार्यश्री ने ऐसे साधुओं की ओर भी संकेत किया है, जो साधुओं का बाना तो ओढ़े है, किन्तु उनमें साधुता नहीं है-

महा मूढ़ है साधु बना है, शुभ कृत जीवन किया नहीं,
भविक जनों को सदुपदेश दे उपकृत अब तक किया नहीं।
महा मलिन मति चिर से तेरी ज्ञान नीर से धुली नहीं,
सहे वचन यूं व्यर्थ साथुता अभी आंख तब खुली नहीं।।

निर्लिप्त, निःस्पृही, अपरिगृही, स्वावलम्बी, सतत साधनालीन साधु सदैव अभिनन्दनीय है, पूज्य हैं यथा :-

जिनमत की उन्नति में जिनका जीवन तत्पर लसता है,
उजल सलिल से भरा सरित सा जिनमें दर्शन हँसता है।
रहा अदर्शन परिषह जय यह प्रमुख रहा मुनि यतियों का,
उनके चरणों में नित नत दूँ विनशन हो चहु गतियों का ।।

निजानुभव शतक में आचार्यश्री सतत् साधनाभूति की भव्य अभिव्यक्ति हुई है। जो आत्मानुरागी स्व को भूल पर मैं विचरता है, मिथ्यात्व के वशीभूत जड़ के सुखार्थ परिणमन करता है, वह निरन्तर भव में ही भटकता रहता है

जो अन्य का परिचयी, निज का नहीं है,
होता सुखी न वह चूँकि परिग्रही है।
जो बार-बार पर को लख फूलता है,
संसार में भटकता वह भूलता है ।।

संसार दुख मय है। यहाँ सुख नहीं, सुखाभास है। जब तक संसारी जीव आत्म-चिन्तन में लीन निजाधीन नहीं होता, तब तक शाश्वत सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है यथाः-

आकाश सादृश विशाल, विशुद्ध सत्ता,
योगी उसे निरखते वह बुद्धिमत्ता।
सत्यं शिवं परम सुन्दर भी वही है,
अन्यत्र छोड़ उसको सुख ही नहीं है।

भाव-विभाव वन्दय के कारण है। शुभभाव शुभोपयोग और अशुभ भाव अशुभोपयोग की ओर ले जाते हैं। अशुभ को तज शुभ की ओर उन्मुख हो शिव पद का प्रशस्त मार्ग है यथा :-

स्वाधीनता, सरलता, समता, स्वभाव,
तो क्रूरता, कुटिलता, ममता, विभाव।
जो भी विभाव धरता, तजता, स्वभाव।
तो डूबती उपलनाव, नहीं बचाव ।।

मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाऊँगा, ऐसा विचार करना भव्यात्मा का स्वभाव है और मानव जीवन की सार्थकता भी इसी में है। यदि नर-भव पाकर इसे व्यर्थ ही गवां दिया तो इससे बड़ी मूर्खता क्या होगी :-

मैं कौन हूँ, किधर से अब आ रहा हूँ
जाना कहाँ, इधर से जब जा रहा हूँ।
ऐसा विचार यदि तू करता ना प्राणी,
कैसे तुझे फिर मिले यह मुक्ति रानी ।।

आचार्यश्री की निम्नांकित पंक्तियां निजानुभूति की प्रेरणा देती हुई संकेत करती है :-

स्वात्मानुभूति सर में करता न स्नान
कालुष्य कालिख कभी न धुले सुजान।
व्यर्थ क्यों ही विषय कर्दम में फंसा है,
भाई वहाँ सुख नहीं, वह तो मृषा है,

निरंजन-शतकम् में आचार्यश्री ने आत्मा के परमात्म स्वरूप की विवेचना है। यह निरंजन आत्मा का सुख का निकंद है। निरंजन अर्हन्त देव अनन्त गुणों के धाम है। वे सदा सन्तों, सुरों एवं बुधजनों से पूजित हैं। सर्वज्ञ, वीतरागी जिनेश्वर का स्वरूप निरूपित करते, इसे आचार्यश्री अभिव्यक्त करते हैं :-

संसार को निरखते न यथार्थ में हैं,
तो आप केवल निजीय पदार्थ में हैं।
संसार ही झलकता दृग में तथा है,
नाना पदार्थ दल दर्पण में यथा है ।

जिनदेव की स्तुति स्तवन, पूजा-अर्चना, आराधना उपासना करने वाला प्राणी स्वतः कवि बन जाता है। आचायश्री के शब्दों में :-

लालित्य पूर्ण कविता लिख के तुम्हारी,
होते अनेक कवि है कवि नाम धारी।
मैं भी सुकाव्य लिख के कवि तो हुआ हूँ,
आश्चर्य तो यह निजानुभवी हुआ हूँ।

असाता कर्मों के उदय से उत्पन्न दुखों की शान्ति हेतु एक मात्र आश्रय निरंजन जिनदेव ही है। आपका गुणगान क्षणमात्र में अनन्त दुखों को विनष्ट कर देता हैं :-

साता नहीं उदय में जब हो असाता,
मैं आपने भजन में बस डूब जाता।
है चन्द्र को निरखता सघनी निशा में,
जैसा चकोर रूचि से न कभी दिवा में।
धाता तुम्हीं अभय दे जग को जिलाते,
नेता तुम्ही सहज सतपथ भी दिखाते।
मृत्युंजयी बन गये भगवन कहाते,
सौभाग्य है कि मम मन्दिर में सुहाते ।।

लौकिक कामनाओं के भंवर में फंसे प्राणियों को आचार्यश्री के शब्दों में व्यक्त भावना को ही माना श्रेयस्कर है, अन्यथा भव में ही भटकते रहेंगे।

चाहू न राज सुख में सुर सम्पदा भी,
चाहू न मान यश देह नहीं कदापि ।
हे ईश गर्दभ समा तन भार ढोना,.
कैसे मिटे, कब मिटे मुझको कहो ना ।

इसी प्रकार आचार्यश्री के भावना शतकम्, तीर्थ शतकम् एवं मुक्तक शतकम् ज्ञान के अक्षय कोष और कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने के अद्‌भुत साधन हैं। इनकी विषय वस्तु और भाषा शैली अनूठी है। आचार्यश्री की शब्द योजना-श्रुत सुभग एवं कर्ण कमनीय है। भाषा प्रांजल, सरस और भावानुकूल प्रवाहमय है। सर्वत्र गेयता है। वर्ण्य-विषय को सुस्पष्ट करने के लिये आचार्यश्री उपमानो, व्रतिको, उत्प्रेक्षाओं एवं दृन्टान्तों का आश्रय लिया है। आचार्यश्री के काव्य में अलंकारों एवं अभिव्यंजनाओं के स्वाभाविक प्रयोग अनायास ही परिलक्षित होते हैं।

आचार्यश्री द्वारा सृजित अपरिति साहित्य, साहित्य-जग की अमूल्य निधि तो है ही, साथ ही जैन-धर्म की शाश्वत प्रभावना बनाये रखने में और विश्व के कोने-कोने तक अपनी सुरभि विकीर्ण करने में सशक्त एवं सक्षम है। निम्नांकित उक्ति शतकों के छन्दों के स न्दर्भ में प्रासंगित है, ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी -

सतसैया के दोहरे ज्यो, नाविक के तीर ।
देखत में छोटे लगें, घाव करैं गम्भीर ।।

पुनश्च, आचार्यश्री के चरणों में शत्-शत् नमन करता हुआ जिनके आशीर्वाद से एक अल्पज्ञ का लघु प्रयास ■

श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला में प्रभावना रथ का उद्‌घाटन

इन्दौर। सहस्त्र वर्षों से चला आ रहा श्री श्री 1008 भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तका-अभिषेक प्रत्येक 12 वर्ष में होने वाला लोक कल्याणकारी आयोजन है। श्री क्षेत्रश्रवणबेलगोला की जानकारी योजनायें, शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचकल्याणक महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक के प्रचार-प्रसार हेतु प्रभावना रथ का विहार पूरे देश में चलेगा। श्री क्षेत्र में श्रवणबेलगोला में विराजमान चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज के पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि परम पूज्य आचार्यश्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ, परम पूज्य आचार्यश्री 108 वासुपूज्यसागर जी ससंघ, परम पूज्य आचार्यश्री 108 चन्द्रप्रभु सागर जी महाराज ससंघ, मुनिश्री 108 प्रज्ञायोगी अमितसागरजी महाराज के साथ-साथ श्री श्रवणबेलगोला के तीर्थक्षेत्र में विराजमान मुनिगण, आर्यिका माताजी, त्यागीव्रतियों के सान्निध्य में जगदगुरु चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व में प्रभावना रथ का उद्‌घाटन 17 जून 2017 को कर्नाटक सरकार के रेशम पशुपालन मंत्री एवं अध्यक्ष महामस्तकाभिषेक महोत्सव कर्नाटक सरकार माननीय श्री ए.मंजु ने हरी झंडी दिखाकर रथ का पायलट बनकर उद्‌घाटन किया।

ऐलक सिद्धांतसागर

क़हानी

विद्या की तड़फन

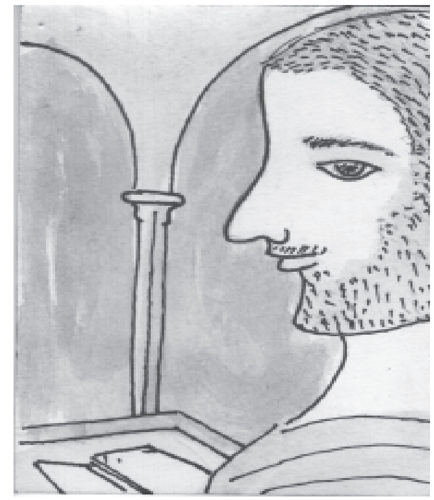

मदनगंज-किशनगढ़ सुंदर सा शहर, इसी शहर में मुख्य सड़क के नजदीक आदिनाथ प्रभु का सुंदर जिनालय था, लेकिन निर्माणाधीन। इसी जिनालय में जयोदय काव्य के सृजेता वृहद त्रयी के रचियताओं से समकक्षता बनाने में सक्षम संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, अनेक महाकाव्यों के रचनाकार मुनि ज्ञानसागर इस जिनालय के एक कक्ष में विराजमान थे। मुनिश्री की चर्या, चिंतन इतना गम्भीर था, कि जिसे सुनकर देखकर प्रायः सभी विद्वान दांतों तले अंगुली दबा लेते थे। राणोली में सन् 1891 में जन्मे भूरामल पं. को सभी विद्वान आदर की दृष्टि से देखते थे लेकिन जब से वे मुनि बने तब से उनकी स्थिति अलग ही बन गई। संत जगत में जितना उनका सम्मान था, उतना किसी का नहीं। एक बार जब आचार्य धर्मसागर व मुनि ज्ञानसागर का मिलन हुआ, तब आसन खाली रहा। आचार्य धर्मसागरजी कहते है कि मुनि ज्ञानसागरजी आसन पर बैठेंगे क्योंकि वे ज्ञानसागर वृहद हैं और मुनि ज्ञानसागरजी ने कहा आचार्य धर्मसागरजी आसन पर बैठेंगे क्योंकि वे पद से आचार्य हैं। ऐसे सम्मान देने में निपुण आचार्य ज्ञानसागरजी की मन ही मन में याद करते हुए लम्बे, ऊँचे , पगड़ी धारी, कुर्त्ता , धोती में सुसज्जित सेठ कजौड़ीमल सीढ़िया चढ़ते चले जा रहे थे उनकी गति कुछ तेज थी क्योंकि वे गुरुवर के दर्शन करने की आतुरता मन में ल़िए हुए थे।

राजस्थानी वेश-भूषा में कजौड़ीमल आगे बढ़ रहे थे कि बीच में ही दीपचन्द्र चौधरी सीढ़िया पर मिल गये उन्होंने कहा कहिए सेठजी बहुत दिनों में याद किया अपने गुरु को भूल गये। कजौड़ीमलज़ी ने कहा घर-गृहस्थी की हजार झंझटें रहती हैं, भैया, मन तो बहुत तड़पता है कि कब गुरु के दर्शन करूँ लेकिन सोचते-सोचते रह जाता हूँ। और सुनाओ सेठ सब मजे में तो हैं। दीपचन्द्र जी आगे-आगे चलने लगे। कजौड़ीमल जी और विद्याधर जी पीछे-पीछे चलने लगे। दीपचन्द्रजी ने कहा अरे ! ये

ब्रह्मचारी जी कहाँ से आए हैं। तभी मूलचन्द्र लुहाड़िया भी वहीं आकर खड़े हो गए। पधारो जी सेठ साहब मूलचन्द्रजी ने हाथ जोड़कर कहा। अरे ! कजौड़ीमल साहब तुम तो अपने. गुरु को ही भूल गये, कितने दिनों में आ रहे हो। कजौड़ीमल ने कहा -अरे मूलचन्द्रजी आप क्या बात करते हो इतने सरल, सहज, गुरु जिन्हें कभी मैंने गुस्सा होते नहीं देखा कितना थोड़ा-सा आहार कितने दूर-दूर तक चौकें में चले जाते हैं। सब चौका वाले हमेशा खुश रहते हैं। आहार करते समय हूँ-हां भी नहीं करते। कभी किसी के ऊपर नजर नहीं करते जैसे कोई गाय सिर्फ अपने चारा पर आहार पर दृष्टि रखती है। ऐसे हमारे गुरुजी सिर्फ आहार पर ध्यान देते हैं । ऐसे गुरु को कौन भूल सकता है। पंचम काल के ये तो साक्षात्, श्रुत केवली हैं। कैसी बात कर रहे मूलचन्द्रजी मैं ऐसे गुरु को भूल जाऊँगा? गृह-गृहस्थी की सिर्फ ऐसी झंझट है कि उनमें उलझ जाते हैं तो निकल नहीं पाते । मूलचन्द्रजी ने कहा -अरे कजौडीमल आपके बिना तो हमें ऐसा लगता है कि कोई बहुत बड़ी कमी सी हो। तुम आ जाते हो तो हम लोग निश्चित हो जाते हैं कि गुरु जी के पास कोई जिम्मेदार व्यक्ति है, क्योंकि हमें भी ठेकेदारी एवं कोर्ट कचहरी के काम में इतनी उलझन रहती है कि हम गुरुजी के पास सुबह स्वाध्याय में ही समय दे पाते हैं।

ज्ञानसागर महाराज जी का ज्ञान तो अपार समुद्र के समान है। अपने शिष्यों को बड़े-बड़े ग्रन्थ बिना देखे पढ़ा देते हैं। अभी परसों सेठी जी बैठे थे। बिना पुस्तक लिये अष्ट सहस्री ग्रन्थ को पढ़ा रहे थे । गुरु जी का स्वाध्याय तो हमेशा चलता ही रहता है। महीनों तक सेठी जी और पं. महेन्द्रकुमार पाटनी बैठकर गुरुजी के पास गहन स्वाध्याय करते हैं।

कजौड़ीमल ने कहा पं. मूलचन्द्रजी तुम तो पंडित हो। हम तो बैठते हैं तो हमें कोई शास्त्र समझ नहीं आता। हम तो इतना जानते हैं गुरु ज्ञानी, गुरु पारखी, अपना काम तो गुरु सेवा करना है। इस वृहद् उम्र में उनकी जैसे बने वैसे सेवा करना है। अब उसमें से भी कभी-कभी गलती हो जाती है तब भी महाराज जी ने कभी गुस्सा नहीं किया चाहे व्यंग्य की चुटकी मार दे। मूलचन्द्र जी ने कहा यही तो इनकी महानता है। कि ये गलती करने वाले को डाँटना तो ठीक टोकना भी पसंद नहीं करते। सबसे बढ़िया बात यह है कचौड़ीमल जी कि महाराज जी न बीस पंथ का पक्ष लेते हैं न तेरह पंथ का, बस वे तो आगम व्याख्या करते हैं। सभी पंथ वाले मुनिश्री का प्रवचन सुनने आते हैं और श्रद्धा भाव रखते हैं।

इनके स्वाध्याय में इतनी गहराई है कि बिल्कुल तत्त्व निष्पक्ष रूप से साफ-सुथरा हो जाता है। अरे जी ये ब्रह्मचारी कहाँ से आये ? अरे मूलचन्द्रजी ! ये ब्रह्मचारी दक्षिण भारत से आए हैं । ये पहले जयपुर में देशभूषणजी के पास रहते हैं जब में दर्शन करने गया आचार्यश्री के पास तब मेरा परिचय हुआ था। कल ही ये मेरे पास आए थे। स्तवनिधि से चले, इन्होंने

जो अपनी कहानी सुनाई उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए। ढाई दिन तक भोजन पानी नहीं लिया, कल मैंने सबसे पहले इनका भोजन कराया। भोजन करते समय न कोई मीन-मेख निकाली न ही सिर ऊपर किया।

मूलचन्द्र तो ब्रह्मचारी जी आचार्य देशभूषण जी को छोड़कर क्यों आए ? कजौड़ीमल जी ने कहा-मूलचन्द्रजी मैंने इनसे पूछा, हिन्दी तो इन्हें पूरी नहीं आती पर इन्होंने मुझे बता दिया। स्तवनिधि में ये रहते थे तो सदलगा के परिवार जन पुरजन जब देखो तब मिलने आ जाते थे जिससे मुझे व्यवधान होता था। पढ़ाई नहीं हो पाती थी। जैन सिद्धांत प्रवेशिका जयपुर में इन्होंने पढ़ना शुरु की थी जिससे इनकी विद्या के प्रति तड़फन पैदा हुई। संयोग की बात है आचार्य देशभूषणजी का विहार जयपुर से श्रवणबेलगोला की ओर हो गया। विहार में ब्रह्मचारी जी ने साइकिल पर सामान ढोया। सभी व्यवस्थायें बनाई और संघ की वैयावृत्ति करने में ही पूरा समय लग जाता था। इससे मन की पढ़ने की इच्छा और बढ़ती गई। स्तवनिधि में इन्होंने आचार्य देशभूषण के सामने अपने मन की बात रख दी। आचार्यश्री मेरी पढ़ने की इच्छा है। तो आचार्य देशभूषण जी ने कहा कि ब्रह्मचारी जी तुम्हें साधना करना है तो मेरे पास रहो, अगर स्वाध्याय करना है तो एक ठिकाना है अजमेर में मुनि ज्ञानसागर महाराज जो पहले पंडित भूरामल थे उनके पास चले जाओ, आचार्य महाराज जी आज्ञा लेकर ये ब्रह्मचारी जी स्तवनिधि से मुंबई आए, इनके पास थर्ड क्लास का टिकिट था और फर्स्ट क्लास के प्रतिक्षालय में बैठ गये तो रेलकर्मियों ने उठाकर इनको थर्ड क्लास भिजवा दिया। ये मुंबई से चलकर अजमेर में स्टेशन से पूंछ पांछकर मेरे घर तक आ गये। मैंने हाल-चाल जाना जब मुझे ये मालूम चला कि ब्रह्मचारी जी ढाई दिन से निर्जल हैं। तब मैंने कहा कि आप स्नान ध्यान करके भोजन करें फिर हम आपको मुनि ज्ञानसागरजी के पास ले चलेंगे (मूलचंद्रजी ने कहा)

मूलचन्द्रजी ने कहा ये आपके घर तक किस प्रकार पहुँचे क्या इन्होंने आपका घर देखा था। कजौड़ीमल ने कहा इन्होंने किसी से ज्ञानसागरजी के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि ये तो नहीं पता कि ज्ञानसागर कहाँ है लेकिन उनके एक भक्त यहाँ रहते है तो पहले आप उनसे बात कर लो। वही आप को गुरुजी तक ले जाएंगे।

कजौड़ीमल ने कहा ये ब्रह्मचारी जी अकेले कहाँ भटकेंगे, मुझे भी गुरु चरणों में आना था। ब्रह्मचारी जी से बातचीत हो जाएगी। आचार्य देशभूषण जी का भी हालचाल हम जान लेंगे, क्योंकि दक्षिण भारत तो हम जा नहीं पाएंगे।

मूलचन्द्रजी ने कहा क्यों कजौड़ीमलजी ब्रह्मचारी जी को ढाई दिन से भोजन क्यों नहीं मिला, मुंबई में भोजन करके फिर चले आते। कजौड़ीमल जी ने कहा अरे भाई ये सात प्रतिमाधारी हैं। रेल में शुद्ध भोजन की व्यवस्था

कहाँ मिलती है और संकोची भी हैं। स्तवनिधि से आहार सामग्री भी नहीं ली होगी ।और किसी ने भी ध्यान नहीं दिया होगा।

कि इतना लम्बा सफर ब्रह्मचारी जी के लिये कुछ तो व्यवस्था कर देते मूलचन्द्रजी ने कहा आज समाज की यही विडम्बना है गुरु भक्त तो बनते हैं , चारित्र की उज्ज्वलता की बात करते हैं, परन्तु अपने कर्तव्य पर कोई ध्यान नहीं देते । इतने बड़े संघ से ब्रह्मचारी इतनी दूर यात्रा पर निकला, किसी भी श्रेष्ठी श्रावक ने जरा भी ध्यान नहीं दिया । ये तो युवा ब्रह्मचारी है जो दो दिन के उपवास सहन कर गए, अगर कोई वृद्ध ब्रह्मचारी होता तो उसका क्या होता। खैर कोई बात नहीं अपना ब्रह्मचारी जी का गुरुजी से परिचय कराते हैं।

मूलचन्द्रजी ने कहा ब्रह्मचारी जी आपका नाम क्या है । धीमी आवाज में उत्तर आया विद्याधर मूलचन्द्रजी ने अपनी रौबदार आवाज में कहा आप कहाँ के रहने वाले हो, आवाज आई सदलगा।

कजौड़ीमलजी ने कहा यहीं सब परिचय ले लेंगे । अपन गुरु से परिचय कराते हैं । कजोड़ीमल, मूलचन्द्र, ब्रह्मचारी विद्याधर जी मुनिश्री ज्ञानसागरजी के पास पहुँचते हैं, सब मुनि श्री को एक स्वर में नमोस्तु कहते हैं- मुनिश्री अपने चश्में को कुछ ऊपर करके हाथ उठाकर अभय मुद्रा से धीरे से आशीर्वाद करते हैं और कुछ सेकण्ड के लिए कृपा दृष्टि तीनों पर डालते हैं। कजौड़ीमल जी ने कहा महाराज श्री ये ब्रह्मचारी जी आचार्य देशभूषण जी के पास से आए है। मुनिश्री कहा अच्छा आप। ब्रह्मचारी जी क्या नाम है आपका ? धीरे से विनम्र शब्दों में कहा - 'विद्याधर' मुनिश्री ज्ञानसागरजी ने कहा आपके आने का प्रयोजन। विद्याधर ने अपना सिर दोनों हाथों के बीच में रखकर, जमीन से टिका दिया और कहा गुरुवर हम आपके चरण शरण में पढ़ने आए है, मुनिश्री ज्ञानसागर जी ने गहरी सांस लेकर कहा - पढ़ लेना भैया तुम भी पढ़ लेना । बहुत ब्रह्मचारी आए हैं उन्होंने पढ़ा है लेकिन रुका कोई भी नहीं है। ब्रह्मचारी तो विद्याधर होते हैं और आपका नाम ही विद्याधर है । कब उड़ जाओगे कोई भरोसा नहीं है।

विद्याधर ने हाथ जोड़कर कहा मुनिश्री आज से मेरा आजीवन, वाहन, रेल का त्याग है। बस आपकी चरण शरण की, शरण मिले। ज्ञानसागर महाराज जी ने एक बार विद्याधर को फिर देखा इतना बड़ा त्याग एक ही झटके में, देखकर अवाक रह गए। उन्होंने कहा मेरे कहे अनुसार चलते रहोगे तो कुछ ही दिनों में तुम्हें विद्यानंदी बना दूंगा। बस निरन्तर अभ्यास बना रहे। विद्याधर की आंखों में पानी झलक गया । थोड़े से भावुक मुनि ज्ञानसागरजी भी हुये और विद्याधर के सिर पर अपना हाथ रख दिया। दोनों गुरु-शिष्य की भावनाओं का सम्प्रेषण हुआ। आखों ही आँखों में दोनों ने एक दूसरे को समझा और महाराज आहार के लिये शुद्धि करने चले गये और सारे श्रावक मुनि श्री को आहार देने के लिये अपनी-अपनी तैयारी में लग गए। रोज की दिनचर्या का

क्रम स्वाभाविक रीति से चलने लगा। बचपन से ही गुरुओं की सेवा में लगे विद्याधर ने अपनी सेवा का हाथ ज्ञानसागर जी की ओर बढ़ाया। सतत् सेवा कार्य और अध्ययन कार्य में विद्याधर ऐसे लगे कि उन्हें देखकर कई लोग दंग रह गए।

मूलचन्द्र लुहाड़िया जी रोज ब्रह्मचारी विद्याधर के आस-पास ही स्वाध्याय करने बैठते थे । अपनी तिरछी नजरों से विद्याधर की गतिविधियाँ देखा करते थे उनकी गतिविधियाँ देखकर ऐसा लगता था कि ब्रह्मचारी जी बहुत होनहार है । कभी-कभी मुनि ज्ञानसागरजी कजौड़ीमलजी से पूछते रहते थे कि ब्रह्मचारी जी कुछ पढ़ते-लिखते हैं या पैर फैलाकर सो जाते हैं। गुरुवर के प्रश्न से कजौड़ीमल जी सतर्क हुए और उन्होंने उन पर ध्यान देना शुरु किया और वे अवाक् रह गये कि ब्रह्मचारी जी रात में जब देखो तब उन्हें पढ़ते ही नजर आए। जब उनकी नींद खुली तब उनने ब्रह्मचारी जी को अध्ययनरत ही देखा। कजौड़ीमल ने अपने गुरु को बताया कि ब्रह्मचारी जी एक बजे रात तक पढ़ते हैं। प्रातः साढ़े चार बजे फिर उठकर सामायिक आदि करके फिर पढ़तेहैं . कजौड़ीमल की बात सुनकर ज्ञानसागजी की खुशी स्वाभाविक ही थी। पंडित महेन्द्रकुमार पाटनी से भी विद्याधर ने पढ़ना शुरु किया वे कातंत्र रूपमाला पढ़ते थे। छंद शास्त्र का भी अध्ययन किया बचपन से होशियार कुशाग्र बुद्धि वाले विद्याधर ने अपनी विद्या की तलाश इतनी बढ़ा दी कि उनकी विद्या की तड़फन बिन्दु से सिंधु की ओर बढ़ गई। देखते ही हिन्दी और संस्कृत की ललक एक विद्वान के सांचे ढलने लगी।

और विद्याधर ने कई ग्रन्थों को आत्मसात कर लिया। अजमेर में जब ज्ञानसागर महाराज जी ने तत्त्वार्थ सूत्र सुनाने को कहा, ब्रह्मचारी विद्याधर ने वहीं तत्काल बैठकर दस अध्याय सुना दिये। जिसमें अक्षर, पद, मात्रा, स्वर, रेफ, व्यंजन की शुद्धियाँ स्पष्ट सुनाई दे रही थी। तब ज्ञानसागरजी ने कहा जिसके पास विद्या की तड़फन होती है। वही इस तरीके से शुद्ध ग्रन्थ का पाठ कर सकता है। ■

आचार्य नित्यानंदजी सूरी का संयम अर्द्धशताब्दी महोत्सव 2 जुलाई से

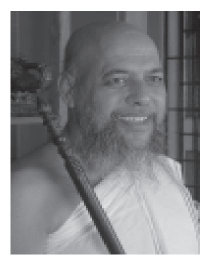

नई दिल्ली । शांतिदूत एवं जैन समाज के शीर्ष गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् नित्यानंद सूरीश्वरजी के संयम अर्द्धशताब्दी महोत्सव का भव्य वार्षिक आयोजन 2 जुलाई 2017 को नई दिल्ली से प्रारम्भ होगा। एक वर्ष तक चलने वाले इस महोत्सव का शुभारंभ तालकोटरा स्टेडियम में होगा जिसमें अनेक केन्द्रीय मंत्री, विशिष्ट राजनेता, संतपुरुष साहित्यकार आदि भाग लेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्रीय खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रामविलास पासवान को बनाया गया है। ■

मूकमाटी : मृण्मय से चिन्मय तक

अभी कुछ दिनों पूर्व जब आचार्यश्री विद्यासागरजी से मेरी पहली मुलाकात हुई तो मुझे उनका हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम देखकर बहुत अच्छा लगा। किन्तु जब मैंने उनका महाकाव्य 'मूकमाटी' पढ़ा तो मुझे यह तय करना मुश्किल हो गया कि उनका भाषा प्रेम अधिक है या भाषाधिकार। यह एक बड़े आनंद का प्रसंग है कि विद्यासागर जी सहित बहुत से जैनाचार्यो को मैंने बहुत ही रचनात्मक, बहुत ही सृजनशील होकर साहित्य और कविता की सेवा करते हुए देखा है और मैं यह कह सकता हूँ कि अनुपातिक रूप से जितनी रचनाधर्मिता (क्रिएटिविटी) उन्होंने दिखाई है। समकालीन भारत में किसी और पंथ के मत ने नहीं दिखाई मुनि क्षमासागरजी की कविताएं मुझे याद आती हैं। ज्ञानसागरजी ने संस्कृत में चार महाकाव्य लिखे। मुनि मधुकर जी की 'गुंजन' या 'स्वर गूंजे निर्माण के' जैसी काव्य कृतियाँ। मुझे कई बार आश्चर्य होता है कि इन जैनाचार्यों की इतनी रागमुक्ति, इतनी वीतकामना, इतनी विरति, इतनी अनीहा के बाद भी इतनी रस-राशि इनकी कविता में कैसे उतर आती है ? विद्यासागरजी की यह महाकविता जिसका नाम 'मूकमाटी' है, को पढ़ते हुए मुझे लगा कि उन जैसे निरस्तराग, उन जैसे विरजस्क, उन जैसे जितसंग, उन जैसे निवृतात्मा ने कैसे सम्मोहित करने वाली कृति लिखी है। एक बार आरम्भ करो तो फिर आप उसकी वशिमा से छूट ही नहीं पाते। क्या यह कुछ फ्रेंच मनोवैज्ञानिक कुएं के 'लॉ आफ रिवर्स इफेक्ट' जैसा कुछ है कि जो तुरायण को प्राप्त कर गया उसी ने तृषा को जाना, कि जो कैवल्य पर पहुंचा उसी ने कोशिश की क्रीड़ा पहचानी।

आस्था और संस्कार चैनल पर प्रतिदिन हम विद्वान संतों को प्रवचन आम जनता को देते हुए देखते हैं, प्रायः वह व्याख्या, टीका और भाष्य होता है और मैं उसकी कोई अवगणना भी नहीं करना चाहता, उसका भी उपयोग और महत्व है लेकिन कई बार वह लोएस्ट कॉमन डिनोमिनेटर प्रोग्रामिंग है। वह सर्जना नहीं है। किसी कला-कृति को अस्तित्व में लाना एक अलग ही तरह का प्रसव है और प्रसव व प्रसंस्करण में फर्क होता है। उस रचना समय की विधायकता हमें किसी हद तक सृजनहार के प्रकोष्ठा में ला खड़ा करती है। किसी काव्य का सृष्टा अपनी रचना से उस एक ऋण को किसी हद तक उतारता है जो इस सृष्टि में उसे लाने वाली माँ का ऋण है। वह रचयित्री हमारे कृतित्व से ही अपने चरणों में किसी आभार-पुष्प की छुअन महसूस करती हैं।

बहरहाल मैंने बात जिससे शुरु की थी, उस पर आऊं। बात थी कि नए युग में गुरू सर्जन में नहीं, अर्जन में व्यस्त हैं। उन्हें सेलेब्रिटी स्टेट्स है और उनका मीडिया प्रमोशन भी असाधारण है। यह एक डिजाइनर रिलीजन का दौर है। लेकिन जिसे कविता कहते हैं, वह उन्हें उपलब्ध नहीं है। जिसे शक्तिशाली भावनाओं का स्वतः स्फूर्त उच्छलन कहते हैं, वह उन्हें उपलब्ध नहीं है। सहृदय की रस-निष्पत्ति अध्यात्म के बाजार की रसकेलि और रसरंग से कुछ दूसरी ही चीज है। आचार्यश्री

जी की यह महाकविता इन सबके बीच एक अलग ही रस-भूमि पर खड़ी है बल्कि जैसा कि इस कविता-पुस्तक का नाम और विषय वस्तु है। यह भूमि का रस बताने वाली कृति है। 'मूकमाटी'। आचार्यश्री ने इस पुस्तक में रस-चर्चा भी सविस्तार से की है। उन्होंने इन काव्य-रसों की शक्तियां और सीमाओं पर एक बिल्कुल अलग ही अंदाज में चर्चा की है जो रस-सिद्धांत शास्त्रियों के लिए भी सर्वथा अनूठी घटना है। खेदभाव और वेद-भाव, रूद्रता और भद्रता, अभय और भय, संगीत और संगातीत, विषय-लोलुपिनी और विषय-लोपिनी करुणाएं जैसी अनेक ऐसी उद्भावनाओं को वे सामने लाए हैं कि रसशास्त्र के इतिहास में एक नई लकीर खिंच गई है। अध्यात्म का वाणिज्यीकरण करने वाले रस के इस विवेचन से दूर हैं। यह रस मन के निर्माल्य से उपजता है। कविता सुखासक्ति में संभव नहीं होती। वह तो विद्यासागर जी जैसे आत्मजयी और विगतस्पृही संत के निर्विण्ण अनुभव का प्रसाद है। एक तपः पूत हृदय का। मुझे याद पड़ता है कि चार्ल्स बोदलेयर ने 'पाप का पुष्प' (फ्लावर्स ऑफ ईविल) नामक कविता पुस्तक लिखी थी। आचार्यश्री की यह कृति उसके ठीक दूसरे ध्रुवांत पर है। यह पुण्य-पुष्प है।

जिसके मन में एक योगारूढ़ नीरवता हो, जिसके मन में एक संयतात्मा की प्रशांति हो, जिसकी शांतचित्तता दुनिया पर हावी दुनियादार शोरोगुल के छद्म को भेद चुकी हो, जिसका मन एक महामौन के अतल में नित्यस्थ हो, सिर्फ वही मूक की आवाज को सुन सकता है। सिर्फ वही व्हाइलेस की व्हाइस बन सकता है। 'मूकमाटी' दरअसल म्यूट मारी है। उनकी आवाज जो स्पीचलेस है, जो इनआर्टिकुलेट हैं, जो tounge-tied है, जिनके शब्द के भीतर ही घुटकर रह जाते हैं, जिन पर सदियों की चुप्पी आई हैं, जिनके संताप का सम्प्रेषण नहीं हुआ है-उनकी आवाज इस महाकाव्य में हैं। आज के युग में जबकि एफ.एम. रेडियो और कमर्शियल चैनल्स वर्बल डायरिया के शिकार हैं, जहां शब्द इतनी रफ्तार और इतनी डेसिबल के साथ हवा में उछाले जा रहे हैं जितने कि मानव इतिहास में पहले कभी नहीं-ऐसे में भी एक बड़ा वर्ग है जो अपनी आवाज का प्रतिनिधित्व कहीं नहीं पाता। एक साइलेंस्ट मेजोरिटी, एक जमीन से जुड़ा खामोश बहुमत, जो एक unpronounced existence में, एक नीरव अस्तित्व में किसी तरह दिन काट रहा है, जिसे चुप कर दिया गया है -यह महाकाव्य प्रकृति में एक तत्व की मूकता के माध्यम से उसी की व्यथा-कथा को प्रतिबिम्बित करता है। आवाज आजकल हमारे समय और समाज की शक्ति-संरचना को प्रतिबिम्बित करती है। जिसकी आवाज जितनी ज्यादा उभर के आ रही है, वह इस पॉवर स्ट्रक्चर में उतना ही प्रमुख है। और जो धूल-धूसरित है, वह इस बेबेल्स टॉवर में, इस चंडूखाने में दो बोल उचारने का भी अधिकारी नहीं। यही इस कृति के कवि के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती हैं - **'अव्यक्ता को अभिव्यक्ति देना'**। वह जो यंत्रणाओं के बीच भी खामोश है। कवि विद्यासागरजी के शब्दों में यातनाएं पीड़ाएं ये/कितनी तरह की वेदनायें/कितनी और आगे/कब तक... पता नहीं/इनका छोर है या नहीं/घुटन छुपाती छुपाती/...... घूंट पीती ही जा रही हूँ/केवल कहने को/जीती

ही जा रही हूँ।

आचार्यश्री के धर्म-प्रवण से कोई यह न समझ ले कि उनके धर्म के प्रति साफ्ट कॉर्नर है। वे अपने आब्जेक्टिविटी को पूरी हद तक निभाते हैं । जिस तरह से तुलसीदास ने अपने मानस में देखा कि **''जे जनमे कलिकाल कराला, करतब बायख भेख मराला । बंचक भगत कहाई राम के, किंकर कंचन कोह काम के ।।''** उसी तरह से आचार्यश्री भी यहाँ कहते हैं **''कहाँ तक कहें अब । धर्म का झंडा भी डंडा बन जाता है, शास्त्र शस्त्र बन जाता है, अवसर पाकर और प्रभु स्तुति में तत्पर सुरीली बाँसुरी भी, बांस पन पीट सकती है । प्रभु-पथ पर चलने वालों को, समय की बलिहारी है ।''** तुलसी का कलिकाल यहाँ समय बनकर आता है लेकिन महत्व की बात है कि ये दोनों ही कवि अपने दौर की धार्मिक विद्रूपताओं की निर्मम पड़ताल करते हैं। धर्मधुरीण होने के कारण वे किसी आत्म प्रवंचना में नहीं उलझते।

मित्रों, इस वर्ष हम सबने कुंभ का पर्व देखा है उज्जैन में सिंहस्थ के दौरान। इतनी जानकारी तो सबको है कि कुंभ माटी से बनता है। किन्तु कुंभ होता तब है जब माटी में अमृत आन मिले। माटी की विनम्रता को अमृत के आत्मविश्वास का जब साथ मिलता है तब कल्पवृक्ष के फूल झरते हैं और पारिजात के भी। इस महाकाव्य में यही हुआ है, माटी को अमृत का साथ मिला है। कवि की कल्पना के कल्प-तरू से बहुत से पुष्प गिरे हैं और इस माटी की उर्वरता को धन्यता मिली है। हम प्रायः 'सन ऑफ द साइल' की बात करते आए हैं, लेकिन यहाँ कोई है जो माटी को भी बेटा कहकर बुलाता है। स्नेहसिक्त स्वर में । माटी को शायद इतने ही सांत्वनादायक सम्बोधन की आवश्यकता थी। माटी स्वयं भी बड़े स्निग्ध और संयत तरह से कुंभकार से संवाद करती है जो कबीर की उस माटी की मुंहफट्ट और किसी हद तक उजड्ड लगने वाली शैली के ठीक विरोध में है जहाँ **'माटी कहै कुम्हार से/तू क्या रौंदे मोय/एक दिन ऐसा होयगा मैं रौदूंगी तोये।''**

इस महाकाव्य में भौतिक कार्य-व्यापार बहुत नहीं है। रामायण और महाभारत जितने हैपनिंग हैं, जितने ढेरो ऐपिसोड्स से भरे हैं, जितने एडवेंचर्स और मूवमेन्टर्स वहाँ हैं उनकी तुलना में यह महाकाव्य तथावस्तु और घटनाओं से अधिक से अधिक निरपेक्ष हैं । स्वयं इस महाकाव्य में ही आचार्यश्री ने इसे स्पष्ट भी किया है। **''मैं यथाकार बनना चाहता हूँ / व्यथाकार नहीं/ और/ मैं तथाकार बनना चाहता हूँ/ कथाकार नहीं/इस लेखनी की यह भी यही भावना है/कृति रहे, संस्कृति रहे।''** भौतिक जगत् के विराट घटना-चक्र की स्थूलताओं को जयशंकर प्रसाद की कामायनी में भी उतना महत्व नहीं दिया गया था। वहां उन्हें मनोविज्ञान ने प्रतिस्थापित किया था, यहां दर्शन ने। लेकिन दर्शन के भी अपने एडवेंचर हैं। कौन कह सकता है कि जब माटी आग से गुजरती है तो वह उसका एडवेन्चर नहीं हैं ? फ्रांसिस बेकिन को यही तो आश्चर्य था कि एक ही आग है जो मोम को गलाती है और माटी को हार्डन करती है । आचार्यश्री के शब्दों में : **''तन और मन को/ तप की आग में/तपा-तपा कर/जला-जला कर/राख करना होगा/यत्न घोर करना होगा/**

तब कहीं चेतन-आत्मा खरा होगा।'' जिस तरह से ऋग्वेद की प्रथम ऋचा ही अग्नि पर है, उसी तरह से माटी से बने कुम्भ को भी अग्नि का महत्व समझना है । आचार्यश्री कहते हैं - कुंभ की पहली दृष्टि पड़ी/निर्विकार निर्धूम अग्नि पर/दूसरी दृष्टि के लिए/दूसरा दृश्य ही नहीं मिला। दृष्टा ने दृष्टि को और दौड़ा दिया। एक ही दृश्य मिला चारों और फैला। अग्नि... अग्नि... अग्नि। सो यही नहीं कि माटी की पुत्री भूमिजा सीता की ही अग्नि परीक्षा होती है बल्कि यह महाकाव्य प्रमाण है कि वह स्वयं माटी को भी इस अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ता है। वहाँ ऐसा नहीं है कि रत्नों को देकर भी माटी निरी माटी ही रही। वहाँ तो माटी का भी 'ईवोल्यूशन' हुआ-विकास हुआ और वह कुम्भ बन गई। उसकी दृष्टि में इन अनुभवों से सुधार हुआ। पहले तो माटी को कुम्भकार के चके पर चक्कर आते थे। फिर आचार्यश्री ने इस संदर्भ में कुछ विशेष महत्व के संकेत किए हैं : **''हाँ हाँ/ तुम्हें जो चक्कर आ रहा है/उसका कारण कुलाल-चक्र नहीं /वरन् तुम्हारी दृष्टि का अपराध है यह/क्योंकि परिधि की ओर देखने से/चेतन का पतन होता है/और परम केन्द्र की ओर देखने से/चेतन का जतन होता है।''** आचार्यश्री जो पार्थिव है, उससे दर्शन और अध्यात्म के निरवयव, निराकार, निरयाम रहस्यों को खोलते हैं। इस माटी को कवि प्रकृति के एक तत्व की तरह नहीं देखता, वह उसे भी संबंधों का विस्तार देता है। यह माटी किसी की बेटी है, किसी की माँ। धरती उसे कहती है : सत्ता शाश्वत होती है बेटा !/प्रति-सत्ता में होती है/अनगिन संभावनायें/उत्थान-पतन की। कंकर उसे कहते हैं: 'ओ मानातीत! मार्दव-मूर्ति, माटी माँ! एक मंतर दो इसे/जिससे कि यह हीरा बने /और खरा बने कंचन -सा'' सो यह मुझे दिलचस्प लगा कि जो इतना निस्संग है, निहंग है, गतसंग है-वह उन जगहों में रिश्तों को, नातों को, संबंधों को खोज ले रहा है जहाँ आम सांसारिक आदमी की, दुनियावी इंसान की दृष्टि भी नहीं जाती। यह आचार्यश्री के किसी अंत पुरुष की ही पर्येषणा है। इसकी सिद्धि शास्त्र और दर्शन की मोटी-मोटी किताबों से नहीं होती, यह तो अपनी संवेद्यताओं के परम विकास की ही फलश्रुति है। यह अपने अस्तित्व और अहंता के फ्रन्टीयर्स से बाहर आने पर ही संभव होता है। पुद्गल की वर्गणाओं में न उलझते हुए भी उसके विभव पर इतनी प्रामाणिक दृष्टि रखना आचार्यश्री की तपश्चर्या की चरम परिणति है।

पुद्गल का विभव। पुद्गल का पोटेन्शियल। जयशंकर प्रसाद अपनी कृति 'विशाख' में कहते हैं : **'रत्न माटी में से ही निकलते हैं। स्वर्ण से जड़ी हुई मंजूषाओं ने तो कभी एक रत्न भी उत्पन्न नहीं किया।'** आचार्यश्री माटी से निकले रत्नों की बात अपने इस माटी-महिमा-मंथन में नहीं कर रहे हैं। वे स्वयं माटी के उन्नयन और विकास यात्रा की बात कर रहे हैं।

कई बार आचार्यश्री की इस महाकविता में शब्द लिखे कुछ दूसरे प्रसंग में गए हैं, लेकिन वे अपने प्रसंग की परिधि को लांघकर आज ज्यादा प्रासंगिक लगते हैं। यह पुस्तक तो आज से कई दशकों पूर्व लिखी गई थी लेकिन इसकी ये पंक्तियाँ देखकर मुझे लगा कि इन्हें अभी 29 सितम्बर के बाद लिखा गया है-**''अब चारों**

ओर से घिर गया आतंकवाद/जहाँ देखों वहाँ सर्वत्र/यह प्रथम घटना है कि आतंकवाद ही/स्वयं आतंकित हुआ/पीछे हटने की स्थिति में है वह/काला तो पहले से ही था वह/काल को सन्मुख देखकर/और काला उसका मुख !'' यह एक श्रेष्ठ कविता की निशानी होती है। उसके शब्द समय की वादियों में बहुत देर तक, बहुत दूर तक गूंजते हैं।

इस एपिक पोएम को फ्री वर्स में लिखा गया है। मुक्त छंद में इसे लिखने से रचनाकार ने इसमें काफी छूटें ले ली हैं। सो आपको इसमें गणितीय अंकों के जादू पर, नौ और निन्यानवे पर भी गैर-काव्यात्मक लगने वाली चर्चा मिल जाएगी क्योंकि मुक्त छंद इस तरह की चीजों को ज्यादा सहिष्णुता से अकॉमोडेट कर लेता है। मुक्त छंद एक ओपन फार्म और पोएट्री है। सो आचार्यश्री ने इस ओपन फार्म का पूरा लाभ उठाया है और उन्हीं के इस पुस्तक में बताए एक सूत्र के अनुसार इस लाभ से भला ही हुआ है। **हेनरी बी. फुलर ने मुक्त छंद को न तो कविता कहा और न गद्य। उन्होंने इसे दोपहर और मध्यरात्रि के बीच संध्या की सीमाभूमि कहा। ये कविता इसी बार्डरलैंड ऑफ डस्क की कविता है। बल्कि मैं थोड़े संशोधन के साथ कहूंगा कि यह बार्डर लैंड ऑफ डॉन की कविता है। भोर-भूमि की। और संशोधन करके कहूंगा कि यह विभोर-भूमि की कविता है।**

और यह एक प्रलंब कविता है। **लॉग पोएम।** मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' कविता की तरह लंबी। पेट्रिशिया हिल कहती थीं कि Life is too short to write long poems की जीवन इतना छोटा है कि लम्बी कविताएं नहीं लिखी जा सकतीं। लेकिन आचार्य विद्यासागर जी तो उस 'विश्वास-पम्परा' स ज्ञान-प्रणाली के हैं जो जीवन की सनातनता का सम्मान करती है। अतः एपिक पोएम लिखना उनके लिए उचित ही था। आचार्यश्री ने ठीक ही इसे एपिक या महाकाव्य न कहकर एपिक पोएम कहा है। सो महाकाव्य की बाउंड्रीज पर इसके पुश और पुल बड़े दिलचस्प बन पड़े हैं।

और आचार्यश्री कवि-स्वभाव के हैं, इसका प्रमाण शब्दों के साथ उनकी क्रीड़ा और कौतुक में बार-बार दिखता है। वातानुकलता और वातानुकूलता राख-खरा, याद-दया, कृपाण-कृपा न, कम बल-कम्बल, नमन- नम न जैसे शब्दों से ही उनका नया अर्थ संदर्भ निकालना, कुमारी-स्त्री-सुता-अबला-नारी जैसे शब्दों की नई व्याख्याएँ शब्द से ही extract कर लेने जैसे बहुत से प्रयोगों से linguistic fossils मैं भाषाई जीवाश्मों में एक कौतुकार्थ के प्राण फूंकते हैं। वे set phrases को अपनी नई तरह की word pairing से unsettle कर देते हैं। वे शब्द से ही तर्क की रोचक कमाई करते हैं, और अपनी ही अनंत आवृत्ति से थक गए शब्दों को ऊर्जावान-सा करते हैं। इसमें कुछ अटपटा लगे भी तो क्या। क्या जेम्स ज्वायस के उपन्यास finnegans wake (1939) के तीसरे पैराग्राफ में भी ऐसे ही प्रयोग नहीं मिलते ? आपके लगता है कि वह उपन्यास था और यह कविता है। तो निराला के 'ताक कमसिन वारि' से लेकर प्रयोगवाद और अकविता के अनुभवों के बारे में क्या कहेंगे ?

सो जिसका जीवन कविता हो गया, उसकी कविता जीवनदायिनी हो ही जाती है। ■

शोध सम्भावनाओं से भरा जैन साहित्य

• **स्व. डॉ. कपूरचंद जैन**, खतौली •

जैन साहित्य, संस्कृति, कला, पुरातत्व, आगम, न्याय, दर्शन, पुराण, योग, गणित, राजनीति, समाजशास्त्र, भूगोल, शिक्षा, अर्थशास्त्र, कर्मविज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, नीतिशास्त्र, आचार शास्त्र आदि अनेक-अनेक विषयों पर विपुल जैन साहित्य उपलब्ध हैं। जिसमें अपरिमित शोध सम्भावनायें हैं। इतना ही नहीं हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, मराठी, कन्नड़, राजस्थानी तमिल-तेलुगु आदि-आदि भाषाओं में जैन साहित्य रचा गया है। यहां तक कि उर्दू भाषा में भी जैन साहित्य लिखा गया था। अंग्रेजी भाषा में भी पर्याप्त जैन साहित्य उपलब्ध है।

इस प्रकार अनेक भाषाओं में, अनेक विषयों पर अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से भी ये एक से बढ़कर एक हैं। पर विडम्बना है कि कितने लोग जैन साहित्य को जानेत हैं ? आज आवश्यकता है ऐसी कार्य योजना की जो जैन साहित्य और शोध के विकास में सहायक बने। श्वेताम्बर समाज के विश्व भारती (लाड़नू) पारसनाथ विद्या शोध संस्थान (वाराणसी) एल. डी. इंस्टीट्यूट अहमदाबाद, बी.एल. इंस्टीट्यूट (दिल्ली जैसी अनेक संस्थायें) हैं जो शोध कार्य के लिये समर्पित हैं। कुछ प्रमुख शोध संस्थायें हैं - श्री गणेशप्रसाद वर्णी शोध संस्थान (वाराणसी), जैन विद्या संस्थान (श्री महावीरजी) अपभ्रंश अकादमी (जयपुर), श्री कुन्दकुन्द भारती (नई दिल्ली) कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ (इन्दौर), श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध केन्द्र (आगरा), नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्राकृत स्टडीज एण्ड रिसर्च (श्रवणबेलगोल), प्राकृत अहिंसा जैनागम शोध संस्थान (वैशाली), श्रुत सिद्धांत शोधपीठ, पंचबालयति मंदिर, इन्दौर आदि आदि।

20-21वीं सदी में विपुल मात्रा में जैन साहित्य का प्रकाशन हुआ विशेषतः पिछले 20-25 वर्षों में अनेक सुंदर आकर्षक और गुणात्मक पुस्तकें बाजार में आयी हैं पर यदि शोध प्रबंधों के प्रकाशन की दृष्टि से देखें तो कम ही शोध प्रबंध प्रकाशित हुये।

जैन साहित्य में शोधकार्य उपाधि-निरपेक्ष और उपाधि सापेक्ष दोनों रूपों में हुये हैं। परन्तु यहां पर हम उपाधि सापेक्ष शोध की ही चर्चा करेंगे, क्योंकि उपाधि निरपेक्ष शोध का क्षेत्र विशाल है। उसका आंकलन ऐसे लघु निबंध में संभव नहीं। उपाधि सापेक्ष शोध से तात्पर्य ऐसे शोधकार्य से है जो किसी उपाधि की प्राप्ति हेतु किया गया हो। विभिन्न विश्वविद्यालय डी.लिट्., पीएच.डी. विद्यावाचस्पति, विद्यावारिधि, डी.फिल्, लघु शोध प्रबंध (एम.ए., एम.फिल डेजर्टेशन के रूप में) आदि शोध उपाधियों देते हैं। प्राकृत अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी भाषा में जैन विषयों पर अनेक शोध प्रबन्ध लिखे जा चुके हैं और लिखे जा रहे हैं।

जैन ग्रन्थ सदैव विद्वानों को आकर्षित करते रहे हैं। जहां एक और प्राचीन ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ वही गवेषणात्मक और तुलनात्मक ग्रन्थ भी विपुल मात्रा में प्रकाशित हुये। विडम्बना है कि जैन ग्रन्थों का कोई पूर्ण पुस्तकालय नहीं है। न ही जैन ग्रन्थों की समग्र सूची प्रकाशित हो सकी है। 50-60 पूर्व भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना ने यह कार्य प्रारम्भ किया था और प्रथम भाग जिनरत्न कोष के नाम से प्रकाशित किया था पर उसके आगे के भाग प्रकाशित नहीं हो सके। भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली ने विद्या सम्मेलन वाराणसी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 1968 में किया था और ज्ञान पीठ पत्रिका का अक्टूबर 1968 का अंक सगोष्ठी अंक के रूप में निकाला था जिसमें शोधकार्य और शोधरत छात्रों की सूची थी। पार्श्वनाथ विद्या श्रम शोध संस्थान ने भी एक सूची प्रकाशित की थी। डॉ. गोकुलचंद जैन वाराणसी ने भी एक सूची श्रमण विद्या अंक में छापी थी।

1988 में मैंने एक प्रोजेक्ट (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) के तहत शोध प्रबन्धों की सूची बनायी जो **प्राकृत** एवं **जैन विद्या शोध सन्दर्भ** नाम से प्रकाशित हुई। 1991 में इसका दूसरा संस्करण, 1993 में शोध सन्दर्भ परिशिष्ट और 2004 में तीसरा संस्करण प्रकाशित किया जिसमें भारतीय विश्वविद्यालय में हुए लगभग 1100 तथा विदेशी विश्व विद्यालयों में हये 131 शोध प्रबन्धों का परिचय दिया गया है। साथ ही शोध योग्य विषयों विश्वविद्यालयों प्रकाशकों आदि की सूची दी गयी है। लगभग 200 प्रबन्धों के विस्तृत परिचय में उनके प्रकाशक मूल्य पृष्ठ तथा अध्यायों के नाम दिये गये हैं। लेखक शोध प्रबन्धों के संकलन का भी कार्य कर रहे हैं।

वर्तमान में लगभग 68 विश्वविद्यालयों से प्राकृत एवं जैन विधाओं में शोध उपाधियां दी गयी है। इसके बाद भी जिस गति से शोध होनी चाहिये, नहीं हो रहा है। गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद में वर्ष 1993-94 अन्तर्राष्ट्रीय जैन अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गयी है। विद्यापीठ की प्रशंसा करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव ने अपने संदेश में कहा था कि विमिल धर्मों का ऐसा गहन अध्ययन जो दूसरे धर्मों के प्रति आदर की भावना सिखायें हमारी विरासत का भाग है। तथा महात्मा गांधी के संदेश का सार है जिन्होंने 1920 में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की थी .. .. प्राकृत भाषा और साहित्य, जैन दर्शन, जैन कला, जैन पाण्डुलिपि विज्ञान आदि का गहन अध्ययन-अध्यापन यहां होगा (University New (A weekly Magazine of A.I.U. 16.8.93)

विदेशों में स्व. आचार्य मुनि सुशीलकुमारजी के प्रयास से कोलम्बिया विश्वविद्यालय में एक जैन चेयर की स्थापना हुई है। मुनिश्री ने न्यूयार्क में एक अहिंसा विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। विदेशों

में लगभग 40 जैन सेन्टर जैन शोध को गति प्रदान कर रहे हैं।

जैन विद्या के प्रबंधों एवं उच्च स्तरीय ग्रन्थों को प्रकाशित करने वाली संस्थायें गिनी चुनी है आवश्यकता है कि जैन विद्या शोध प्रबन्धों का प्रकाशन हो। अभी तक हुये शोधकार्य का लगभग 20-30 प्रतिशत ही प्रकाशित है। जैन विद्या के विकास में जैन सिदधांत भास्कर (आरा), प्राकृत विद्या (दिल्ली), अनेकान्त (नई दिल्ली), तुलसी प्रज्ञा (लाड़नू) श्रमण (वाराणसी), जैन विद्या (श्री महावीर जी), अर्हत वचन (इंदौर), शोधादर्श (लखनऊ), जिनवाणी (जोधपुर), जिन मंजरी (कनाड़ा), जैन फर्नल (कलकत्ता), आदि पत्रिकायों क़ार्यरत है।

जैन विद्याओं के शोध पर आने वाला समय अनेक नवीन विषयों की विशेषताओं में लिये होगा। यद्यपि शोधकार्य आज भी बहुत मात्रा में हो रहे हैं। पर अध्ययन में गिरावट आ रही है। जैन विद्या, कला, संस्कृति, पाण्डुलिप, कवि विशेष, व्यक्ति विशेष आदि पर समय-समय अनेकशोध गोष्ठियाँ सेमिनार आदि आयोजित होते रहते हैं। आवश्यकता है एक ऐसे सेमिनार की जो अखिल भारतीय प्राच्य रिद्या कान्फ्रेन्स या भारतीय विज्ञान कांग्रेस के स्तर का हो और जिसमें सभी विधाओं पर चर्चा हो। भाग लेने वालों को बिना किसी गुट, वाद, क्षेत्र, उपसम्प्रदाय के भेद के आमंत्रित किया जाये। (21 वीं सदी में जैन विद्या शोध निबंध का सारांश) ■

यही युक्ति यही मुक्ति

आज ही कर ले,
कल ? नहीं आएगा,
ज्यादा नहीं थोड़े ही,
थोड़े से में ही सारा
'घट' भर जाएगा
आज जो कर ली
नादानी तो कल
ही फिसल जाएगा
अनमोल तू कौड़ी का
भी न रह पाएगा

इस तन में एक मन है.
जो मुझे भटकाता है,
जिसमें प्रभुत्व सामर्थ्य
भी है जल में अटकाता है
अपनी ही आत्मा से
इसी मन को मनाकर
सच्चे मन से पहचान
क्योंकि हकीकत में यही
युक्ति है इसी से मुक्ति है

• **इन्द्रकुमार जैन** 'शशीन्द्र' बाकलवाले, इन्दौर •

पेज 53 का शेष...

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोधकार्य

1. **डॉ. आशा मलैया (सागर 1984)**
   संस्कृत शतक परम्परा और आचार्य विद्यासागर के शतक
2. **स्व. डॉ. विमल कुमार जैन (दिल्ली)**
   महामनीषी आचार्यश्री विद्यासागर जीवन एवं उनका साहित्यक अवदान
3. **डॉ. बारेलाल जैन (रीवा)**
   हिन्दी साहित्य की सन्त काव्य परम्परा के परिपेक्ष्य में आचार्य विद्यासागर के कृतित्व का अनुशीलन
4. **डॉ. किरण जैन (सागर)**
   जैन दर्शन के सन्दर्भ में मुनि विद्यासागर के साहित्य का अनुशीलन
5. **डॉ. माया जैन (उदयपुर)**
   आचार्य विद्यासागर व्यक्तित्व एवं काव्यकला
6. **डॉ. नरेन्द्र सिंह राजपूत (पटेरा-दमोह)**
   संस्कृत काव्य के विकास में बीसवीं शताब्दी के जै न मनीषियों का योगदान
7. **डॉ. सुनीता दुबे (विदिशा)**
   आचार्य विद्यासागर की लोकदृष्टि और उनके काव्य का कलागत अनुशीलन
8. **डॉ. रामनरेश यादव (मैनपुरी)**
   हिन्दी साहित्य की संत काव्य परम्परा के परिप्रेक्ष्य में आचार्य विद्यासागर के साहित्य का मूल्यांकन
9. **डॉ. रश्मि जैन (बीना-सागर)**
   आचार्य विद्यासागर के साहित्य में उदात्त मूल्यों का अनुशीलन
10. **श्रीमती साधना सेठी (उज्जैन)**
    आचार्यश्री विद्यासागर महाराज का दार्शनिक चिंतन एक अनुशीलन
11. **डॉ. श्रीमती राजश्री जैन (नई दिल्ली)**
    सन्त कवि आचार्यश्री विद्यासागर की साहित्य साधना
12. **डॉ. रमाशंकर दीक्षित (अमरपाटन) सतना**
    आचार्यश्री विद्यासागर केन्द्रित प्रमुख शोध ग्रन्थों का अनुशीलन
13. **डॉ. रमेशचन्द जैन (भोपाल)**
    मूकमाटी महाकाव्य के प्रतीकों का वैज्ञानिक अध्ययन
14. **डॉ. भागचन्द भास्कर (नागपुर)**
    मूकमाटी चेतना के स्वर (डी.लिट्.)

15. **डॉ. चन्द्रकुमार जैन (राजनांदगांव छत्तीसगढ़)**
    आचार्यश्री विद्यासागर मूकमाटी का सांस्कृतिक अनुशीलन
16. **डॉ. संजयकुमार मिश्र (रीवा)**
    कामायिनी और मूकमाटी महाकाव्य का काव्य शास त्रीय अध्ययन
17. **डॉ. मीना जैन (भोपाल) औबेदुल्लागंज**
    मूकमाटी का शैलीपरक अनुशीलन
18. **डॉ. अमिता जैन (नई दिल्ली)**
    हिन्दी महाकाव्य परम्परा में मूकमाटी का अनुशीलन
19. **डॉ. सुरेन्द्र भारती (बुरहानपुर)**
    स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी जैन साहित्य और आचार्य विद्यासागरके समग्र साहित्य का अनुशीलन
20. **डॉ. अजितकुमार जैन (अलीगढ़)**
    आचार्य ज्ञानसागर एवं आचार्य विद्यासागर प्रणीत संस्कृत साहित्य में धर्म दर्शन एवं समाज का तुलनात्मक अध्ययन (डी.लिट्. कार्य जारी)
21. **डॉ. निधी जैन, ए.जैन देवा (इंदौर)**
    आचार्यश्री विद्यासागर के मूकमाटी महाकाव्य का अनुशीलन
22. **डॉ. शालिनी गुप्ता (सरगुजा, छ.ग.)**
    भक्ति काव्य के मूल्य और आचार्यश्री विद्यासागर के काव्य एक अनुशीलन
23. **डॉ. सुधीर जैन (सागर)**
    आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के साहित्य एवं भगवत गीता का तुलनात्मक दर्शन
24. **डॉ. सुशीला सालगिया (इन्दौर)**
    जैन विषय वस्तु से सम्बद्ध आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में सामाजिक चेतना
25. **डॉ. निधी गुप्ता**
    आचार्यश्री विद्यासागरजी के साहित्य में जीवन मूल्य
26. **डॉ. प्रशान्तकुमार जैन**
    आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास में आचार्यश्री विद्यासागर का योगदान
27. **डॉ. सपना जैन**
    आचार्यश्री विद्यासागर के शैक्षिक विचार : एक अध्ययन
28. **अनिल कुमार सिरवैया (भोपाल)**
    आचार्यश्री विद्यासागर का साहित्य एक अनुशीलन
29. **सुश्री साधना जैन (दमोह)**
    आचार्यश्री विद्यासागर मुनि प्रणीत संस्कृत रचनाओं में अध्यात्म दृष्टि (शोधरत)

30. श्रीमती सुरभि जैन (सतना)
आचार्यश्री विद्यासागर के हिन्दी काव्य में समाज दर्शन परम्परा नवीनता (शोधरत)

31. श्रीमती अलका द्विवेदी (नैनी) इलाहाबाद
महाकवि आचार्य विद्यासागर के हिन्दी काव्य ग्रन्थों का अध्ययन (शोधरत)

32. कु. सदावी जल्पा (मोटा वारमण अमरेली) गुजरात
मूकमाटी महाकाव्य में व्यक्त लोकोपयोगी विचार (शोधरत)

33. सुश्री संगीता जैन (दमोह)
आचार्यश्री विद्यासागर का बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व (शोधरत)

34. संतोषकुमार सिंह जामुनीपुर, अम्बेडनगर (उ.प्र.)
आचार्यश्री विद्यासागर कृत संस्कृत काव्य शतकों का अनुशीलन (शोधरत)

35. प्रदीप जैन शास्त्री, तारदेही (दमोह)
आचार्यश्री विद्यासागर संस्कृत कृतिनां समीक्षात्मक मध्ययनम् (शोधरत)

36. नवीन जैन (बीना-सागर)
जैनाचार्यश्री विद्यासागर कृत-संस्कृत साहित्येषु शैक्षिकत्त्वानुशीलम् (शोधरत)

37. श्रीमती अर्पणा जैन (बिलालपुर, छत्तीसगढ़)
जैनदर्शन और शैवदर्शन में साम्य तथा वैषम्य मूकमाटी और कामायनी के विशेष सन्दर्भ में (शोधरत)

38. श्रीमती मंजूलता जैन (नरसिंहपुर (म.प्र.)
आचार्यश्री विद्यासागर व्यक्तित्व एवं कृतित्व(अपूर्ण)

39. श्रीमती प्रभा सिंघई (बड़ागांव, टीकमगढ़)
आचार्यश्री विद्यासागर की हिन्दी साहित्य को देन (अपूर्ण)

40. रमेशचंद मिश्र (भोपाल)
मूकमाटी महाकाव्य के प्रतीकों का वैज्ञानिक विश्लेषण (लघु शोध प्रबंध, एम.फिल.)

41. संजय मिश्र (रीवार)
मूकमाटी महाकाव्य में रसों एवं बिम्बों का अनुशीलन (लघु शोध प्रबंध)

42. श्रीमती कृष्णा पटेल (रीवा)
आचार्य विद्यासागर और उनका काव्य एक अनुशीलन (लघु शोध प्रबंध)

43. सुशील यादव (रेवाड़ी)
आचार्य विद्यासागर विरचित पञ्चशति का साहित्यक मूल्यांकन (लघु शोध प्रबंध)

44. सुनीता देवी मिश्रा (अनूपपुर)
आचार्य विद्यासागर के दोहा दोहन एक अनुशीलन (लघु शोध प्रबंध)

45. विभा तिवारी, (गोविन्दगढ़ रीवा)
चेतना के गहराव में आचार्य विद्यासागर का काव्य चिंतन (लघु शोध प्रबंध)

46. श्रीमती प्रियंका बौद्ध (अमरपाटन, सतना)
आचार्य विद्यासागर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना (लघु शोध प्रबंध)

47. संजयकुमार भेलसी (टीकमगढ़)
आचार्य विद्यासागर की अनुदित रचनाओं क़ा अनुशीलन (लघु शोध प्रबंध)

48. श्रीमती सारिका जैन (बरखेड़ी, भोपाल)
आचार्य विद्यासागर के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन (लघु शोध प्रबंध)

49. श्रीमती प्रतिभा जैन (भोपाल)
आचार्य विद्यासागर जी की कृति मूकमाटी का शैक्षिक अनुशीलन

50. श्रीमती कल्पना जैन (हल्दीवाडी, छ.ग.)
मूकमाटी महाकाव्य एक अनुशीलन (लघुशोध प्रबंध)

51. नरेशचन्द गोयल (जयपुर)
आचार्य विद्यासागर कृत मूकमाटी एक अध्ययन (लघुशोध प्रबंध)

52. मेहेरप्रसादसिंह यादव (अहमदाबाद)
आचार्य कवि विद्यासागरजी का प्रबंध मूकमाटी का समीक्षात्मक अध्ययन (लघुशोध प्रबंध)

53. श्रीमती सीमा जैन (ग्यारसपुर, विदिशा)
आचार्य विद्यासागर कृत मूकमाटी महाकाव्य एक साहित्यिक मूल्यांकन

54. श्रीमती अनीता जैन (विदिशा)
आचार्यश्री विद्यासागर की कृति मूकमाटी का समीक्षात्मक दार्शनिक अनुशीलन

55. आदित्यकुमार वर्मा
आचार्यश्री विद्यासागर जी के संस्कृत शतकों का साहित्यिक अनुशीलन (लघुशोध प्रबंध)

आचार्यश्री का साहित्य अनेक स्थानों पर उपलब्ध है। पर शोधार्थी की सहायता हेतु सभी प्रमुख पुस्तकालयों में उपलब्ध करना आवश्यक है। उनके समर्पित शिष्य मुनि पुंगव सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से यह कार्य भी सुचारू रूप से चल रहा है। इसी श्रृंखला में आचार्यश्री से संबंधित सभी शोधग्रन्थ एवं अन्य सामग्री भी एक स्थान पर उपलब्ध हो जाये तो शोधार्थियों को सरलता रहेगी।

इसी क्रम में मुनि अभयसागरजी महाराज की प्रेरणा से अनेक शोधकार्य आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर हो रहे हैं ।

शोधकार्य एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। आचार्यश्री पर शोधकार्य निरन्तर चल रहा है। जैन धर्म दर्शन एवं मानव जगत को सदैव आत्मिक चिंतन प्रदान करता रहेगा। ■

मूकमाटी-मीमांसा:दिव्य प्रेम के काव्य का मीमांसा

• **डॉ. तालकेश्वर सिंह,** बोधगया (बिहार) •

आचार्यश्री विद्यासागर का मूकमाटी महाकाव्य एक वरेण्य कृति है। अध्यात्म और कला के समन्वित धरातल से माटी मूक होकर भी बहुत कुछ कहती है। मौन प्रखर हो गया है। भाषा का परिधान पा गया है। शब्द से शब्दातीत तक जाने की यात्रा को वाणी दे रहे हैं **- डॉ. प्रभाकर माचवे (प्रेरक)।**

आलोच्य 'मूकमाटी' का विषय और प्रेरक दोनों महासत्ता है। आचार्यश्री की दृष्टि में अध्यात्म की नींव महासत्ता है। महासत्ता अणु और महत् दोनों है। उसकी सर्वव्याप्ति असन्दिग्ध है।

घट में मिट्टी के साथ आकाश भी है। आचार्यश्री विद्यासागर जी की दृष्टि में अणु और स्थूल का स्वरूप स्पष्ट है। घट तो स्थूल है, पर उसका घटत्व अणु है, सूक्ष्म है।

निरक्षर और साक्षर का खेल मानसिक व्यायाम मात्र है। अक्षर तो शाश्वत है। 'अक्षरं' नक्षरम् है। इस अक्षर को जो जानता है, वही परम तत्त्व को जानता है। स्वयं पवित्र होता है। पितरों को पवित्र करता है। साक्षर और राक्षस अनुलोम-विलोम की शब्द-रचना भर है।

पूर्ण तक पहुंचने का क्रम 'मूकमाटी' में निर्दिष्ट है। अध्यात्मिक चिन्तन का सहजोद्रेक है। एक विलक्षण नैरन्तर्य है। निरन्तरता कहीं भी टूटती नहीं है। प्रसंगोदभावना के अनुरूप शीर्षकों का चयन किया गया है।

मिट्टी अनगढ़ है। सुन्दर मूर्ति की सारी सम्भावनाएं अनगढ़ मिट्टी में विद्यमान हैं। कुम्भ और कुम्भकार अभिन्न निमित्तोपादान कारण के रूप में स्वीकृत है।

मनुष्य के जीवन में इच्छा, ज्ञान और क्रिया का सामरस्य अनिवार्य है। 'समरसो लोलिभावः' में ही जीवन का सम प्रतिष्ठित है। परन्तु आचार्यजी कहते हैं कि माँ की अपनी कोई इच्छा नहीं होती। (मूकमाटी मीमांसाः xiii) माखनलाल चतुर्वेदी में मां का ही अधिग्रहण है। माँ पुत्रों के लिए सोचती है ऐकान्तिक त्याग करती है। कवि समाज के लिए सोचता है। लिखता है। अपनी काव्य सृष्टि से जाति में, समाज में अभिनव शक्ति-संचार करता है। कवि एक साथ दृष्टा और सृष्टा का समाहार है। आचार्य विद्यासागरजी कहते हैं कि युगानुरूप कवि चित्र बनाता है। प्राण का संचार करता है। प्रतिष्ठा भी करता है।

'युग हमेशा वर्तमान होता है' (आचार्य विद्यासागर) भूत को हम पकड़ नहीं सकते हैं। भविष्य पर अंगुली नहीं रख सकते हैं। जो वर्तमान है, वही वर्धमान है हमारा (आचार्य विद्यासागरः मूकमाटी-मीमांसा; xiv) किन्तु अतीत की अतीतता यदि जीवित है तो वर्तमान की व्याख्या में वह सहायक है। यही इतिहास-बोध है। मृत अतीत का कोई अर्थ नहीं होताहै। काल की सरिता धारा महत्त्वपूर्ण है। कालजयी कृति कार काल के इस वैशिष्ट्य को पकड़ते हैं। 'मूकमाटी' की

काल-धारणा कुछ इसी प्रकार की है। इतिहास-बोध के समाहार से कोई रचना कालजयी बनती है।

आचार्य विद्यासागरजी एक ही संग कवि और सन्त दोनों हैं। काव्य-प्रेरणा सर्वसामान्य नहीं होती है। सन्त विरल होते हैं। किन्तु जहां कवि और सन्त दोनों संग हो जाते हैं, वह स्थिति विशिष्ट-अतिविशिष्ट होती है। परम विशिष्ट होती है। स्व और पर के भेद से कवि और सन्त ऊपर होते हैं।

कविता सर्वाश्रित होती है। स्वायत्त भी कह लीजिए। किन्तु स्व में पर और स्व के अंगीकार के अभाव में कविता और दिक् और काल से ऊपर उठ नहीं सकती है। जहां भाषा का स्वीकार है। वहाँ सम्प्रेषण का अस्वीकार नहीं चल सकता है। कविता यदि भाषा में अभिव्यक्ति है तो उसके अधिग्रहण के लिए एक अदद पाठक भी चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास का -उपजहिं अनत अनत छवि लहही (मानसः1.11) वैश्विक स्तर पर काव्य के रचना और भावन का व्यापक और गम्भीर सिद्धांत है। सम्भवतः इसीलिए टी.एस. इलियट ने कहा था- Every reader is a critic and every critic is a good reader यहीं भावकु और भावक की संगति निर्मित होती है।

यात्रा पूर्ण होने पर मौन रच जाता है। वाणी विराम पा जाती है। इसीलिए तो डॉ. माचवे ने कहा ''जो आपका काव्य ('मूकमाटी') है वह हिन्दी के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है, हम ये मानते हैं। ऐसी कोई चीज पहले नहीं लिखी गयी और ये कई दृष्टियों से अभूतपूर्व रचना है।'' (वही, xxii) ''यह बहुत आधुनिक है मेरे मन से, क्योंकि ये विज्ञान के लिए भी प्रेरित करता है।'' (वही, xxiv) ''मैं इसको फ्यूचर पोयट्री यानी भविष्यवादी काव्य, जैसा कि अरविन्द ने कहा, इसे बहुत अच्छा दिशादर्शक मानता हूँ। अन्य कवियों के लिए भी ये बहुत प्रेरणादायक ग्रन्थ है।'' (वही, xxiv)

तत्त्वतः यह 'मूकमाटी' अध्यात्मक और समाज को एक बिन्दु पर प्रतिष्ठित करने का महत् उद्‌घोष है। सीमित मैं का असीम मैं हूँ (I am) मैं पर्यवसान है।

पातनिकी (आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी) व्यापक है। शास्त्रोज्ज्वलाबुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति को पण्डित कहते हैं। काव्य का उत्कर्ष विधायक तत्त्व गुण है और अपकर्ष ही दोष है तथा गुण-दोष-विवेचन आलोचना नहीं हैं। आलोचना कृति का सम्यक् मूल्यांकन है। तदपि मूल्यांकन से विशिष्ट है। श्वसन-क्रिया की तरह अपरिहार्य है।

'मूकमाटी' लोकमंगल की भावना से लिखी गयी है। (आचार्य राममूर्ति त्रिपाठीः वही, xxxvi) लेखकीय और पाठकीय संवेदना का यह समाहृत रूप है। आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी के अनुसार इसकी विधा शास्त्र काव्य की है। 'मा निषाद' (वाल्मीकि) में लोकमंगल का भाव निहित है। वियोग उद्‌भुत जीवन की गंभीरतम अनुभूतियों का महाकाव्य वाल्मीकीय रामायण है।

राम प्रधान शान्त रस 'मूकमाटी' का अंगीरस है। काव्य के कथित भेदों में तुलसीदास के अनुसार

धुनि अवरेव कबित गुन जानी।
मीन मनोहर ते बहु भाँती॥ (मानसः 1.37)

धुनि, ध्वनि, 'अवरेव' वक्रोक्ति, तथा 'जानी' स्वाभावोक्ति है। कुन्तक काव्य के दो प्रकार मानते हैं -स्वाभावोक्ति और वक्रोक्ति। ध्वनि का समाहार वक्रोक्ति में करते हैं। काव्य के ध्वनि, वक्रोक्ति और स्वाभावोक्ति तीन भेद स्वीकृत हैं। जाति स्वाभावोक्ति है। यह एक गूढ़ार्थ प्रतीतिमूलक अलंकार है। श्रेष्ठ कवियों की दृष्टि सूक्ष्म वर्णन की ओर होती है। उनमें जीवन का सूक्ष्म पर्यवेक्षण होता है। सूक्ष्म पर्यवेक्षण का चित्रमय वर्णन स्वाभावोक्ति है। जायसी, सूर और तुलसी में इसका विशेष आग्रह है। कबीरादि सन्तों में भी सूक्ष्म पर्यवेक्षण की अभिलाषा है। अपनी सीमाओं के बावजूद रीतिकाव्य, सूक्ष्म वर्णन का आग्रही है। आधुनिक काव्य में इस ओर प्रवृत्ति है। जाति स्वाभारोक्ति का प्राचीन नाम है : "Jati is the old name of swavaokti." (Dr. V. Raghavan-Studies on the some concepts of Alankarshastra, P. 92) नवरस जप तप जोग। विरागा- के भाव साम्य पर तथ्यतः 'मूकमाटी' में नवों रसों का स्थित्यनुसार समाहार है। भाषा की सम्प्रेषण शक्ति अद्भुत है। शब्द और अर्थ के सहभाव में यह काव्य विचारणीय है। सहभाव में सहित का भाव है। सबका सार संभार ही इसकी प्रतिज्ञा है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं -

सबकै सार सँभार गोसाईं, करवि जनक जननीं की नाईं॥ (मानस :2-80)

कवि को शब्द और अर्थ का बल होता है। शब्द तो वर्ण-संघात् है। वर्ण यानी अक्षर से व्यंजित होने वाला अर्थ शब्दार्थ मात्र नहीं है। वह तो (अर्थ) जीवन का तात्कालिक अनुभव है। गोस्वामीजी ने कहा हैः

कबिहि अरथ आखर बलु साँचा।
अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा॥' (मानसः2.24)

वेदना और युक्ति को जैनदर्शन के धरातल से किंचित् विस्तार देकर विद्यासागर जी ने भारत के सनातन चिन्तन को अंगीकृत किया है। विष्णुकान्त शास्त्री ने यथार्थ, अध्यात्म और रस का 'मूकमाटी' में समन्वय स्वीकार किया है। डॉ. भगीरथ मिश्र ने वैचारिक, अध्यात्मिक और नैतिक तत्वों से युक्त संवाद को महाकाव्य कहा है। प्रेरणा के मंगल और मंगल की प्रेरणा का यह काव्य है। माटी मौन में अपनी कथा कहती है। आचार्य राममूर्ति ठीक कहते हैं कि सम्पूर्ण मृत्तिका-घट की आत्मकथा प्रतीकात्मक है। असत्य से हम सत्य की ओर अग्रसर होते हैं। अविद्या से विद्या की ओर यात्रा शुरू करते हैं। काव्य-हेतुओं (प्रतिभा-व्युत्पत्ति और अभ्यास) में व्युत्पत्ति का सम्बन्ध संस्कार (संस्कृति) से है। संस्कार की इसी उदात्तभूमि पर सत्त्वोद्रेक होता है।

फलतःरसानुभूति होती है। सद्यः परिनिवृत्ति के क्षणों में ही कान्तासम्मत उपदेश फलित होता है। अतएव 'मूकमाटी' -सत्त्वोद्रेकादखणुस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः है।

हिन्दी महाकाव्यों की परम्परा में 'मूकमाटी' परिगणनीय है। इस प्रसंग में आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का प्रयास मूल्यांकन का स्वस्थ और सुन्दर आरम्भ है। दर्शन काव्य इसलिए काव्य होते हैं कि उनका दर्शन संवेदना से जुड़कर अभिव्यक्त होता है। जैन दर्शन का चिन्तन माटी का मूक संवेदना का सम सहृदय-हृदय के आस्वाद का विषय बन गया है। संवाद योजना की दृष्टि से यह देन (Give and take) की प्रक्रिया का भरपूर निर्वाह है। सार्वत्रिक धरातल पर आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने 'मूकमाटी' के महाकाव्यत्व का अनुशीलन प्रस्तुत किया है। उनकी सम्पादन-कला और भावन शक्ति की यह अद्भुत मिसाल है।

'मनमुख' से 'गुरुमुख' होना साम्मुख्य योग है। यही आचार्याभिमानयोग है। प्रपत्ति का बिन्दु है। गुरू तो पूर्वेषामपि गुरुः-पुराण पुरुषों का भी गुरु है। गुरू की कृपा से ही व्यक्ति सत्संग का सेवन करता है। सन्त सभा में प्रवेश पाता है।

किसी ने इसे 'जीवन का महाकाव्य' (यशपाल जैन) तो किसी ने 'प्रवचन महाकाव्य' (विश्वम्भरनाथ उपाध्याय) कहा है। डॉ. नगेन्द्र इसे 'रूपक महाकाव्य' कहते हैं। प्रस्तुत में आत्म-निर्माण है और अप्रस्तुत में आत्मा की मुक्ति की साधना व्यंजना है। (वही, प्रथम खण्ड, पृ. 34) डॉ. विजयेन्द्र स्नातक 'आध्यात्मिक आधार वाला प्रथम महाकाव्यं कहते हैं। मिट्टी और मिट्टी के मौन को यहाँ वाणी मिली है।

श्री अरविन्द की 'सावित्री' और आचार्यश्री विद्यासागर की 'मूकमाटी' की आधारभूमि अध्यात्म है। डॉ. देवकीनन्दन श्रीवास्तव ने दोनों महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। न केवल 'सावित्री' में अपितु हिन्दी के भक्तिकाव्य में प्रेम एक दिव्यभाव है। वह ब्रह्माण्ड से भी अधिक व्यापक है। प्रेम में तो ईश्वर स्वयं प्रकट हो जाते हैं।

अगजगमय सब रहित विरागी।
प्रेम ते प्रभु प्रगटइ जिमि आगी॥' (मानसः1.185)

यह ठीक है कि समग्र विश्व प्रेम में शरण ले सकता है। पर इससे व्यापक और सार्वजनी तथ्य यह है कि प्रेम में स्वयं ईश्वर उतर आते हैं - 'Heaven itself deseend in love.' गोस्वामीजी विश्वकवि इसलिए हैं कि वे समग्र बिन्दु पर बोलते हैं। विद्यासागरजी ने पृथ्वी की धारणा-सक्ति को अपूर्वता के अनुरूप माटी के विविध पर्यायों को इस काव्य में सार्थकता प्रदान की है। शाश्वत सत्य को उद्घाटित किया है।

छन्द, अलंकार भाषा और भैसील में एक लय है। काव्य के बाह्य तत्व अन्तर्वस्त्र से जुड़कर ये लय, शोभा, व्यंजना तथा कथन की भंगिमा को चमत्कृत करते हैं। शैली की भंगिमा तो 'मूकमाटी' शीर्षक में प्रतीयमान है। 'माटी' तो स्वयं मूक होती है। फिर उसकी मूकता को संवेदना

और सम्प्रेषण से सम्पृक्त करना अद्‌भुत है। तदपि, 'कामायनी' आधुनिक हिन्दी काव्यधारा का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है।

सत् युग और कलियुग को आचार्यश्री बाहरी नहीं, भीतरी घटना मानते हैं। युग-धारणा को विचार से जोड़कर चिन्तन को नया आयाम देते हैं। आधुनिक हिन्दी कविता के बहुविध गुण-धर्म विवेच्य कृति में समाहित हैं। दर्शन, धर्म और अध्यात्म का यह काव्य संकलनत्रय है। डॉ. सूर्यप्रकाश दीक्षित 'मूकमाटी' को उत्तर आधुनिक साहित्य की अभिनव उपलब्धि मानते हैं।

आचार्यश्री दर्शन से अध्यात्म को वरेण्य सिद्ध करते हैं। अध्यात्म स्वाधीन 'नयन' है और दर्शन पराधीन उपनयन है। डॉ. चक्रवर्ती 'मूकमाटी' को काव्य की माटी और माटी का काव्य स्वीकारते हैं। यहाँ धरती की सार्वभौमिक तस्वीर अंकित है। मात्र कृति नहीं है। विकृति का परिहार है। संस्कृत का जयघोष है। श्रमण चेतना का संवेदनशील काव्य है। नायिका माटी है। अतएव यह नायिका प्रधान काव्य है। कवि ने नारी को उदात्त चरित्र प्रदान किया है।

शुक शास्त्र (श्रीमद् भागवत् महापुराण) में बाल कृष्ण ने मिट्टी खाकर उसे अंगीकार किया है। मिट्टी अलंकृत हो गयी है। यही माटी एक बार फिर 'मूकमाटी' में 'मृत्तिकोपनिषद्' का दर्जा पा गयी है। (वही, प्रथमखण्ड, पृ. 87)

माटी की वेदना कवि की वेदना से समवेत हो गयी है। आदि, मध्य और अवसान का एक ही प्रतिपाद्य है। अनेक प्रक्रियाओं से होकर माटी घट का स्वरूप ग्रहण करती है। पंच महाभूतों और उनकी तन्मात्राओं का माटी में अभिनिवेश है। 'मूकमाटी' के समग्र बोध का यही आधार है।

ही और भी के माध्यम से रावण और राम का अन्तर आचार्य विद्यासागरजी सम्यक् प्रकाश में करते हैं :

रावण थाही का उपासक/राम के भीतर भी बैठा था

यही कारण है कि राम उपास्य हुए, हैं रहेंगे आगे भी। भी के आस-पास..।''('मूकमाटी' पृ. 173) 'मूकमाटी' के प्रतिपाद्य में भी प्रतिष्ठित है। जैन काव्य-परम्परा में राम का महत्त्व स्वीकृत है। स्वयंभू के 'पउमचरिउ'में 'पउम' पद्म है। पद्म श्रीराम के लिए स्वीकृत पद है। 'वंदउँ गुरु पद पदुम परागा' में गुरु पद की वन्दना के ब्याज से श्रीराम की ही वन्दना है। राम ऐसे ही शाश्वत गुरु है। परम गुरु है दैनन्दिन जीवन में प्रयुक्त होने वाले सामान्य शब्द काव्य में नयी व्यवस्थिति पा जाते हैं। कसावट आ जाती है। विद्यासागरजी ने ऐसे शब्दों में नयी अर्थशक्ति भर दी है। अर्थ छवि में सुन्दर की विशिष्ट सृष्टि कर दी है। 'मूकमाटी' का फलक व्यापक है। व्याप्ति के कारण ही सुधी समीक्षकों ने शिल्प के विविध अभिधानों से इसे युक्त किया है। न तो यह समीक्षा या समीक्षा की सीमा है और न ही विवेच्य काव्य कृति की। महाकाव्य, अध्यात्मकाव्य, दर्शन काव्य, प्रबन्ध काव्य तथा खण्ड काव्य की संज्ञाओं से इसे जोड़ा गया है। यह इसकी सीमा नहीं है। विद्यासागर

जी एक विशेष की सृष्टि करते हैं। विशेष में अध्यात्म, दर्शन और काव्य तीनों का अन्तर्भाव है। बनाने से यह विशेष नहीं बना है, अपितु स्वयं बन गया है। तत्सुकृतं रसो वै सः के करीब स्थापित हो गया है। इसलिए कि वह स्वयम्भू है। रस रूप है।

श्लेष गर्भत्व अपने ढंग का है। आचार्यश्री कहते हैं-

''हम हैं कृपाण/हम में कृपा न।''(मूकमाटी, पृ. 73)

काल के भाल पर अंकित तुलसीदास के ये शब्द अतल की सिक्तधार हैः

''काढ़ि कृपान कृपा न कहो पितु काल कराल बिलोकी न भाये।''

अध्यात्म की यात्रा दिव्य प्रेम से सम्भव हो पाती है। 'मूकमाटी' को दिव्य प्रेम का काव्य कहा जा सकता है। अरस्तु ने भी कहा था - "I saw her shining there is the company of the celestial." दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए रचनाकार ने प्रतीकों का सहारा लिया है। प्रतीकों के अन्तर से चरित्र-निर्माण की प्रक्रिया पूरी हुई है। चरित्र टाइप और व्यक्ति दोनों होते हैं। निर्माण के क्रम में पात्र कभी टाइप होता है, कभी व्यक्ति। व्यक्ति ही टाइप को रेखांकित होने का अवसर देता है। टाइम व्यक्ति में समष्टि के प्रवेश का अवसर सृजित करता है।

लोक से लोकोत्तर की यात्रा, 'मूकमाटी' के काव्यशिल्प में प्रस्तावित है। आचार्य विद्यासागर की कृति-समष्टि का मूकमाटी समाहार है। प्रौढ़ि है। शिल्प की दृष्टि से एक नवीन खोज है। शब्द का अमर कोश है। जीवन का गीत है। चिन्तन और दर्शन कला के सुन्दर से जुड़ गये हैं। अस्तु, कला, चिन्तन, दर्शन और सुन्दर के समन्वय से काव्य कालजयी बनता है। मिट्टी अपनी कहानी कहती है। शैल आत्मकथात्मक बन गयी है। धर्म, समाज और संस्कृति मिट्टी के अन्तर से मुखर हो गये हैं। समाज दर्शन भी जैन दर्शन के प्रसंग में उद्‌भावित हो गया है। माटी व्यक्ति और समाज के लिए मंगल घट बन गयी है। यह एक श्रेष्ठ काव्य है। आध्यात्मिक जीवन का उन्मीलन है। सार्वत्रिक प्रेम की जीवन वेदी पर परिणय है। दर्शन के प्रभावी होने के लिए यह अनिवार्य है कि वह अनुभूति के सम्पर्क में रहे।

'मूकमाटी' संश्लिष्टि का काव्य है। विश्लिष्टि का नहीं। गिरा अरथ जल बीचि 'सम' का ही क्रम विकास है। 'मूकमाटी' सप्तक का यह अंश समीक्षा का मुहावरा बन गया है।

मन्द-मन्द मृदुता से ललित कथा के अंश,
छन्दबद्ध जैसे बोल पढ़ो 'मूकमाटी' के
शब्द अर्थ खुलते ही बोलते प्रसंग-रंग,
सौम्य बोल, अनमोल पढ़ो, 'मूकमाटी' के।
गाथा-लोक गाथा खोल, अमृत दिया है घोल,
अंग-अग तलातोल पढ़ो, 'मूकमाटी' के।

जीवन के रूप रंग सभी यहाँ विराजमान,

रुचिकर पृष्ठ खोल पढ़ो, 'मूकमाटी' के ।।

(डॉ. छोटेलाल शर्मा, नागेन्द्र, मूकमाटी-मीमांसा, प्रथम खण्ड पृ. 475)

जैन मुनियों की परपम्परा में यह स्तवन अद्वितीय है । जीवन को उदात्त बनाने की प्रक्रिया 'मूकमाटी' में निहित है। लोक के निमित अक्षय कारुण्यधारा है।

रूपकत्व और प्रतीक-योजना में यह विशिष्ट है। 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' (महाभाष्य) का यह प्रतिफलन है। शब्द और अर्थ की नित्यतता तो स्वीकृत सिद्धांत है। इसलिए शब्द और अर्थ के सहभाव से उत्पन्न काव्य-भूमि पर अधिष्ठित होने के अनन्तर ही काव्यास्वाद सम्भव है। आचार्य विद्यासागर में वैदिक और श्रमण चिन्तन का एकीभवन है। जीवन का मंगलाचरण है। अद्वितीय सारस्वत साधना है। वाग्विधान है। आत्मगीत है। डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव 'मूकमाटी' कीअपेक्षा इसे कुम्भकथा कहना उचित समझते हैं । (मूकमाटी-मीमांसा , खण्ड-2 पृ. 62) परन्तु मूकमाटी अभिधा अधिक व्यंजनाशील है। जड़ चेतन का समाहार होने के कारण संसार-बोध से युक्त है।

''अनल अनिल जल गगन रसा है, इन पाँचों पर विश्व बसा है।'

रसा पृथ्वी है। माटी का पर्याय इसे कह सकते हैं। 'मूकमाटी' के शब्द अर्थ के संवाहक भी हैं और अध्यात्म के प्रतीक भी। यह प्रणिधान का काव्य है। प्रणति कोमल कंपित धार से संवलित। मिट्टी के बहाने आध्यात्मिक उन्नयन का प्रयास है। रस, ध्वनि, अलंकार और छन्द तथा अन्त कल्पना की दृष्टि से यह अनुपम कला काव्य है।

वन्दन और अभिनन्दन से अधिक उचित इसका भावन है। भावन के अन्तर से उद्भावित होने वाला सम्प्रेषण रचना और पाठक के बीच का भाव सेतु है। लेखक और पाठक की संवेदना का लयीभवन है। काव्य और अध्यात्म संवेदना के धरातल पर एक हो गये हैं । मूक वाचाल हो गया है। भाषा पा गया है। नाटकीय त्वरा से युक्त संवाद पा गया है। मूक में एक स्वर है। एक ध्वनि है। आचार्यत्व और रचनाकार का समन्वय है। जैन काव्य-परम्परा की अनुपम कड़ी है।

मृत्तिका-स्मरण की परम्परा में 'मूकमाटी' पाथेय है। मैथिलीशरण गुप्त और दिनकर एवं पन्त और निराला के चिरन्तन काव्य-सत्य के प्रसंग में 'मूकमाटी' विचारणीय है। गुप्तजी का मंगल घट; दिनकर की सामधेनी में अचेतन मृत्ति, अचेतन शिल्प; अज्ञेय की मिट्टी की ईहा तथा पन्त की आ धरती कितनी देती है। (तारापथ) दृष्टव्य है। डॉ. प्रमोदकुमार सिंह लिखते हैं कामायनी देव सृष्टि के अन्तिम प्रतिनिधि के शिवत्व लाभ का आख्यान है, किन्तु 'मूकमाटी' तुच्छता की उच्चता प्राप्ति का महाकाव्य है। (वही, खण्ड 2, पृ. 184)

धरती की गन्ध में जल का रस मेघ अभिसिंचित करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास करते हैं

बरषहिं जलद भूमि निअराएं। जथा नवहिं बुध विद्या पाएं ।। (मानस 4.14)

जल के भार से जलद पृथ्वी पर झुकते हैं और बरसते हैं। कृषि संस्कृति अथवा गृहस्थ जीवन में विद्या पाकर विवेकी विनयशील हो जाते हैं।

विशद आयामी कृति होने के कारण 'मूकमाटी' की मीमांसा में कहीं काव्य सिद्धांतों की गलत व्याख्या हो गयी है। कवि की संवेदना से दूर इसे कोई दार्शनिक कृति कहते हैं। डॉ. श्रीधर वासुदेव सोहोनी के विचार (वही, खण्ड 3, पृ. 8) अतीव सारगर्भित हैं । बाणभट्ट के शब्द रत्नाकर में भूमि के छत्तीस नाम अंकित है। आचार्य विद्यासागर ने सभी नामों की काव्यात्मक गूँज 'मूकमाटी' में ध्वनित किया है।

दिक् और काल का प्रभाव रचना पर अवश्य पड़ता है। डॉ. प्रेमशंकर कहते हैं- 'मूकमाटी' का कवि अपने समय से बेहद विक्षुब्ध है और इस सात्विक आक्रोश के लिए कलिकाल वर्णन का सहारा लिया गया है। भागवत और तुलसीदास की तरह। (वही, खण्ड 3, पृ. 12) कई दृष्टियों से 'मूकमाटी' का शिल्प अभिनव है। (वही, खण्ड 3, पृ. 15)

सूक्ति प्रयोग में 'मूकमाटी' का कवि सिद्ध है। कालिदास में सूक्तियाँ है । वाल्मीकि और तुलसीदास में सूक्तियाँ है। ऋग्वेद के सूक्तों का लघु रूप सुक्तियों को कहा जा सकता है। सूक्त या सूक्ति सिद्धांत-वाक्य हैं।

तत्त्वदर्शी कवि तत्त्वों को देख लेते हैं। माटी को कबीर, सूर, तुलसी आदि ने देखा है। - (क) माटी कहे कुम्हार से-कबीर, (ख) मोहन काहे न उगलत माटी-सूर, (ग) छिति जल पावक गगन समीरा-तुलसी (मानस.4.11) डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित 'मूकमाटी' को 'मुक्ति की मंगल-यात्रा' कहते हैं । (वही खंड 3, पृ. 60) यह आत्मा का अमर संगीत है। मनुष्य का संवेदन-गीत है । प्रो. (डॉ.) सत्यरंजन वन्दोपाध्याय 'मूकमाटी' को तपस्या द्वारा अर्जित जीवन-दर्शन की अभूतपूर्व अनुभूतिकहते हैं । (वही, खण्ड 3,पृ. 79)

अन्वेषण की तत्परता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। यह कला की साधना और साधना की कला है। कीरति भनिति भूति (मानसः 1.14) में सबका हित चिन्तन निहित है। विद्यासागर जी के संस्कृति-चिन्तन में सत्य, अहिंसा और करुणा का समाहार है। एक नयी काव्यात्मक पहचान के साथ 'मूकमाटी' की रचना धर्म अस्तित्व ग्रहण करता है। ठीक है- माटी की अन्तर्व्यथा 'मूकमाटी' में करुणा की कोमल रागिनी बन गयी है। (वही, खण्ड 3, पृ. 150) सत्य है- बाहर की सुगन्ध से तेज भीतर की सुगन्ध होती है, जो गुरु-कृपा से अन्तर में बहती है। (वही खंड 3, पृ. 15)

यह परिपक्व मानस की उपज है। डॉ. नामवर सिंह ने हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (पृ. 183) नामक पुस्तक में जैन साहित्य (प्राचीन) का विशिष्ट मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। स्वयम्भू, पुष्पदन्त, धनपाल, जोइन्दु (योगीन्द्र), रामसिंह, राजशेखर, शालिभद्र आदि की परम्परा में विद्यासागर का विचार अपेक्षित है। व्यक्ति के सही रूप प्राप्त करने की दिशा में यह एक विलक्षण प्रयास है।

'रामचरितमानस' विश्वकाव्य है। 'मूकमाटी' भी विश्वकाव्य की अर्हता प्राप्त कर सकती है। 'इस प्रकार 'मूकमाटी' एक साहित्यिक और आध्यात्मिक कृति है जो विश्व के मानवों को जीने का रहस्य बतलाती है।' (वही, खण्ड 3, पृ. 193)

कुम्भकार गुरु है। अनगढ़ को गढ़ता है। मिट्टी के लोंधे को सुन्दर आकार प्रदान करता है। गुरू दया करता है। क्षमा करता है। सन्त वाणी में क्षमा का बड़ा महत्व है। विद्यासागर जी क्षमा को काफी अहमियत देते हैं।

बिम्ब-विधान काफी प्रौढ है। 'विस्मित लोचन', 'सस्मित अधर,' 'कज्जल-काली धूम', 'प्रकाश पुंज', 'आगामी अंधकार' आदि विलक्षण बिम्ब-विधान है। अमूर्त का मूर्ती करण और जड़ का मानवीकरण अद्‌भुत है। संवेदना का यह काव्य वास्तव में संवेदना की साधना है। मृण्मय से चिन्मय की यात्रा शुरू होती है। विद्वान लेखक ने लिखा है ''दिव्य चैतन्य बोध ही कवि का अन्तस्थल है जो अपार करुणा से झिलमिल करता है (वही, खण्ड 3, पृ. 332)

काव्य शैली अर्थ-विस्तार का द्योतक है।

जैन दर्शन को संवेदना के धरातल से कवि ने जोड़ दिया है। माटी का माटी के लिए लिखा यह सन्त काव्य है। साधना अर संवेदना का समानान्तर है। माटी के बहाने लघुमानव को वाणी प्रदान की गई है। 'मूकमाटी' का सन्देश है :

आत्मज्योति की दीपशिखा को, आगम पथ पर मढ़ लेते हैं,
मूकमाटी की मूक व्यथा, को अन्तरतम में गढ़ लेते हैं।
सात तत्त्व के सही रूप को, प्रतिपल जो जीवन में गढ़ते,
वही मूकमाटी को घट में मंगल कलश रूप दे मढ़ते।। (वही, खण्ड 3, पृ.482)

'मूकमाटी-मीमांसा' के तीन खण्डों में देश-विदेश के 283 सुधी समालोचकों के विविध विचार संकलित हैं। विवेच्य काव्य के आयाम का विस्तार ही वैचारिक विशदता का मूल है।

मूलतः 'मूकमाटी' विरति विवेक संयुत हरि भगति पथ का काव्य है। ■

मारौरा जी शास्त्रि परिषद् पुरस्कार से सम्मानित

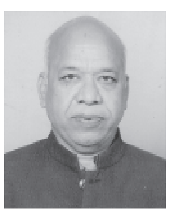

ऋषिकेश । परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के ससंघ सानिध्य में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद् के द्वारा प्रदत्त श्री श्रेष्ठी मिश्रीलाल बैनाड़ा स्मृति शास्त्रि परिषद् पुरस्कार 2017 से विद्वत् प्रवर पं. श्री सुरेश जैन मारौरा (इन्दौर) को जिनवाणी एवं जैनागम के प्रचार-प्रसार द्वारा जैन धर्म की प्रभावना हेतु दिनांक 22 जून 2017 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर ऋषिकेश (उत्तराखण्ड) में सम्मानित किया गया है। संस्कार सागर मासिका पत्रिका के द्वारा हार्दिक शुभकानायें

हमारे गौरव

बुतूंग द्वितीय गंग गांगेय

गंगनारायण, नन्नियगंग, जय दुत्तरंग, सत्यनीति वाक्य कोंगुणिवर्म-महाराजाधिराज परमेश्वर आदि उपाधिधारक यह नरेश बड़ा युद्धवीर पराक्रमी प्रतापी और प्रभावशाली शासक था। प्रारम्भ में राष्ट्रकूटों को ही सहायता एवं सद्‌भावना से वह सिंहासनासीन हुआ और लगभग 937 से 953 ई. पर्यन्त उसने राज्य किया। उसकी तीन रानियां थी जिनमें से प्रथम तो राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष तृतीय की पुत्री तथा कृष्ण तृतीय की बड़ी रेवा थी, दूसरी कलम्बरसी नामक राजकुमारी थी और तीसरी डहाड देश के स्वामी बड्डेग की पुत्री दीवालाम्बा थी। राष्ट्रकूट राजकुमारी के साथ उसने पुलिगेरे, बेलबोला, किसुकद, वगे आदि विषय (जिले) दहेज में प्राप्त किये थे। अपने ससुर बड्डेग की मृत्यु होने पर उसने राज्य को लल्लेटा के पंजे से निकाल कर अपने अधिपति राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण तृतीय में प्राप्त कर लिया था। अचलपुर के कंकराज वनवासी के बिज्ज-दन्तिवर्मन, नुलुवगिरि के दामरि तथा राजवर्मा, नागवर्मा आदि राजाओं में उसने अपने पराक्रम से भय उत्पन्न कर दिया था। उसने तंजापुरी (तंजौर) को घेरा डाला और राजादित्य को पराजित किया तथा नालकोटे के पहाड़ी दुर्ग को जलाकर भस्म कर दिया। एक अन्य युद्ध में उसने उक्त चोल नृपति राजादित्य को मार डाला था। जैनधर्म का यह गंग नरेश प्रथम भक्त था। जैन मंदिरों और जैन गुरुओं को उसने अनेक दान दिये थे। जैन सिद्धांत का भी वह पंडित था और परिवादियों के साथ शास्त्रार्थ करने का उसे भाव था। एक वीर विद्वान के साथ भी उसने शास्त्रार्थ करने का उल्लेख मिलता है। एकान्त-मत-मदोद्धत-कुवादि-कुम्भीन्द-कुम्भ-सम्मेद, नैगमनयादि कुलिशैर करोज्जय दुत्तरंग-नृप जैसे उसके विरुद्ध सार्थक थे। अपने 938 के सूदी (जिला धारवाड़) ताम्रशासन के अनुसार इस नरेश ने अपनी प्रिय पत्नी सम्यग्दर्शन विशुद्ध-प्रत्यक्ष देवत्या रानी दीवालाम्बा द्वारा सुल्याटवी-सप्तति-ग्राम क्षेत्र के सून्दी नामक स्थान में निर्मापित जिनालय के संरक्षण के लिये तथा वहां निवास करने वाली छह श्रमण आर्यिकाओं के दान सम्मान के लिये गुरु नागदेव पंडित को स्वयं पाद प्रक्षालन करके, कार्तिक नन्दीश्वर शुक्लपक्ष की अष्टमी, आदित्यवार के दिन यह वृहत दान दिया था। इस अभिलेख में राजा के अनेक वीरतापूर्ण कार्यकलापों एवं विजयों का भी उल्लेख है। सन् 950 ई. के अतकूर दानपात्र में वुतुग द्वारा चोलों की पराजय और उनके सेनापति चोल राजकुमार के मारे जाने का भी उल्लेख है। उसके कुडलूर ताम्रपत्र से प्रकट है कि उसके परिवार के अन्य सदस्य भी जैन धर्म के भक्त और धर्मात्मा थे। राजा की बड़ी बहन पामव्वे जो पेदियर दोरपय्य की ज्येष्ठ रानी थी बड़ी विदुषी थी और गुणचन्द्र भट्टारक तथा आर्यिका नाणब्बेकान्ति की शिष्या थी इस धर्मात्मा राजमहिला ने आर्यिका के रूप में तीस वर्ष तपस्या की थी और अन्त में (971 ई. में) समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया था। इस देवी की आर्यिका दीक्षा की घटना का महाराज वुतूंग के हृदय पर भी गहरा प्रभाव पड़ा था। ■

बाल कहानी

ज्वर आत्मा में नहीं

बात सन् 1946 जनवरी की है, सदलगा गाँव में श्रेष्ठी मल्लपाजी रहते थे। उनकी धर्म पत्नी श्रीमति देवी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थी। मल्लप्पा के परिवार में खेती बाड़ी होती थी और कुछ साहूकारी। इससे ही वे अपना गृहस्थ जीवन का निर्वाह करते थे। उस समय सदलगा में विद्युत प्रकाश का प्रबंध नहीं था। अंधेरे में कभी लालटे तो कभी दीपक लड़ता रहता था। उस समय श्रीमन्ति गर्भवती थी और उनका स्वास्थ्य ऊपर नीचे होता रहता था। एक दिन उनका शरीर खूब जोर से तप रहा था और ठंड में इतना शरीर तपना मल्लप्पाजी के लिए चिंता का विषय बन गया और उनकी नींद पूरी उड़ गई। सचमुच में वह एक समय था जब लोग प्रेम शरीर से नहीं आत्मा से करते थे। यही हाल मल्लप्पा जी के दाम्पत्य जीवन का था। श्रीमंतिजी की अस्वस्थता देखकर वे विचलित हो गए कभी लालटेन लेकर बाहर जाते थे। यह उनकी विकल्पता देखकर श्रीमंतिजी भी बहुत चिंतित हो गई। उन्होंने कई बार कहा - आप घबराए नहीं मेरा सब कुछ ठीक हो जाएगा। किन्तु मल्लप्पा जी कि चिंता और तड़फन जरा-सी भी कम नहीं हुई वे लालटेन लेकर अकेले ही वैद्य के यहां चले गए और एक घंटे बाद खाली हाथ लौट आए और उन्हें वैद्य जी नहीं मिले। यह उनकी स्थिति देखकर श्रीमन्तिजी ने कराहती हुई आवाज में कहा कि आप इतने नाहक परेशान हो रहे हैं क्योंकि कोई भी शरीर में बीमारी आती है तो वह जल्दी नहीं जाती है। आने वाली बीमारी अपने समय से ही जाती है। आप इतने परेशान होकर खुद को भी बीमार कर लेंगे और जब हम दोनों बीमार हो जाएंगे तो बच्चो को कौन सम्भालेगा। आप सो जाए नींद ले लें सुबह जो होगा उसे देखेंगे। मल्लप्पाजी ने कहा श्रीमन्ति तुम भी विचित्र बातें करती हो ऐसी बातें सुनकर मुझे ऐसा लगता है कि तुम मुझे पत्थर दिल का बना रही हो मैं भी इन्सान हूँ मेरे अन्दर संवेदना का प्रभाव है। तब श्रीमन्ति ने कहा शरीर में ही तो बुखार है शरीर ही तो तप रहा है। आत्मा नहीं। यह सुनकर मल्लप्पा जी भी निश्चिंत होकर सो गए। ■

संस्कार गीत

हे गुरुवर

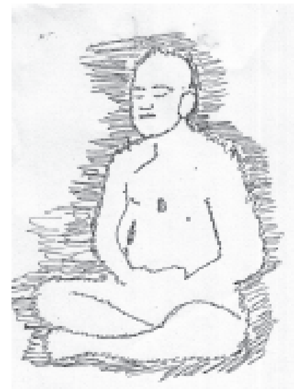

ऐसी शिक्षा हमें देना गुरुवर
हम रहे दूर व्यसनों से हरदम
जिंदगी हो भली ऐसी मेरी
सबको माने हम अपने ही सम

तुम नशा नाश मानो रे मन में
लालसा ही बिगाड़े रे जीवन
छोड़ दे व्यसन सात सारे,
एक पल में बने जीवन मधुबन
धर्म की राह पर मिलती खुशियाँ
इक पल में मिटें मन के सब गम

पंच गुरुओं का नाम जपो तुम
हिंसा झूठ चोरी से बचो तुम
ममता के तज के समता धरो रे
मगन न हो खुशी में कभी तुम
सच्चा भक्त गुरु का बने वह
देख दुखियों को जिसके नयन नय

बाल कविता

सबसे सुंदर तीरथ धाम

गोरा वदन गुरु ध्यान गगन
जिनवाणी में लगी है लगन
अपने भीतर झांक रहे
पल पल निज को आंक रहे
कौन है आता, कौन है जाता
गुरूवर को क्या इससे नाता
वे अपने में डोल रहे
नहीं किसी से बोल रहे
निज आत्म का ध्यान करें
आर्त रौद्र नहिं ध्यान करें
विद्यासागर इनका नाम
सबसे सुन्दर तीरथ धाम

■ सेठीजी की पत्नी गुस्से में पति पर बरसी- मैं पूछती हूँ कि ऐसी चोर नौकरानी क्यों रखी हैं ? सेठीजी क्यों क्या बात हुई ? पत्नी होना क्या था। आप पिछले माह होटल से चांदी का गिलास चुराकर लाये थे, वह इसने गायब कर दिया है।

■ शांतिलाल फोन पर सासू जी से कह रहा था आपकी बेटी में हजारों कमियां है।

सासूजी -हाँ बेटा मुझे मालूम है, इसी कारण से इसे कोई अच्छा पति नहीं मिला।

■ कालेज में पढ़ने वाली दो लड़कियां बस में सीट के लिए लड़ रही थी। परिचालक ने कहा आप आपस में लड़ो मत जो उम्र में बड़ी हो सीट पर बैठ जाओ। फिर क्या दोनों रास्ते पर यही कहती रही-दीदी आप बैठ जाओ। दीदी आप बैठ जाओ।

■ पुलिस थाने पर फोन आया- इंस्पेक्टर साहब किसी ने मेरी नई कार के सारे पुर्जे चुरा लिए हैं - ब्रेक, क्लच, एक्सीलेटर, और स्टेयरिंग भी। इंस्पेक्टर ने कहा- मैं अभी आकर जाँच करता हूँ। इंस्पेक्टर जाने को तैयार हुआ था कि पुनः फोन की घंटी बज उठी। वे ही सज्जन बोले- क्षमा करे साहब, यहां सब ठीक, बस गलती यह हो गई कि मैं जल्दी में कार की पिछली सीट पर बैठ गया था।

■ भारी भरकम महिला से एक साइकिल चलाता बच्चा टकरा गया। महिला बिग़ड़कर बोली- अंधा है दिखाई नहीं देता।

बच्चा बोला-आंटी, सॉरी आपने सारा रास्ता रोक रखा था मैं निकलता किधर से ?

– जिनेन्द्रकुमार जैन,
बाकल वाले, इन्दौर

आर्यिका संघ की दमोह में हुई मंगल आगवानी

दमोह (म.प्र.)। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की सुयोग्य सिष्या आर्यिका रत्न तपोमतिजी माताजी के ससंघ के मंगल नगर आगमन पर दिगम्बर जैन पंचायत शाकाहार उपासना परिसंघ कुण्डलपुर क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के अलावा बड़ी संख्या में श्रद्धालुभक्तगणों ने आर्यिका संघ की भव्य अगवानी की।

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

इन्दौर। दिनांक 28-29 अक्टूबर 2017 को श्रवणबेलगोला में राष्ट्रीय युवा सम्मेलन श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली की प्रतिमा के पारम्परिक द्वाददशवर्षीय महामस्तकाभिषेक 2018 के आलोक में श्रवणबेलगोला में विविध कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। उसी क्रम में दि. 28 एवं 29 अक्टूबर 2017 को राष्ट्रीय युवा सम्मेलन आयोजित किया गया है। उक्त सम्मेलन के अतिरिक्त 30-31 अक्टूबर को दो दिवसीय समीपस्थ क्षेत्रों की यात्रा करवायी जायेगी। उक्त सम्मेलन में सम्मिलित होने के इच्छुक समाज के युवा अपना पूर्ण पता, मोबाइल, ई-मेल, आईडी के साथ हंसमुख जैन गांधी, संयोजक राष्ट्रीय युवा सम्मेलन-2017, महावीर ट्रस्ट, कीर्ति स्तम्भ, रीगल चौराहा, इन्दौर(म.प्र.) मो.: 9302103513 को डाक से या ई-मेल hansmukhjaingandhi @gmail.com पर प्रेषित करें और अपने नामांकन हो जाने की सूचना की प्रतिक्षा करें।

समाचार

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष मनाया

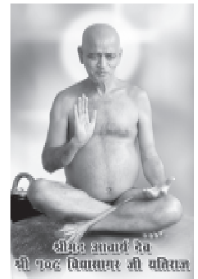

इन्दौर। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष 2017-18 दिनांक 28 -30जून 2017 को मुनिश्री आगमसागरजी, पुनीतसागरजी, सहजसागरजी, आर्यिका आदर्शमति अंतरमति माताजी के सान्निध्य में भव्य रूप से मनाया गया है जिसमें 50 रथों से भव्य शोभायात्रा निकाली गई। कार्यक्रम में सुंदरलाल जैन (बीड़ी वाले), महेन्द्र पांड्या, गजेन्द्र जैन (गिन्नी ग्रुप), नवीन जैन, नरेन्द्र जैन, एम. के. जैन, राजीव जैन, आजाद मोदी, धर्मेन्द्र जैन, वीरेन्द्र जैन, हर्ष जैन, धर्मेन्द्र जैन, मनोज जैन, प्रदीप बड़जात्या, विकास जैन, सिम्पल जैन, अजीत जैन, भरत जैन, मुलायमचंद जैन, प्रियदर्शी जैन, राजेश जैन, अक्षय कासलीवाल, मनोज जैन (ट्रस्टी), अभय जैन, विमल गंगवाल, प्रदीप जैन, राजेन्द्र जैन, राकेश जैन, ब्र. मानमल बाबा, नरेन्द्र जैन(जयपुर), सुगनचंद्र जैन, प्रकाश जैन, अजित जैन, अनिल जैन, अवधेश जैनक, अजित पाटनी, एम.के. जैन, डॉ. सनत जैन, सुधीर बांझल, सतीश जैन, विवेक जैन, ज्ञानचंद जैन, डी. के. जैन, सुधीर सिंघई, इन्द्रपाल जैन, नवीन जैन, हेमन्त कासलीवाल, पंकज जैन, सीमा जैन, धरर्णेन्द्र जैन, कोमल जैन(दद्दा), पुष्पा जैन, अरुण फणीस, नरेश जैन, नीतेश जैन, धर्मिष्ठा जैन, विद्या जैन, सारिका जैन, पुष्पा जैन, मंजू विनोद जैन, आराधना कासलीवाल, बाबूलालजी, हेमन्त सेठी, राजकुमार जैन पुष्प, राजेन्द्र कंठाली, नेमीचंद जैन, इन्द्रा जैन, सुभद्रा जैन, संतोष जैन, धनश्याम (गोलू), दीपक जैन, कल्पना जैन, रविन्द्र जैन, प्रीति जैन, आशीष जैन, राहुल जैन, कोमलचंद शीला जैन, ब्र. नरेश गोधा, शुकंतला गोधा, पवन जैन, गुणमाला राकेश जैन, स्नेहलता रमेश जैन, आशी अमित जैन, राजेन्द्र जैन, उमेश जैन, आनंद जैन, रिशु निशांत जैन, श्री पाल काका, महेन्द्र पहाड़िया, लाभचंद जैन, पंकज जैन, धर्मेन्द्र जैन, उषा जैन, रविन्द्र जैन, सुनील जैन, ओमप्रकाश शकुन्तला जैन, ब्र. ओमप्रकाश जैन, जिनेन्द्र जैन, करुणा जैन, विनोद जैन, विनीता जैन, प्रणय जैन, कविता जैन आदि के साथ, पुलक चेतना मंच, स्मृति नगर, पलासिया, तुकोगंज जैन समाज, कालानी नगर, खातवाला टैंक, उदयनगर, छत्रपतिनगर, जवरीबाग नसिया, नेमीनगर,तिलकनगर, भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी, महालक्ष्मी नगर, स्कीम नं. 78, सुखलिया, क्लर्क कॉलोनी, गौरीनगर, परदेशीपुरा, भागीरथपुरा, स्नेहलतागंज, न्यूदेवास रोड़, पाटनीपुरा, सेतवाल मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर एवं पद्मप्रभ चैत्यालय नंदानगर, बजरंग नगर, एलआयजी चैत्यालय, सेटेलाइट, शिखरजी ड्रीम्ज, विद्यासागर विद्यालय, अर्पणा कान्वेन्ट, आदिनाथ-ऋषभ कान्वेन्ट, नवांकुर विद्या निकेतन, बेस्ट सॉल्यूशन, गोलापूर्व युवा संगठन, मुनि सेवा समिति, पूर्वोत्तर क्षेत्र पुण्यार्जन प्राप्त किया। समस्त कार्यक्रम की रूपरेखा श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर ने जमाई। झाँकी में प्रथम स्थान तिलक नगर, द्वितीय स्थान कालानी नगर, तृतीय स्थान पंचबालयति मंदिर को प्राप्त हुआ। विभिन्न प्रतियोगिताओं के भी पुरस्कार प्रदान किये गये।

आचार्यश्री विद्यासागरजी के दीक्षा दिवस पर निकली भव्य शोभायात्रा

दमोह (म.प्र.)। संत शिरोमणि पर तपस्वी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के 50 वें दीक्षा दिवस के अवसर पर जैन समाज के द्वारा आर्यिका रत्न गुरुमति माताजी एवं आर्यिका रत्न श्री तपोमतिमाताजी के मंगल शसंघ सानिध्य में दिनांक 28 जून 2017 को विशाल भव्य शोभायात्रा निकाली गई। श्रेयांस लहरी दमोह वालो, शांतिधारा रूचि भूपेन्द्र कुमार जैन सुधासागर नगर गैरतगंज राजस्थान वालों को प्राप्त हुआ।

जैन धर्म के सिद्धांतों के पालन से योग होता है : मुनि विशोकसागर

अशोकनगर। श्री विरागसागरजी महा मुनिराज के सुयोग्य शिष्य श्रमण 108 श्री विशोकसागरजी मुनिराज एवं 108 श्री विदेहसागर जी मुनिराज दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र थुबोनजी से विहार कर बुधवार प्रातः नगर के पारसनाथ जिनालय पहुँचे। धर्मसभा में विशोकसागरजी महाराज ने विश्व योग दिवस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन धर्म के मूलमंत्र णमोकार को श्वास उपश्वांस के साथ बोलने से योग की अनुलोम-विलोम क्रिया होती है। हम अपने जीवन में पूर्ण रीति रिवाज अनुसार धार्मिक क्रियायें करें तो हमें यह योग दिवस मनाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

कुण्डलपुर में धूमधाम से मनाया गया सुपार्श्वनाथजी का जन्म कल्याणक

कुण्डलपुर। श्री दिगम्बर जैन सिद्ध अतिशय क्षेत्र कुण्डलगिरि, कुण्डलपुरजी में भगवान श्री 1008 सुपार्श्वनाथजी का जन्मकल्याणक श्री बड़े बाबा का जलाभिषेक, शान्तिधारा, पूजनविधान के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कुण्डलपुर में श्री बड़े बाबा जी का प्रथम कलश

देश के सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में जैन समाज अग्रणी : राजनाथ सिंह

नई दिल्ली। केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि देश को तरक्की की ओर अग्रसर करने के लिए समाज एवं राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले लोगों को चाहिए कि वे समाज को तोड़ने की बजाय जोड़ने का प्रयत्न करें। भौतिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होगा तभी संतुलित विकास की अवधारणा मूर्त होगी।

मुनि दीक्षा सम्पन्न

मुम्बई। मुनिश्री जयकीर्ति महाराज ने ब्र. विशाल भैया इन्दौर एवं बाबा साहेब (कर्नाटक) को दिनांक 7 जून 2017 को मुनि दीक्षा दी। जिनका नाम क्रमशः मुनि अजितन्जय कीर्ति एवं मुनि अमितन्जय कीर्ति रखा गया।

टीकमगढ़। आचार्यश्री पार्श्वसागरजी ने श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बाजारका मंदिर, टीकमगढ़ में मुनिश्री अभिनंदनसागरजी को उपाध्याय पद एवं ऐलकश्री सुधर्मसागरजी को मुनि दीक्षा दिनांक 30 मई 2017 मंगलवार को दी। जिनका नाम पूर्वानुसार ही रहा।

रानकुआँ (सूरत)। आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से 12 जून 2017 को शांता बेन मेहता सूरत को श्री दिगम्बर जैन मंदिर, रानकुआँ सूरत में क्षुल्लिका दीक्षा दी गई जिनका नाम क्षुल्लिका सरलमति माताजी रखा गया।

पर्वत पाटिया (सूरत)। आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से 1 जुलाई 2017 को श्री

आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, पर्वतपाटिया, सूरत में रतनदेवी सोगानी सूरत को क्षुल्लिका दीक्षा दी गई। जिनका नाम क्षुल्लिका साध्यमति माताजी रखा गया।

आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज की 28 वां चातुर्मास हेतु भव्य अगवानी

इन्दौर। आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज ससंघ (22 पिच्छी) की भव्य अगवानी माणिक चौक मंदिर से समवशरण मंदिर कंचनबाग में हुई। जिसमें स्वर्ण रथ, 2 हाथी, बैण्ड के साथ विभिन्न परिधानों में महिला मंडल, युवा मंडल एवं जैन समाज के लोगों ने सम्मिलित होकर धर्मलाभ लिया। ऐलाचार्य 108 निजानंद सागरजी ने आचार्य भगवन सन्त की मंगल अगवानी की। भिलाई, मुम्बई, उज्जैन, सनावद, जबलपुर, नागपुर, भोपाल एवं समस्त भारत से भक्तगण पधारे।

दुनिया को हम समझें मूरख

हमें जब माईक पर बोलना सिखाया जा रहा था तो गुरूजी ने कहा-सामने जितने भी जनता बैठी हो, पहले यह सोच लो कि ये सब मूर्ख हैं, इन्हें कुछ नहीं आता। मैं ही केवल बुद्धिमान व चतुर हूँ। लगता है इसी वाक्यकी गांठ बांधकर कुछ लोग समाज में फसाद फैलाने में संलग्न है। अखिल बंसलजी,. सुरेन्द्र भारती, डॉ. जयकुमार जैन मूलसंघ का बैनर उठाये प्रत्येक अवसर पर 'बीसपंथ विष पंथ है' का नारा लगाते हुए बीस पंथ का विरोध कर रहे हैं। यहां तक कि श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक के 'लोगो' 'भगवान बाहुबली-प्रतिमा का महिला द्वारा अभिषेक करते हुए' का पुरजोर विरोध कर रहे हैं, वहीं उन्हीं की टोली के सदस्य डॉ. प्रेमीजी व उनके सुपुत्र डॉ. अनेकान्त जैन अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए बंसलजी को ठेंगा दिखाते हुए उक्त 'लोगो' के समर्थन में सीधे आगे आ गये हैं। प्रेमीजी का मानना है कि प्रथम अभिषेक उसी महिला ने ही किया था। इसलिए इस 'लोगो' में ऐतिहासिक गरिमा प्रदर्शित की गई है जो उचित ही है। विगत महामस्तकाभिषेक (12 वर्ष पूर्व) के समय प्रेमीजी विद्वत् परिषद के अध्यक्षत्व में श्रवणबेलगोला में विद्वत् गोष्ठी के संयोजक थे। रात्रि को पूजन का मंचन हुआ, वहां की परम्परानुसार हलुआ, मोदक, बरफी, आदि नैवेद्य, फूल, दीपक, चंदन, फलों के टोकरे सब चढ़ाये गये हैं। अन्त में डॉ. प्रेमीजी ने सभी विद्वानों से कहा- यही पूजा विधिवत पूजा है, इसे विद्वत् परिषद के स भी विद्वानों को अपनाना चाहिए।' ये कहलाता है गंगा गये तो गंगादास, जमुना गये तो जमुनादास। आपके सुपुत्र डॉ. अनेकान्त जी कुछ लाभ केलिए वे काजीपंथी कहलाये, फिर मूलसंघी, अब चाटुकारिता में पापाजी को भी पीछे छोड़ते हुए इन्होंने अपनी पत्रिका 'पागद भासा' में वही लोगो प्रकाशित किया है। और अपील की है कि यह अंक खरीद कर वितरित करें। यहां हम यह भी बता दें कि बंसलजी के महामंत्रित्व वाली विद्वत् परिषद् के मुखपत्र के भी संपादक है डॉ. अनेकांत जी।

कुल मिलाकर ये कुछ पांच-सात लोग सिर्फ और सिर्फ समाज में वैमनस्य में फैलाने में जुटे हैं इन्हें न बीसपंथ से कोई लेना देना है, न तेरा पंथ से और न काजीपंथ से। अन्यथा यही बंसलजी एक मुनिराज के बगल के फ्लैट में ठहरते हैं, जिस कम्बोड में मुनिराज शौच जाते हैं उसी में बंसल जाते हैं,यह बात उन्होंने क यों नहीं कभी लिखी ? ये सब अवसरवादी केवल फसादाकांक्षी है। और फसाद करवाने की इन्हें फण्डिंग होती हो तो बड़ी बात नहीं है। ये समझते हैं दुनिया मूरख हैं।

सल्लेखना सम्पन्न

दिल्ली। श्री दिगम्बर जैन मंदिर, ग्रीन पार्क पर दिल्ली में सप्तम प्रतिमाधारी ब्रह्मचारिणी किरणदेवी धर्मपत्नी उत्तमचंदजी जैन को आचार्य वसुनंदी महाराज द्वारा क्षुल्लिका दीक्षा 1 जुलाई 2017 को दी। जिनका नाम क्षुल्लिका कल्याणनंदिनी रखा गया। जिनकी समाधि 1 जुलाई को दोपहर 2:20 पर हुई।

इन्दौर। श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मोदीजी की नसिया में आचार्य शिवसागरजी महाराज के सानिध्य में उनके ही शिष्य क्षुल्लक नम्रसागर की समाधि 26 जून 2017 को हुई।

वेदी उत्थापन सम्पन्न

इन्दौर। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर खातीवाला टैंक की वेदी उत्थापन एवं सवालाख जाप शांति विधान, विश्वशांति महायज्ञ, घट यात्रा, स्वर्णरथ यात्रा ब्र. जिनेश मलैया के प्रतिष्ठाचार्यात्व में सम्पन्न हुई।

शिल्पी ज्ञानसागर

शाश्वत सुख
कहाँ मिलेगा
बोधि कमल मन
कहाँ खिलेगा
तथ्य सत्य बतलाने वाला
मुक्ति बोध दिखलाने वाला
कोई तो होगा इस भूमि पर
पीड़ा हरने कोई होगा होगा इस धरती पर
यह सोच उड़ा था विद्याधर
भूख प्यास सब कुछ सहकर
सदलगा से चला एक खोजी
जैसे चला हो कोई फौजी
आ गया था अजमेर नगरी
ले हाथ आशा प्यासी नगरी
ज्ञान का बनकर पिपासु
धर्म दर्शन का जिज्ञासु
पहुँचा गुरूवर के चरण में
मुनि ज्ञानसागर की शरण में
छोड़ के जग भोग सारे
तन चेतना को जान न्यारे
मिल गया आशीष गुरु का
अध्यात्म सर के हंस गुरु का
जानता था कौन ऐसा
आसमां में सूर्य जैसा
विश्व गुरू जग का मसीहा
दुखिजन की हरने पीड़ा
ज्ञान का बन के समंदर
गहरे डूबे अपने अंदर
अध्यात्म का रसिया निराला
लायेगा सम्यक् उजाला
विद्यासागर गुरु बनेगा
मिथ्यात्व तम जग का हरेगा
साधन का चढ़ हिमालय
ज्ञान गुरू की बोल जय जय
विद्याधर से विद्यासागर
गढ़ गये गुरु ज्ञानसागर

संस्कार फीचर्स

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : जुलाई 2017

संक्षेप में उत्तर दीजिये :

1. बाल कहानी से कौन-सा धर्म पालन करने की शिक्षा मिलती है ?
2. बाल कहानी का शीर्षक क्या है ?
3. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने संस्कृत को कौन-से चने बताये हैं ?
4. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने न्याय को कौन-से चने बताया है ?
5. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने साहित्य को किसकी उपमा दी है ?
6. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने सम्यक् दर्शन की परिभाषा क्या दी है ?
7. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने हाथ पसारने को क्या बताया हैं ?
8. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने हाथ की मुट्ठी बांधने को क्या कहा है ?
9. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज कहते थे जो आज्ञा में चलेगा उसका क्या शुद्ध होगा ?
10 आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने संयम को क्या बताया है ?
11. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज का जीवन किससे ओत-प्रोत था ?
12 पंडित भूरामलजी ने अध्ययन किस विद्यालय में किया था ?
13. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा कहाँ पर हुई थी ?
14. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा कब हुई थी ?
15. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा किस माह की किस तिथि को हुई थी ?
16. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा कौन से विक्रम संवत् में हुई थी ?
17. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज किस कारण से लड़कियों से आहार नहीं लेते थे ?
18 आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज क्या माँगकर चातुर्मास पूर्ण करते थे ?
19. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने हम लोगों की मान्यता किसके समान हैं ?
20. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज कहते थे किसका भाषान्तर नहीं होना चाहिए ?
21. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने कहा ज्ञानी है तो हमेशा बगल में क्या रखें ?
22. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज बिना पुस्तक के आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज को कौन-सा ग्रन्थ पढ़ाते थे ?
23. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने कहा एक गूंगा कितने को हरा देता हैं ?
24. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने कहा था जो किसके अनुसार चलेगा उसका वचन शुद्ध होगा ?
25. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने संस्कृत में कितने महाकाव्य लिखें ?

26. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने संस्कृत में कितने चरित्र काव्य लिखें ?
27. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने कितने ग्रन्थों का पद्यानुवाद किया ?
28. पंडित भूरामलजी कितने भाई थे ?
29. पंडित भूरामलजी ने प्राथमिक शिक्षा कहाँ प्राप्त की ?
30 पंडित भूरामलजी का जन्म कहाँ हुआ था ?
31. पंडित भूरामलजी का जन्म कब हुआ था ?
32 पंडित भूरामलजी के पिताजी का नाम क्या था ?
33. पंडित भूरामलजी की माताजी का नाम क्या था ?
34. पंडित भूरामलजी ने ब्रह्मचारी व्रत कब लिया था ?
35. पंडित भूरामलजी की क्षुल्लक दीक्षा कब हुई थी ?
36. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की एलक दीक्षा कब हुई थी ?
37. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की मुनि दीक्षा कब हुई थी ?
38 आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की मुनि दीक्षा किससे ली थी ?
39. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने मुनि दीक्षा कहाँ पर ली थी?
40. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज का अंतिम चातुर्मास कहाँ हुआ था ?
41. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने मदनगंज-किशनगढ़ में कितने चातुर्मास किये ?
42. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज जी ने अपने चातुर्मास कौन-से प्रांत में किये ?
43. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज को आचार्य पद कब मिला था?
44. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज की सल्लेखना कब हुई थी ?
45. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज की सल्लेखना कहाँ हुई थी ?
46. आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को आचार्य पद किसने दिया था ?
47. आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को आचार्य पद कब दिया था ?
48. मुनिश्री विद्यासागरजी महाराज ने आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के साथ कितने चातुर्मास किये ?
49. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज को चारित्र चक्रवर्ती पद किसने दिया था ?
50. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज को चारित्र चक्रवर्ती पद कब दिया था ?

(संस्कार सागर जून 2017, आचार्यश्री विद्यासागर दीक्षा विशेषांक से)

प्रत्येक माह आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के 50 वें दीक्षा के अवसर पर 13 विशेषांक निकाले जायेंगे तथा उन्हीं विशेषांकों से 50 प्रश्न हर माह पूछे जायेंगे। जो अतिरिक्त प्रश्नों के उत्तर भेजना चाहते हैं वह फोटो कॉपी कराकर 10 रु. शुल्क के साथ भेज सकते हैं। आप इन्हीं प्रश्नों की फोटोकॉपी कराकर मंदिर में प्रतियोगिता आयोजित कर उत्तरशीट कार्यालय में भेज सकते हैं।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा : जुलाई 2017

प्रश्नपत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम ....स्थान ....

उम्र ....सदस्यता क्र. ....

पूर्ण पता ....

पिन कोड .... फोन नं...................... (एस.टी.डी.) ....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम .... हस्ताक्षर

नियम :– .... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली : 219

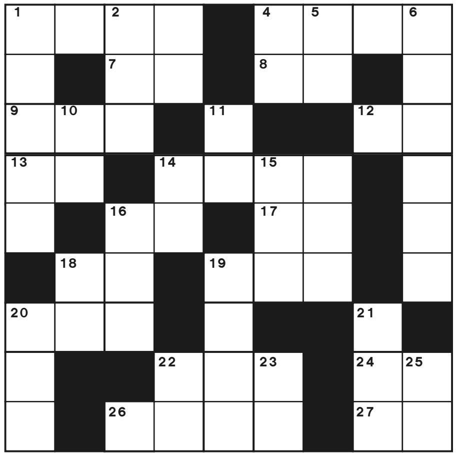

ऊपर से नीचे

1. मूकमाटी महाकाव्य के रचयिता (5)
2. विस्फोट का पर्यायवाटी (3)
3. लीन होने का नाम (2)
4. घमंड (2)
5. पराजय, पराभव, गले का आभूषण(2)
6. रत्नकरण्डक श्रावकाचार का आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा अनुवादित ग्रंथ का नाम (6)
10. मुक्त होने का भाव, बंधन से छूटना (2)
15. नेता का नाम (3)
20. आचार्य विद्यासागर की गृहस्थ अवस्था की बहन का नाम (3)
21. मध्यप्रदेश की राजधानी (3)
23. निकट का रिश्ता (3)
27. विशेष वाहन (2)

बाएँ से दाएँ

1. आचार्य विद्यासागरजी का पूर्व नाम (4)
2. आचार्य विद्यागसागरजी गृहस्थावस्था के बड़े भाई (4)
7. पराभव, हार (2)
8. रेट, भाव (2)
9. मैना, पक्षी का नाम (3)
11. ग्रहण का भाव (2)
12. समूह
14. मुनि समयसागरजी का पूर्व नाम (4)
16. पुत्र (2)
17. मृत्यु का देवता(2)
18. एक विधान का पूर्वार्ध नाम (2)
19. हारना (3)
21. अच्छी नीति (3)
22. अमावस्या (3)
24. किनारा (2)
26. आचार्य विद्यासागरजी का जन्म ग्राम
27. लथपथ का पर्यायवाची (2)

वर्ग पहेली : 218 का हल

1 मू	2 क	मा	टी	■	4 ने	5 मा	6 व	7 र
8 ला	र	■	9 का	10 म	■	11 स	र	स
चा	■	12 ग	■	13 नो	न	■	ग	■
14 र	15 य	ण	16 सा	र	■	17 म	द	18 द
■	ति	■	19 र	त	■	थ	■	यो
20 जै	■	ख	■	■	21 दि	वा	■	द
22 न	23 जा	रा	■	■	24 ला	ला	रा	य
25 गी	त	■	26 स	27 वा	व	■	■	ती
28 ता	क	त	■	29 त	र	■	30 ती	र्थ

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी ■

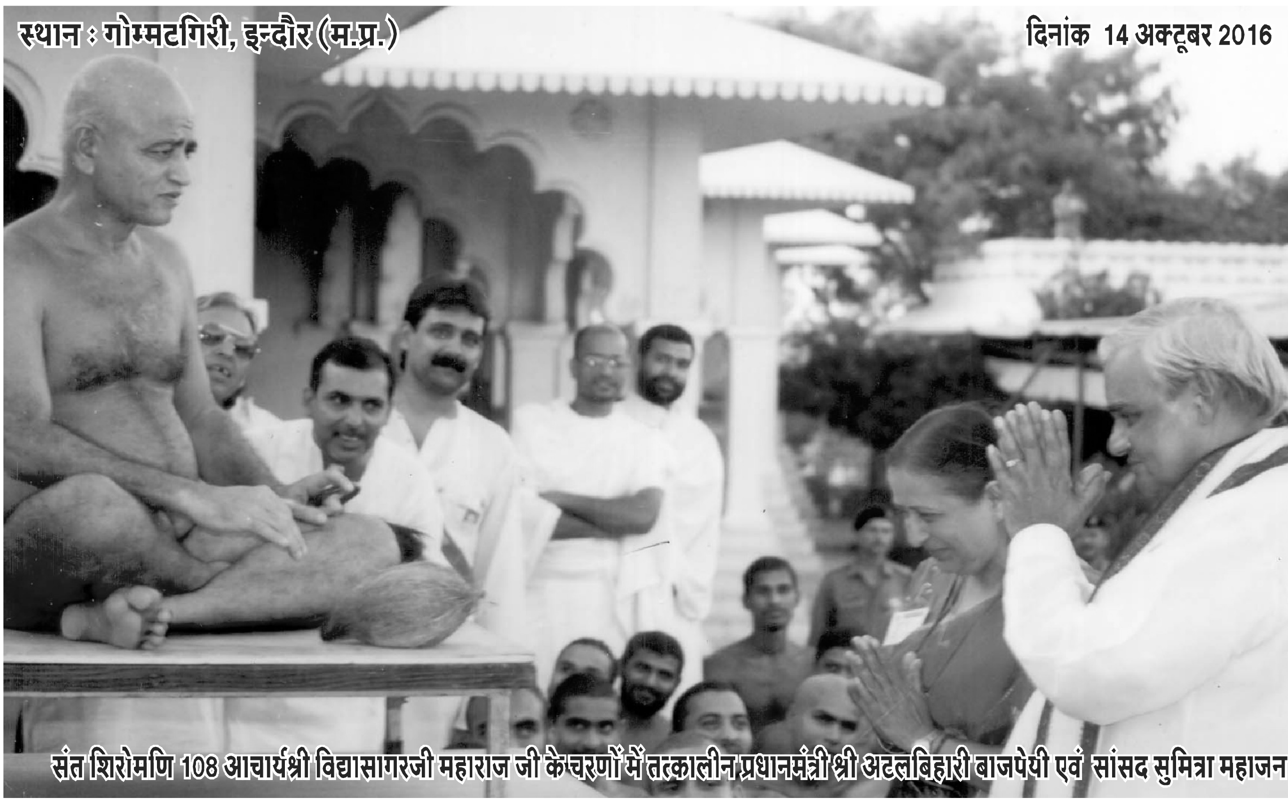

स्थान : गोम्मटगिरी, इन्दौर (म.प्र.)

दिनांक 14 अक्टूबर 2016

संत शिरोमणि 108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज जी के चरणों में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी बाजपेयी एवं सांसद सुमित्रा महाजन

सम्पर्क करें – 0731–2571851, मो. :93031 37091, 89895 05108

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org